ॐ

श्री कुन्द कुन्दाचार्य वचन

मुनि आनन्द सागर विरचित

समयसार

वन्दों पांचों परम गुरु मुनिजन वन्दन योग्य।
समयसार भाषा रचों कविता कथन मनोग्य॥
कुन्द कुन्द ऋषि राज का अमृत रूपी वेन।
करण विषय से पान कर संतोषित दिन रेन॥
अचल अनुपम ध्रुव गति प्राप्त भये भगवान।
तिनके पद पंकज नमों संचय पुण्य महान॥
गणधर ज्ञानी ने कहा समय सार निज सार।
कुन्द कुन्द महाराज ने महिमा करी अपार॥
दर्शन ज्ञाना चरण मय स्व समये निज जान।
पुद्गल कर्म प्रदेशमय पर समये पहिचान॥
नेश्चय से एकत्व को प्राप्त समय चैतन्य।
त्व ही सुन्दर कहत हैं बन्ध कथा है अन्य॥

काम भोग विषय कथा परिचय में तद रूप
याते सुल्लभ हो गई अन्य भिन्न नहि रूप।
आतम रूपी एकपन निज संपत्ति उरधार।
जो कहते कहीं चूक हो शोध करो शिरदार॥
ज्ञायक भाव स्वभाव है गुण स्थानक नहि कोय।
ताते शुद्ध कहे सभी द्वितीय भेद नहि होय॥
रत्न त्रय व्यवहार से कहते हैं गुणवान।
दर्श ज्ञान चरित्र मय ज्ञायक शुद्ध महान॥
जापानी भाषा बदे समझ जाय जापान।
व्यवहारी व्यवहार ते परमारथ पथ ज्ञान॥
सन्मुख श्रुत से जानना चिन्मय चेतन शुद्ध।
गणधर ज्ञानी ज्ञान से कहते केवल बुद्ध॥
जाने हैं श्रुत सर्व को श्रुत ज्ञानी भगवान।
ज्ञान स्वरूपी आत्मा परमानन्द निधान॥
भूता रथ व्यवहार बिन शुद्ध नये सत्यार्थ।
शुद्ध नये आश्रित रहै सं दृष्टि परमार्थ॥
जो व्यवहारी चाल को चलते चेतन राम।
अभूतार्थ बखानिये चौरासी लखनाम॥
निश्चय नय के पारखी जड़ चेतन पुण पाप।
आस्रव संवर निर्जरा बंध मोक्ष पद आप॥

वंध रहित निज को गिने पांच भाव संयुक्त।
शुद्ध नये से जानियो निश्चय एक ही युक्त॥
वंध स्पर्श अन्यत्व नहि रहित चला चल जान।
शेष हीन संयोग नहि शुद्ध नये अमलान॥
अवद्ध स्पष्टा तमलिखे अनन्य और अविशेष।
वह जिन वाणी जाणता द्रव्य भाव श्रुत भेष॥
स्पर्श रहित अनपन रहित रहित चला चल जान।
शेष अन्य संयोग नहि सम्यग्दृष्ठीमान॥

सम्य दृष्ठी आतमा सदा ज्ञान रसपान।
निजानन्द अनुभूति सो छूटत नाही स्थान॥
शुद्धातम पदके विषे मगन रहै दिन रात।
कर्म बंध बांधत नहीं पूरव कर्म खरात॥
कर्म दशा बन्धन नहीं साधे शिवपुर संत।
भोगे उत्तम आतमा आगम काल अनंत॥
दर्शन ज्ञान चरित्र त्रय एक रूप निज होय।
थिरह्वै साधे मोक्षपथ अनुभवि साधु सोय॥
गुन पर्यय दृष्टी नही निर्विकलपनिज भाव।
पुद्गल से प्रेमी नहीं अनुभव रसहि दिखाव॥
पर परणति छुटकाय के निज परणति रमजाय।
एक मोक्ष मारग कह्यो उत्तम पद सुखदाय॥

शुद्धात्तम अनुभव कथा सुणों सदा मनलाय।
शुद्ध ज्ञान दृगदौर है मुक्ति पंथ गुरु गाय॥
बाग जाल सब और है समझो चतुर महान।
जगत चक्षु आनन्दमय ज्ञान चेतनाजान॥
निर्विकल्पशाश्वत दशा कीजे थिरमन आन।
आतमज्ञान विलाश में रमन, करो मतिवान॥
अचल अखंडित ज्ञान धन वीतममत, मम कार।
ज्ञान गम्य बाधा भगे ऐसा आतम सार॥
रत्न त्रय निज धर्म में सदा रहै लवलीन।
निश्चय नय से एक है भेद दृष्टि तीन॥
इस संसार असार में नव रस नाटिक नाम।
नव रस गर्भित ज्ञान में विरला जाने काम॥
सब रस गर्भित ज्ञान से आतम रस लवलीन।
जाको जाचित जोगिजन पलक पलक दृगलीन॥
शुद्ध पदारथ आतमा सकल पदारथ आन।
याते निज में निज गहो करो सकल कल्यान॥
नव तत्त्वों के भेद से विकलप भाव विहीन।
निर्मल एक स्वभाव में होउ सदा लवलीन॥
स्वानु दशा स्वप्ने विषें घोषित स्वयं स्वभाव।
जागृत होकर निरखलो सम्यग दर्शन भाव॥

वर्तमान समये विषें बंधन भाव विकार।
यह व्यवहारी चाल है निश्चय नाहीं लार॥
सर्व जीव है सिद्ध सम समझै अपने आप।
उपादान तैयार है निमित मिला है आप॥
निजानंद सर्वज्ञ को उत्तम शरणों सार।
आराधन उरमें धरो जगन्नाथ जयकार॥
धन इच्छुक मानव महा करे नृपति की सेव।
मन वचतन श्रद्धाधरे सुख पावै स्वमेव॥
इच्छा वर्तें मोक्ष की करे तत्त्व पहिचान।
तन्मय हो चिन्मात्र में अनुभव लीन मिलान॥
मंत्र जंत्र गुरु तंत्रकविशास्त्र पठन नहि ज्ञान।
ज्ञान राज हृदये विषें वेही ज्ञान निधान॥
दया दान दानी विषें प्रकट ज्ञान को अंग।
जब आवे अनुभो दशा विरचे विगत तरंग॥
द्रव्य लिंग नहि मोक्षको कलावचन उपचार।
भव्य जीव बोधे घनें ज्ञान हीन व्यवहार॥
शुद्ध ज्ञान के तन नहीं मुद्रा भेषन कोय।
इस कारण यह मोक्ष को मारग है निज जोय॥
ज्ञानानन्द स्वरूप में रमते ज्ञानी लोग।
समझै चेतन चालको निज पद में थिर योग॥

ज्ञान मोक्ष अंकू रहै क्रिया कांड जग मूल।
कर्म बंध परिणाम तज सूंघे निज गुण फूल ॥
ज्ञान चेतना जागते प्रकटे केवल ज्ञान।
लोका लोक विलोक के पद पावे निर्वान ॥
ज्ञानवंत ज्ञानी कहे हम अपराधी जीव।
मैं मिथ्या मतके विषें पापारंभसदीव ॥
करनी हित हरनी कही मुक्तिकतरनी सोय।
भवभव में लारा लगें कर्म बंध दृढ़ होय ॥
मनवचतन पुद्गल दशा कर्म दशा जग संग।
दर वित पुंगल पिंडमें भावित भरम तरंग ॥
सम्यगदृष्टी आतमा कर्तापन नहि कर्म।
कोन करावे कोनकरे को फल पावे शर्म ॥
निज भावाश्रित तत्त्व है सम्यगदर्शन वीज।
स्थिरता है स्वलक्ष्य की एक अखंडित चीज ॥
अविकारी निश्चलदशा एक अखंड स्वरूप।
रागद्वेष मद दूर है वीत राग रसकूप ॥
ज्ञानानन्द स्वरूप है आतम द्रव्य अनूप।
रजकण रूपी नहि रमें पृथक पिंड तद्रूप ॥
ज्ञान स्वरूपी आतमा ज्ञाता जग जन जान।
जानकार यह कह रहा समझ सार मति मान ॥

उपयोगी निज आतमा जड़ स्वरूप मनमान ।
निरुपाधिक निजभाव है निराकार पहिछान ॥
मिथ्या ही अज्ञान नर कर्तापन अपनाय ।
भाव द्रव्य नो कर्म को माने जाने जाय ॥
निजानंद से अन्य है चेतन जड़ विश्राम ।
ये मेरे है भाव से मेरा सब धन धाम ॥
ये मेरे थे प्रथम ही सकल परिग्रह भार ।
मे भी इनका प्रथम मथा होंगे आगे लार ॥
ऐसी झुटी कल्पना करे मूढ़ मतिनाम ।
सत्यारथ श्रद्धा धरे ज्ञानी महा ललाम ॥
विनज्ञानी मोही कहे नानाविधि कर सोय ।
बद्धा बद्ध विकल्प से पुद्गल परिचय होय ॥
निज लक्षण उपयोगमय केवल, केवल ज्ञान ।
तेपुद्गल किम होस के निश्चय कर निज भान ॥
चेतन तो पुद्गल बने पुद्गल बने सजीव ।
तब तुम कहना सत्य है मेरे सर्व अजीव ॥
चेतन पुद्गल भिन्न है एक मेक नहि संत ।
जड़ चेतन व्यवहा नय एक मेक मानंत ॥
जीव भिन्न है सर्व से पुद्गलमय किम होय ।
याते पुद्गल भिन्न जिय निश्चय महिमा होय ॥

देशांतर वर्णन विषें वर्णन नहि है भूप।
पुद्‌गल की प्रतिभा विषें जिन गुण नहि तद्रूप ॥
इन्द्रिय जयकर ज्ञान को माने आत्मस्वरूप।
निश्चय नय जब यों कहें सत्य जितेन्द्रिय भूप ॥
मोह मल्ल से जीतकर ज्ञान राज निज पेख।
परमारथ के पार खी मोह जीत है एक ॥
मोह जीत जिस समय में क्षीण मोह पद होय।
सत्यारथ वक्ता कहे मोह क्षीण मुनि सोय ॥
पर पदार्थ के प्रेम को त्यागत है गुणवान।
वीतराग पद पायके पहुँचे पद निर्वान ॥
अपने आप स्वभाव में पर विभाव मिट जाय।
ज्ञाता दृष्टा मोह तज बन जाते शिवराय ॥
पर परणति रमते नहीं निज परणति अपणाय।
निज स्वभाव के रमन से आयु अंत दुख जाय ॥
दर्शन ज्ञान स्वभाव मय सदा चेतना रूप।
पर द्रव्यों से भिन्न है यह श्रद्धान अनूप ॥
जीव अनादि स्वरूपते करम रहित करतार।
अविनाशी अशरन सदा सुखमय निज अवतार ॥
जो पूरव कृत कर्म को फल भुंजे रति टार।
शुद्धा तम में मगन है गली जेवरी कार ॥

कम दशा नहि ज्ञान में भोगे परम समाधि ।
पर द्रव्यन से भिन्न है आराधन चउ साधि ॥
आतम ज्ञान विना यह पर को कहै प्रमाण ।
अध्य वसान समान है भेद भाव अज्ञान ॥
इस काया से कर्मवस तीव्रमंद अनुभाग ।
जीव कहै अज्ञानवस कर्मादिक शुभराग ॥
उदय अवस्था जीव है बंधे कर्म अनुभाग ।
मंद तीव्र अनुराग में माने मूढ़ विभाग ॥
जड़चेतन संयोगते कहते वह विधि योग ।
कहीं कर्म के योग में जीव जानते भोग ॥
दुर्बुद्धि जे जीव है पर को माने जीव ।
निश्चय नयसे वे नहीं साधु सधे सदीव ॥
प्रथम भाव जेजेभये ते पुद्गल परिणाम ।
उदय काल दुख देत है चेतन को विश्राम ॥
कर्म आठ के ठाट सब जड़ चेतन विश्राम ।
नाना परणा तिपरण वे निशि दिन आठूं जाम ॥
अध्य व सानादिक कहै यह नय है व्यवहार ।
निश्चय नय यों कहत है आप आप को धार ॥
राजा सेना जात है जाते जन को देख ।
प्रजा एक राजा कहै वचन वजारी लेख ॥

व्यवहारी भाषा कहै राग सहित सब भाव।
निश्चय नय उन भावों में केवल ज्ञाता राव॥
गंध वर्ण रस स्पर्श नहिं नहिं शब्द संस्थान।
चेतन गुण निज चिन्ह है वही आतमा मान॥
स्पर्श बर्ण रस गंध जे गुण स्थानक पर्यन्त।
चेतन के व्यवहार से कहे गये गुणवन्त॥
इनके जो संबंध है क्षीर नीर के न्याय।
है उपयोगी जीव गुण भिन्न भिन्न वत लाय॥
वाट न लूटे माल को लूटे डाकू लोग।
संसारी तोभी कहै मारग लूटे लोग॥
चिदानन्द नो कर्म में कर्म वर्गणा देख।
वर्णन है व्यावहार से निश्चय नय से एक॥
स्पर्श रूप रस गँधतन बर्णादिक सँस्थान।
आतम के व्यवहार से निश्चनय नहि जान॥
वर्णादिक व्यवहार से वसे चेतना मान।
सिद्ध अवस्था के विसे वर्ण भेद कछु नाहि॥
अजर अमर गुण गण निलय जो आतम थिर थाहि।
य, कर्म बँध बँघतनही सँचित पूर्व पलाय॥
निज स्वरूप में जोरमें छोडि सकल व्यवहार।
सोही सम्यक दृष्टि है सहज पाय भव पार॥

उपजत मरता एक ही सुख दुख भोगे एक।
नरके जावे एक जिय मोक्ष गमन भी एक ॥
ज्ञाता दृष्टा एक है अलख लखो निज ध्यान।
चला जाता है मोक्ष में यों भाषे भगवान ॥
आतम अपनो पद गहो चिदानंद चिद्रूप ।
वस्तु स्वभाव ही धर्म है ये ही है निज रूप ॥
इस असार संसार में पर अपणावत पाप ।
स्पर्श गंध रस रूप विन लखो आप ही आप ॥
आप ही चेतो आपते शान्ति सुधार स आप।
निजानंद में रमण कर मेटो भव संताप ॥
विरला जाने तत्व को विरला भावे तत्व ।
विरला ध्यावे तत्व को पावे विरले तत्व ॥
सम्यक शासन सनमती चित्त चिन्त वेतास ।
द्वादशांग धारील है केवल ज्ञान प्रकास ॥
अंधकार हर चन्द्रमणि त्यों आतम परकाश ।
परम महा सुख देत है मोक्ष धरा निज वास ॥
एक ही चेतन आतमा है सदा निर्वाण ।
सुर मुनिसववन्दन करे मंगल मोक्ष कल्याण ॥
आप हि मारग सरल है आप ही है अनुकूल ।
आपहि सुख सागर सदा आपहि है शिव मूल ॥

भेद ज्ञान कुबान से साधो उत्तम तीर ।
पुद्गल चेतन भिन्नकर हरो सकल जग पीर ॥
होकर निज आनन्दमय दूर करो भवताप ।
परम शान्ति पावन लहो अजर अमर पद आप ॥
वीत राग विज्ञानमय अपना शुद्ध स्वरूप ।
निर्मल फटिक समान है निज में निरखो रूप ॥
अविनाशी चैतन्यमय कर्मबंध नही तास ।
आप स्वरूपानन्द है परमातमपद कास ॥
निजानन्द में रमण कर भव भय भाव मिटाय ।
अपना शुद्ध स्वरूप है निरख निरख मनलाय ॥
सम्यग्द र्शन निधमिली वित राग पद सार ।
ज्ञान राज राजावनो शिव सुन्दरी भरतार ॥
निजानन्द निजमेंवसे अनुपम ज्ञानानन्द ।
पुग्दल परिचयभिन्न है धर्म धुरंधर कन्द ॥
परम शुद्ध चिद्रूप है ज्ञान मयी गुण कार ।
ऐसी उत्तम आतमा ध्यावो बारंवार ॥
रत्न त्रयमय आतमा शांति रूप निजधार ।
अविनाशी पद तुमलहो सुखानन्द भवपार ॥
अनुभव आतम राम है ज्ञानानन्द स्वभाव ।
निज गुण अपरंपार है ऐसा आतम राव ॥

चन्द्रो ज्वल सम बिमल है तीन लोक सिरदार ।
लोका न्तिक सुर नमत है निजानन्द अवतार ॥
धारा निज अव चिन्न है धर्म पूर निज नीर ।
ज्ञान रूप हे चेतना से विमल अगाध अमीर ॥
सँसय विभ्रम पँक विन उछलत जहां तरँग ।
सप्त भँग वाणी खिरे ऐसी गंगा संग ॥
वीतराग शुभ नाम है वानी सदा समीर ।
वारवार वंदन करों हरो हमारी पीर ॥
चेतन पुद्गल भिन्न है लक्षण भिन्न पिछान ।
पुद्गल से प्रति प्रेमतज धर आतमश्रद्धान ॥
देहा श्रितसव भोग है जीव चेतना वन्त ।
ताते तज तन नेह को भजों विमल निज सन्त ॥
वर्णादिक विकराल है जड़ पुद्गल मय जान ।
गगन दहन के न्यायते चेतनचिन्ह पिछान ॥
ज्ञा१क रस सर्वांग मे भरे टसा टस रूप ।
लवण खिल्ल लीलामय समझ समझ रे भूप ॥
विमल भाव जागृत करो नर भव सफल करन्त ।
मोद रोष मद मोहको अन्त करो गुण वन्त ॥
निजस्वरूप में मगन हो परस्वरू परिहार ।
भाव विशुद्धवधाय के कर्म करो क्षय कार ॥

निज भ्रमते भ्रमतो फिरे आप अनूप स्वरूप ।
अँग सँग के योगते मलिन भयो जग रूप ॥
लोह पिन्ड घरण घात को पावक सँग मिलाप ।
दुर्धर घरण की चोट से अंगागादि विलाप ॥
नाम कर्म निपजायके नारक नर पर्याय ।
अ नो भाव विसार के धरे अनन्ती काय ॥
मोह नींद भ्रम भगते जागे जिन के हेत ।
वीतराग सर्वज्ञ पद चेतन पावत चेत ॥
मोहराग रँजित रयो वीतो काल अनन्त ।
अब सुधार अपणी करो भोगो भोग अनन्त ॥
मगनमान सनमान तज भज स्वभाव सुख राश ।
सन्तनिरंतर चिन्तओं चिदानन्द परकाश ॥
वरणा दिक पुद्गल दशा चेतन चिन्मय जान ।
एक क्षेत्र में रहत है भिन्न भिन्न पद दान ॥
ज्ञायक रससर्वांग में भरयो ठसा ठस मान ।
लवण खंडलीलाधरे निश्चय सिद्ध समान ॥
भवबँधन में मतपसो समतागहो समीर ।
आतम ज्योति विकाश के पावो निजथल धीर ॥
आरे से कट तेनही ज्ञान चेतना कार ।
वन्हीं से वलते नही गलते नही तुषार ॥

हरी लाल पीली नही हलकी भारी नाहि ।
अजर अमर परमातमा सुरनर पशु के माहिं ॥
रोके से रुकती नही सब गुण चेतनमा हि ।
ठोकें से ठुकती नही यह गुण चेतन थाहि ॥
गज घोड़ा गाड़ी नहीं गाय भैंषनहिऊँट ।
चीता रीछ चकोर नहि आतम शिव पद कूट ॥
नहि यक्षणी यक्ष है व्यँतर भूत पिशाच ।
जगदंवा दुर्गा नहीं किन्नर किंकर काच ॥
सूर्य चन्द्र नागेन्द्र नहि नहि धरणेन्द्र सुरेन्द्र ।
ज्ञान चेतना राम है ऐसे कहत जिनेन्द्र ॥
चेतन वन्त शरीर में रहे सदा अमलान ।
नरख परख निज आपको मुक्त महल सो पान ॥
अव निज में निज ज़ानले नियत करो परिणाम ।
शिव मारग समरण करो तव सुधरे सब काम ॥
रागादिवरणा दिसव है पुद्गल के मेल ।
वसुगुण तेरी सुरत है केवल झलके खेल ॥
जगी अनादि कालिमा मोह मेल की बेल ।
भागी मोह की कालिमा निज गुण परसो शेल ॥
ज्ञेय ज्ञान ज्ञाता सवे तीनों भेद मिटाय ।
किरया कर्ताकर्मका एक दरव दिखलाय ॥

गुण गुणी का भेद भी दोनों पक्ष नशाय।
साधक साधि एक कर दुविधा दूर भगाय॥
वचन भेदनाहि रहा ज्यों का त्यों ठहराय।
निश्चय अमल अलीन है ध्वजा दँड दर्शाय॥
सकल विभाव अभाव कर निजानन्द निजध्याय,।
आप आप मेरमरहै परमातम पद पाय॥
नय प्रमाण निक्षेप का सब व्यवहार विलाय।
भेद ज्ञान धारा बहे पर्यय बुद्धि पलाय॥
निजानंद आनंद में मगन भये विगशाय।
चरणज्ञान दर्शन सभे विकल्प भेद मिटाय॥
सब जगव्यापी देखिये कीड़ी कुंजर रूप।
जाने माने अनुभवे चिदानंद चिद्रुप॥
जो देखे है लोक को लोकन देखे कोय।
घट घट ज्ञानी देखिये मारे मरे न कोय॥
जैसी उज्जल आरसी तेसी आतम ज्योति।
इस तन से जूदी लखो करे सकल उद्योत॥
आतम की पहिचान कर है अरहन्त स्वरूप।
मोहादिक पर द्रव्य से भिन्न चेतना रूप॥
शयनदशा जाग्रत दशा दोनों विकलप रूप।
निर्विकलप शुद्धातमा चेतन चिन्मय रूप॥

मनवचतनसे भिन्न लिख निजसे निजलवलाय।
आप आप को अनुभवे छूटजाय सब काय॥
सप्त तत्त्व नव वस्तुसे न्यारी चेतन राम।
पुन्य पाप बंधनतजो भजो शुद्ध परिणाम॥
पर संगति परभावरत शुद्ध स्वरूप न कोय।
लाली झलके फटक में फटक न लाली होय॥
त्रसथावर नर नारकी देव आदि बहु भेद।
निश्चय एक स्वरूप है ज्यों पट सहज सपेद॥
ज्ञानगुणादि अनंत है पर जय शक्ति अनंत।
आतम अनुभव कीजिये येही निज सिद्धांत॥
निजघट अंतर आतमा नहि घट बाहिर देख।
जीभ आँख बिन कानसे परमातम पद पेख॥
आप लखे जब आपको सब दुविधा पद दूर।
सेवक साहिब एक है सत्य स्वरूपी सूर॥
दिडबंधन से बंध है संसारी सब राज।
ज्ञानी ज्ञान विषेरमे शुद्धातम निज साज॥
सम्यग दर्शन सार है करे जीव उद्धार।
अविनाशी पद देत है भज जिय बारंबार॥
रत्न त्रय पावन महा खोलत मोक्ष दुवार।
याविन जपतप विफल है भव आता पनिवार॥

स्वानुभूति तिशिवकावनी आप भये अविकार।
सुख सागर वर्द्धन करे चन्द्रकला गुणाकार॥
भेद ज्ञान अनुभव दशा साधे सो सुखपाय।
ज्ञाता दृष्टा आतमा नित्य निरंजन थाय॥
अनुभव अमृत पान है ज्ञानी ज्ञान रमन्त।
पीकर फंदमटाइये अनुभव उत्तम संत॥
ज्ञानी सत्यानंद है अनुभव नित्यानंद।
पान करो आनंद से जनम मरण नहि फन्द॥
करले आतमा ध्यान को क्यों होरा हैरान।
कोइ न अपना जगत में तुमहीं हो अमलान॥
अनुपम सुख निज में लखें होवे केवल ज्ञान।
अपना सायब आप है अविनाशी अमलान॥
भव भय भंजन आप हैं निजानंद गुणवान।
वीतराग भगवान है निर्मल फटिक समान॥
निजानंद निजसार है सुखाकंद शिव रूप।
अनुपम ज्ञानानंद है अविनाशी चिद्रूप॥
शांतिसुधा रसपान है परमातम भर पूर।
परकी संगत त्यागद्यो पावो निजगुण भूर॥
आतम सत्यस्वरूप है सत्यज्ञान घन पूर्ण।
सकल संग छटकाय के कर्म शैलकर चूर्ण॥

होय सफल नरभव यह शिव रमणी से मेल।
भवबाधा सब भ्रम मिटे कटे कर्म की जेल॥
निजानंद आवे सही सुखसागर के खेल।
परतज निज पावे सही यही उत्तम सेल॥
संसय विभ्रम मोह तज आपही भजलो आप।
पावेनिधि क्षणमें सही नही पावे भवताप॥
परम शुद्धता छा गई नटशाला नय रूप।
निजानंद के ध्यान से पाओ आत्म स्वरूप॥
जगमें अपना है नहीं क्यों होओ हैरान।
निज अनुपम सुखपास है गुण अनन्त अमलान॥
निज से निज में सुमरले मन पावे विश्राम।
अविनाशी परमात्मा परमेश्वर निजधाम॥
अपना स्वामी आप में सुख सागर भर पूर।
मज्जन कर निज में रमों पावो आनन्द भूर॥
वीतराग विज्ञानमय निर्मल फटिक समान।
अपना सिद्ध स्वरूप है ध्याता पद निर्वाण॥
मोहरंग से आतमा मेली होत विशेष।
मोह मेल जवहर गया शुद्ध भया निज भेष॥
आत्म अनातम भेद है जैसे जल अरु क्षीर।
प्रथक हंसवत सार लोभवद पिउतरो तीर॥

आतम कानन केली कर हो शिवर मणी मेल ।
भव बाधा मिट जायगी छुटे करम की जेल ॥
निजानन्द का न्यायमे हरते सकल दलेल ।
निज राधा रंग राच के कर सुख सागर खेल ॥
बैठक कर एकान्त में छोड सकल गल माल ।
राग द्वेष मद मोह को विदा करो तत्काल ॥
निजानन्द निजस्वाद से सम्यग्दर्शन होय ।
बोध चरण वढ़ते हुए शिव संपति सुख होय ॥
आतम वाग बनायके अमृत फल पक जाय ।
अवसर सम्यक् भूमि है वीर्य वीज बप नाय ॥
धर्म वृक्ष फल ने लगे सत्य शील तप फूल ।
साता संपति साक है अनू भूति फल मूल ॥
अनुपम पंक्षी बैठते वोले वचन रशाल ।
सोहं सोर मचाईया मिष्ट ध्वनी गुण माल ॥
अमृत फल पकने लगा मिष्ट शिष्ठ शिव दाय ।
आतम अमृत पानकर भव भय विघ्न पलाय ॥
चेतन लक्षण आतमा घट घट में निज रूप ।
क्षीर नीर ज्यों समझलो भिन्न शरीर स्वरूप ॥
ज्यों वद्दल में सूर्य है हो य नाहिं कछु खिन्न ।
देह माहिं चेतन वसे चिन्मय चेतन चिन्न ॥

गुण अनन्त वर्ति भये सब गुण गण सम आप ।
सूर्य ज्योति ज्यों जोत है रही सकल में व्याप ॥
ज्यो दर्पण में धूप है घाम शीत नहि रूप ।
तैसे आतम रोम है निजानन्द निज रूप ॥
तन धन योवन थिर नही नाश वन्त जग रूप ।
सागर लहर समान है परस परख चिद्रूप ॥
ब्रह्म निरंजन नित्य है अनुभव व्यापी ज्ञान ।
बारबार समरण करो अविनाशी भगवान ॥
ज्ञान विभूती आतमा ज्ञायक मय गुण साज ।
निजानन्द रस पान कर अजर अमर पद काज ॥
पर संगति फिर तो फिरयो नहि साध्यो निज काज ।
तीन काल में एकता ज्ञायक गुण मय आज ॥
आवो अन्तर आतमा दर्शन ज्ञान गुणी ।
परमातम पद पाईयो तुम हो अमल मणी ॥
मलिन दशा पर योगते निज गुण मूल नशाय ।
जैसे दर्पण ढाक से अरुण श्याम बन जाय ॥
शब्दा ततीस्वरूप है शब्द रूप किम काज ।
चिदानन्द अति निकट है चेत चेतनर राज ॥
चेतन वन्त निबंध है आतम ज्ञान प्रभाव ।
ज्ञायक ज्ञाता ज्ञानमय ध्यान धरो निज भाव ॥

उठ उठ अंध अबंध है आतम जोति जगाय।
ज्ञायक रस इक ब्रह्म है ध्यान धरो मनलाय ॥
अविकारी निर्मल प्रभा शुद्ध बुद्ध मय सिद्ध।
शुद्ध ज्ञान निज पद रहो गहो ज्ञान गुण रिद्ध ॥
स्वच्छ स्वभावी आरसी तैसी आतम जोत।
सकल सार झलकंत हैं तदपिलेपन हि होत ॥
ज्ञानाज्ञान दशा सवे दोनों विकलपरूप।
निर्विकल्प निज आतमा ज्ञायक भाव अनूप ॥
मन वचतन से भिन्नकर निमित चित्त इक आन।
ज्ञायक प्रभुता आप हो रमो रमो निज स्थान ॥
दान शील व्रत भावना शुभकरणी जगकार।
निजानन्द रस में रमों जब होवे भव पार ॥
निर्विकल्प अनुपम मई राग द्वेष नहि लेश।
बंध मोक्ष नहिं विमल हैं आतम शुद्ध प्रदेश ॥
पुरुषारथ अपना करो वीत राग पद लीन।
परमारथ निज में वर्षे नित्य निरंजन चीन ॥
आत्म ज्ञान बाजा सभो आप आप का गान।
अनुभूती लक्ष्मी लहो मंगल मोक्ष निधान ॥
समय सार समरन करो अनुभव भाव विलास।
करम ताप को शमन कर केवल ज्ञान विकास ॥

आनन्द सागर शुद्ध हैं कर्म काष्ट नहि एक।
निराधार निर्मल महा निर्विकार निज देख ॥
सुधा सिंधु सायब सभी निज मे निज कर जोय।
भूल गयो अपनी निधी विषय चोर संग होय ॥
चारों गति चौगर्त है फिरय जात मझ धार।
नावकिनारे नहिलगे हाहाकार विकार ॥
राजी राजी होत है गहे सकल व्यवहार।
परवस काल अनादि से रुल्यो फिरेगतिचार ॥
तजो अनादिक मोह भ्रम और सकल जंजाल।
आतम रस चाखो अबे रैहो सादा कुशाल ॥
चिन्मूरति परमातमा चिदानन्द चिदनाम।
बार बार समरण करो छूट जाय सब काम ॥
ज्ञान स्वरूप सुधामई तीन लोक अवलोक।
आप तरे तारे सहि जैसे जल मैं नोक ॥
केवल शुद्ध स्वभाव है समझ सार मन धीर।
आकुलता तज समझो समरसराचोवीर ॥
निर्विकार निर्मल मह वसे शिवालय जाय।
तैसे ब्रह्म शरीर में दरश परख निज काय।
जिसके देखे शीघ्र ही पूर्व कर्म झरजाय।
क्यों न लखे निज ब्रह्म को तन में रहे समाय ॥

जिसके इन्द्रिय सुख नही मनो वेगना धार।
उसका अनुमव तुम करो पावो भवदधिपार॥
परवस्तु से भिन्न है निजानन्द चैतन्य।
उस चेतन को मान तू और तजो सब अन्य॥
भवतन भोग विरक्त मन निजानन्द को ध्यान।
तिसकी लंबी बेलड़ी जग भव ताप विलान॥
रत्नत्रय के पारखी परखे रत्न अमोल।
कोई गावे गान से उन से तू मत बोल॥
जगवासी घूमे सदा नहि करते है भेद।
ज्ञानीके बल ज्ञान से सब को लखे अभेद॥
विश्व विनिश्वर वस्तु है देह नेह तज मोह।
मोह लोभ मद कोप तज पावो केवल बोध॥
सकल उपाधि समाधि से करड़ारोचक चूर।
आतम ध्यान लगाय के पावो निज गुण भूर॥
वीत राग पदपाय के लोका लोक लखाय।
सप्त भंग वाणी खरें भव्य जनों सुख दाय॥
वीर न में अति वीर तुम काम काज कर चूर।
परमातम परमेश बन जग जन से अति दूर॥
आत्म स्वरूपी एक पन निज विभव भर पूर।
दर्शन ज्ञान चरित्रमय स्वसमय गुण भूर॥

रत्न त्रय निज भाव है धारत है गुण वान ।
आप समाल करो सदा ज्ञायक शुद्ध महान ॥
कुन्द कुन्द भगवान के अमृत रूपी वेन ।
हृदय के पट खोल के रटन करो दिन रेन ॥
हे चेतन तुम शुद्ध हो शान्त चित्त उद्धार ।
क्यो न करो कछु कार्य निज समये वीते सार ॥
मोक्ष योग्य मानव मिला सब योनी का सार ।
पड़े कहा भए कूप में तुम उत्तम अवतार ॥
तुझ को निज से प्रेम है चित वन कर दिन रात ।
एक समय आवेस ही भव भव कर्म खपात ॥
क्रोध मान माया सही आसा तृष्णा लोभ ।
भटकत है यह आतमा पर पदार्थ से क्षोभ ।
अपने जीवन लूट कर मोह लहर ललचाय ।
ममता वस भाग्यो फिरे भोगे कष्ट अथाय ॥
मानव भव उत्तम मिला साधु भई सत्संग ।
जन्म मरण के दुख भगे निज निध पावे अंग ॥
आतम वुद्धि शरीर से मोह जाल का फन्द ।
सकल आपदा मूल है मोह तजो जग द्वन्द ॥
देहा श्रित के भाव में अपना मान करन्त ।
वड़ी भयंकर भूल हैं समल चेतना वन्त ॥

साधो केवल भावना आर्त रौद्रतज ध्यान ।
आतम सन्मुख जोय के करो आप कल्यान ॥
विषयों से मुख मोड़ के शुद्ध साधना राध ।
गुण मणि माला लारले शिव संपति सुख साध ॥
मन को निज में जोड़ के तज विकलपजंजाल ।
एक भाव निज में रमो पावो मोक्ष विशाल ॥
सम्यग्दर्शन अंग युत ज्ञान ध्यान तपलीन ।
एक भिन्न अपनो लखो निजानन्द स्वादीन ॥
कर्म कर्म के फल विषें बरते विरकत भाव ।
समता सागर सारलो पावे सहज स्वभाव ॥
सिद्ध समान स्वरूप है कर आतम श्रद्धान ॥
संबोधन निज आतमा परकोकर अपमान ।
रत्नत्रय निजधर्म है साधन करो न वीन ।
निश्चय नय से एक है भेद दृष्टि से तीन ॥
शुद्ध स्वभावी आतमा नित्य सहित निज स्थान ।
अपनी भूल विसार के साधों सम्यक ज्ञान ॥
जगजंजाल जलाय के आतम भाव सुधार ।
सम्यग दृष्टि आतमा पावे निजधर द्वार ॥
चिदानन्द के राजमें निजानन्द विश्राम ।
समरस पान पिया करो पावो अविचल धाम ॥

ज्ञाता है तिहुं लोक को ज्ञायक आपस्वरूप।
आप आप में रमत है चेतन चिन्मय भूप॥
हेमतपत है अनल में तजे न हेम स्वभाव।
कर्म उदय को भोगते तजे न आतम भाव॥
ज्ञानी जाने ज्ञान से ज्ञानरूप गुण वान।
आप समाले आपको पावे अविचल स्थान॥
मानव मन समझे नहीं आपा पर को भेद।
संचित करते कर्म को भव भव पावे खेद॥
ज्ञानी जाने ज्ञान से रमते नित निज रूप।
अज्ञानी अज्ञान सभ्र गिरते चउगति कूप॥
ज्ञानी जाने आतमा करता निज थल वास।
अज्ञानी निज ज्ञान तज बणो जगत को दास॥
ज्ञानी ज्ञान स्वभाव से बांधे संवर मोड़।
करे कर्म की निजरा शिवसुन्दरि से जोड़॥
ज्ञायक दृष्टा आतमा दर्शन वस्तु स्वरूप।
निजानन्द की भक्तिते पावे परम स्वरूप॥
अंसमात्र रागादि जहाँ निश्चय समझे ताप।
सर्व शास्त्र पारंगता जानत नाहीं आप॥
जो नहि जाने आपको पर परखे नहि कोय।
तत्त्वभेद माने नहीं किस विधि ज्ञानी होय॥

ज्ञान विना मुक्ति नही कभी न निर्मल भाव।
याते ज्ञान सम्झायके स्वाद करो निज भाव॥
निजानन्द में रमणकर प्रकट करो निजरूप।
सर्व कर्म तबहीजरे भगेभवो दधि भूप॥
ज्ञान दर्श तप चरण रत प्रतिक्षणघर संतोष।
एक सुभावक समय लहि खुले ज्ञान घन कोष॥
ज्ञान ध्यान तल्लीन हो भाव भजो निज तोष।
निज स्वभाव में रम रहो कटे कर्म सब कोष॥
आपही अपनी आपको ध्यान धरो निज धार।
सर्व संपदा स्थार्थ तज आतम निज आधार॥
परिग्रह पोटफकाय के साधो चारित पन्थ।
आप आपको लारकर जापजपो शिक कन्थ॥
मतिश्रुति अवधि ज्ञान से मन पर्य पहिछान।
केवल ज्ञान प्रकाश कर पहुँचो पद निर्वान॥
मैं ज्ञाता तिहू लोक को आतम राम पिछान।
इन विषयों के वासमें भ्रमण फिरो अज्ञान॥
रागद्वेष मद मोह की संगति है विकराल।
विघ्न करे वरताव में भव भवखाबेकाल॥
अब मैं इनकी फोज को जाणगयो जगवास।
करो दूर जगद्वंद को निजमे निजहि निवास॥

मैं ज्ञानी गुण ज्ञानमय सदा चेतना वन्त।
भूलसुधार करो अबे जाय बसो जग अन्त॥
कर्म शुभाशुभ बंधज्यो उदय होत तत्काल।
फाल देय सब झरपरे सुखपावे निजलाल॥
करे कर्म की निर्जरा संविपाक पर्यन्त।
औसर उत्तम आगया ध्यान धरो शुभ सन्त॥
मन बच काय विकारको मेट धरो निर्ग्रन्थ।
जंगल में मंगल करो निजपद पहुंचो पन्थ॥
आसापासी पारकर जाय बसो गिर राज।
निजानन्द आनन्द को आह्वानन निज काज॥
ज्ञानध्यान धनु धारके मनमतंग को मार।
एकाग्रह निजभाव में रमो निरन्तर तार॥
आप आपको आप कर आपा को लख लेय।
औसर उत्तम आगया साधन साधो धेय॥
आतम ज्ञानानंद मय आतम जोति अखंड।
अपने अपने भाव में गहो गुणा र्शिवकन्ड॥
कर्म बंध विच्छेद कर निजानंद दरसाव।
आतम ज्योति अमंद है घटमें प्रगटे भाव॥
अपने अपने भाव में सबही राखो प्रेम।
इक दिन ऐसा आयगा कुशल होयगा क्षेम॥

समय सार को सारकर तजो सकल जंजाल ।
आप शुभाशुभ कर्म से लेप नहि तिहूं काल ॥
सकल कार्य व्यवहार तज ध्यावो आतम अंतु ।
चिदानंद ज्योती जगे भगे कर्म सब तन्तु ॥
आप आतमा ज्ञान है दर्शन चारित्र आप ।
निजानन्द थिर आप है मोक्ष मार्ग निज साप ॥
फटिक मणि याहेम के स्वयं न पलटे रंग ।
जैसा का तैसा कहै कभी न लागे जंग ॥
कंचन मय यह आतमा शुद्ध स्वभाव स्वरुप ।
फिरे नहीं संसार में सदा रहै चिद्रूप ॥
नरभव उत्तम पायके निज से निज आराध ।
चार गति के गमन फिर पावे नाहि विषाध ॥
चेतन वन्त अनन्त गुण सदा अकेलो एक ।
आप स्वरुपी आप हैं लेपकभी नहि देख ॥
बंध दशा चाहे नहीं नहि चाहे संसार ।
अनुभव रसको चखत है चिदानन्द अवतार ॥
आप आप को सुमर कर समरसपीवो नीर ।
कर्म जाल को तोड़ के शिवपुर पहुँचो धीर ॥
शुद्धातम निज रुप है निज भावों से जोय ।
पर भावों से भिन्न कर निज दर्शन कर सोय ॥

निश्चय नय यह आतमा एक रूपही देख।
विकल्प कर्म निमित्त है इन नाशे शिव रेख॥
अपने अपने समय पर सर्व वस्तु विनसाय।
ऐसे चित में चिन्तवे तव पर ममतन थाय॥
अपना निर्मल आतमा देह अपावन मान।
निज भावों में रम रहो परसे प्रेम जहान॥
निजानन्द निज भाव में निश्चय दृष्टि निहार।
पर विभाव परणाति तजो जब होसी उपकार॥
अतुल अनुपम आतमा ज्ञान दर्श द्वय रूप।
शुद्ध भाव संचित करो सिद्धालय शिव भूप॥
रत्न त्रय भंडार है आतमतामन मेल।
ध्यान करे दिल रोकके पहुँचे शिव मग शैल॥
धर रत्न त्रय निज विषे सम दम यम शुभ मेल।
निज भावों में रम रहै पावे पावन खेल॥
रत्न त्रय आराधते समता संयम भाव।
ध्यान करे मनलाय के पावे शिव फल सार॥
तत्त्व रुचि सम्यक्त है तत्त्व समझ है ज्ञान।
क्षमा धर्म चारित्र है रत्न त्रय गुण गान॥
चेत चतुर नर चेलना पर परणति पर धार।
दर्शन ज्ञान चरित्र त्रय अपनी वस्तु समार॥

चिदानन्द निज चेतना रमण करो हितकार ।
कर्म काष्ट को दहन कर बसे धरावसु पार ॥
देह गेह धन नेह तज भज अनुभव भवतार ।
सुख स्वरुप अमृतमय पहुँचे भव दधि पार ॥
नर भव उत्तम पाय के आतम बोध विचार ।
निज संपति समरण करो अजर अमर पदकार ॥
शुद्धचेतना युक्त तुम दर्शन ज्ञान स्वभाव ।
आतम जोत जगाय के बनो बींद शिवराव ॥
जब तक शुद्ध स्वभाव का अनुभव नाहीं होय ।
तब तक जग में भ्रमण है मोक्ष महल नहि सोय ॥
ध्यान योग निज आतमा केवल ज्ञान स्वभाव ।
निश्चय से साधो सदा उत्तम पद दर्शाव ॥
सप्ततत्त्व नव अर्थ सब जिन भाषित व्यवहार ।
निश्चय भज निज आतमा होय भवार्णं पार ॥
जोशुद्धातम अनुभवे छोड़ सकल व्यवहार ।
परम प्रेम निज में करे शीघ्र होय भव पार ॥
जड़ चेतन द्रव्यभिन्न है भिन्न-भिन्न पहिचान ।
भिन्न करे निज आतमा मोक्ष हेतु निज मान ॥
भिन्न कर्म से आतमा येही समरण सार ।
अल्प काल में शिवल है निश्चय नय आधार ॥

सत वस्तु पर्याय सत सतगुण है विस्तार।
नहि परस्पर एक है अन्य अन्य अधिकार॥
स्व स्वरूप थिर आतमा निश्चय ध्याता होय।
मोह मानमद मारके आप आप में होय॥

शुद्ध स्वरूपी आपको परको परके रूप।
जो जाने निश्चय सही करे मोह क्षय भूप॥
दृगधारी आतमबली शास्त्र विशारद जान।
संयम तप ज्ञानी गुणी निजानन्द अमलान॥
देवशास्त्र गुरुतत्त्व रुचि शास्त्र ज्ञान आधार।
तप चेष्टा-चारित्र है मोक्ष मार्ग व्यवहार॥
निश्चय रत्नत्रय भला समरस भाव स्वभाव।
पर को पर समझे सदा निज को सहज स्वभाव॥

ऐसे निजमें रम रहे जान देख नहि भेद।
रत्नत्रय निश्चल रहै भगे भवार्णव खेद॥
अनुभवि मुनि को देख के विनय करे वह मान।
दोष रोष निन्दा तजे निज संयम सनमान॥

देवशास्त्र-गुरु धर्म में वर्ते भक्ति महान।
पुण्य बंध संचित करे कर्म क्षय नहि जान॥
अंसमात्र परद्रव्यसे वर्ते कुछ अनुराग।
सर्वा गम ज्ञानी भये मन में नाहि विराग॥

संयम तप व्रतशील है भगे परिग्रह भार।
निजानन्द रस लीन है करे कर्म क्षय कार॥
चिदानन्द से भिन्नपरमाने जाने दक्ष।
निज स्वभावराचे सदा होय ज्ञान परतक्ष॥

ज्ञानी गावे गान को चेतन तीन प्रकार।
वहि रातम अन्तर सहीं परमातम सुख कार॥
देह नेह साधे सदा वहिरातम मति हीन।
देह भिन्न निज ज्ञान मय देखे चेतन चीन॥
मैं हीं ब्रह्मस्वरुप हों अन्तर आतम लीन।
भिन्न कमल जल मेंरहै जग में नाहि मलीन॥
कर्म कलंक परवाल के पायो निज पदरूप।
सकल निकल के भेद से परमेश्वर पद भूप॥
नित्य निरंजन ज्ञान मय परमानन्द स्वरूप।
चिदानन्द पदवी धरे अजर अमर तदरूप॥
निज भावों कोनहितजे परको गहेन लेश।
सवको निज में जानता परमब्रह्म परमेश॥
वरण गंध रस रहित है शब्द स्पर्श नहि पास।
सोनिज समता भेष है नाम निरंजन तास॥
पुराय पाप नहि पास है राग द्वेष नहि दोष।
मंत्रतन्त्र नहि यन्त्र है है अनन्त गुण कोष॥

जाके ध्येयन धारणा मंडल मुद्रा नाहि।
सदा ध्यान के गम्य है ध्यानी जानत ताहि॥
चारो ही अनुयोग में गाये गये है गीत।
सोनिवसे हि शरीर में शुद्ध बुद्ध जग जीत॥
निर्मल ज्ञान पवित्र है वसे शिवालय स्थान।
तैसा ब्रह्म शरीर में भेद कछु नहि मान॥
जिसको निरखे शीघ्र ही पूर्व कर्म खिर जाय।
देख दर्श उस ब्रह्म का नर भव सफल फलाय॥

सब पर कापरिहार कर मनका तज व्योपार।
चिदानन्द चेतन्य को मान करो शिवकार॥
अतुल ज्ञान घन आतमा मूर्ति हीन चिन्मात।
विषय वासना हीन है तीन लोक विख्यात॥
भवतन भोग विरक्त हो निजानन्द को ध्याय।
कर्म कलंक पखाल के सीधा शिव पुर जाय॥
अमल अनादि अनन्त है निवसत है निज संत।
संशय तज़ समरण करो चिदानन्द दर्शन्त॥
आप हि आप अभेद है संशय विन भगवन्त।
परमानन्द प्रभाव में तीन लोक झलकन्त॥
यदपि कर्म से लिप्त है बसे वास तन माहि।
निश्चय नयनहि लिप्त है शुद्ध शान्त पद पाहि॥

जाके भीतर जग वसे जग में जाको बास ।
जग बसता भी नहि वसे यह परमात्तम खास ॥
निश्चय नययों कहत है कर्म भिन्न अवतार ।
प्रतिबिंबक हो भाषता ऐसाईश्वर सार ॥
ज्योतिस्वरूपी ज्ञान घन वसे मोक्ष के स्थान ।
तैसा ब्रह्म शरीर में वसते भेदन ज्ञान ॥
जिसके समरण शीघ्र ही होय करम चक चूर ।
निरख निरख निज आतमा होय ऋद्धि भर पूर ॥
परमारथ निज़ ब्रह्म है ऐसा निश्चय होय ।
सोही उत्तम आतमा परम पदारथ सोय ॥
पंचेन्द्रिय मन भिन्न है भिन्न हि सर्व विभाव ।
गति चार से भिन्न है चेतन चिन्मय राव ॥
जरामरण के दोष से होते हो भय भीत ॥
तो निज आतम ध्यान में लगे रहो पल मीत ।
अजर अमर निज देह में वास करे गुण माल ॥
बार बार समरण करो खावे नहि फिर काल ।
अष्ट कर्म से रहित है सकल दोष नहि पाय ॥
दर्शन ज्ञान चरित्र मय निज वस्तु को ध्याय ॥
काल लब्धि पक जाय तब मोह सेन भग जाय ।
सम्यग्दर्शनसव लहैं अपना रूप लखाय ।

बाल तरुण बुढा नही पंडित उत्तम वेन ।
गोरा नीला लाल नहीं ऐसा उत्तम नेन ॥
आतम बामणवैश्यनही नहि क्षत्री रजपूत ।
नर नारी नारक नहि ज्ञानी ज्ञान सपूत ॥
स्वामी सेवक शिशु नही नहि कायर गुरु देव ।
धनी रंक पंडित नहि पाप पुण्य नहि सेव ॥
धर्मा धम पदार्थ में नहि गगन जड काल ।
इन में नही है आतमा यह निश्चय लखहाल ॥
अन्य तीर्थ मत जाय जिय निर्मल संयम धार ।
अनुभव पद प्रापत करो तीन भवन में सार ॥
सम्यग्दर्शन ज्ञान गुण शुद्धा चरण पिछान ।
तपजप संयम सफल हो पावे केवल ज्ञान ॥
एक आप ही ज्ञान है अन्य सकल व्यवहार ।
इन में शंका मत करो जब पावो भव पार ॥
सौ तोला सोनो घरियो काम परे जब लेउ ।
ऐसे तात जिनेन्द्रवच घर श्रद्धा समझेउ ॥
उत्तम निर्मल आतमा ध्यान धरो मन ताण ।
जिसको ध्यावत पाईये इक छिन में निर्वाण ॥
जिसके निर्मल भाव में बसे न आतमराम ।
जिसके सम दम शील तप व्यर्थ भये सव काम ॥

स्वपर प्रकाशक ज्ञान है आप रूप अपणाय।
ज़ैसे रवि आकाश में तेज ताप जग छाय॥
जिस के आतम ज्ञान है लोका लोक विकास।
एही तीरथ राज है ऐसा वस्तु विलास॥
जैसे निर्मल जल विषें चन्द्र विंबझलकाय।
तैसे निर्मल आतमा लोका लोक लखाय॥
निज पर के पहिचान में आतम ज्ञान विलास।
निज प्रदेश में निजरमें ज्ञानी गगन निवास॥
जो आतम से भिन्न है बहिरातम पैछान।
वही वस्तु विकार है समझ सोच निज मान॥
जिस की मति मन में मले सो ही पुरुष प्रमाण।
जैसी मति तैसी गति ऐसा नेम वखाण॥
इन्द्र चन्द्र नागेन्द्र मुनि जिस का करते ध्यान।
अतिशय केवल ज्ञानमय सो परमातम जान॥
परम ब्रह्म निज आतमा छोड़ न पर को ध्याय।
तब उतरे भव उधदि से वचन जिनेस्वरगाय॥
सब द्रव्यों से भिन्न है चेतन चिनमय राम।
जो आधे क्षण भी रमें भस्म करे जग काम॥
सब चिन्ता को छोड़ कर निजानन्द को ध्याय।
ते पावे निज परम पद जग में फिर नहि आय॥

निर्मल मन समदर्शी ते ब्रह्म शान्ति प्रत्यच्छ ।
जैसे घन बिन गगन में रवि दर्शे अतिस्वच्छ ॥
चेतन निर्मल फटिकसम राग रंग रति नाहि ।
जैसे निर्मल काच में आनन दर्शे ताहि ॥
तीन भुवन में सार है आतम ज्ञान अपार ।
कर्म कलंक पखाल के पावे शिवपुर सार ॥
दर्शन ज्ञान अनन्त सुख वीर्य अनन्तानन्त ।
पकते हैं फल मोक्ष के रहते काल अनन्त ॥
तीन भुवन में जीव को मोक्ष अवस्था छाड़ ।
सुख साधन नहि और है साधन आतम जोड़ ॥
जाने देखे अनुभवे दर्शन चारित ज्ञान ।
तीनों सोभे आतमा यह निश्चय परमाण ॥
निज से निज को जोयके आतम शक्ति विकास ।
रत्न त्रय मय आतमा मोक्ष सदन में वास ॥
चिदानन्द चैतन्य मय परमानन्द विलास ।
निश्चय उत्तम आतमा नित्य निरंजन कास ॥
आपा पर को जान कर पर से प्रेमी तोड़ ।
शुद्ध स्वभावी आतमा सम्यग्दर्शन मोड़ ॥
रत्नत्रय के पारखी लक्षण लक्षित तोल ।
गुण समूह निज आतमा येही लक्ष अमोल ।

भेद सहित वस्तु लखे आवे अविचल ज्ञान ।
दर्शन उत्तम पाय के चरण सहित निर्वाण ॥
निर्मल आतम ज्ञान है जो जाणे निज मान ।
परम पवित्र प्रमाण है शीघ्र लहै निर्वाण ॥
ज्ञानी के घट ज्ञान से कर्म न आवे कोय ।
सूर्य किरण के सामने अंधकार नहि होय ॥
चेतन तज इस जीव को अन्य न सुन्दर कोय ।
याते अपने आप में रमण करो सुख होय ॥
मरकत मणि जिस हात में काच खन्ड नहि प्रेम ।
जो अनुभव रस रम गया सब है सुरलभ खेम ॥
तीर्थ तीर्थ के भ्रमण से मुक्ति न पावे कोय ।
स्वानुभव जाग्रत करो शिव सुन्दरी वर होय ॥
स्वानु भव सब जीव के छोटा बड़ा न कोय ।
सर्व जीव परिब्रह्म है ऐसा निश्चय होय ॥
केवल ज्ञानी ज्ञानमय जनम मरण से हीन ।
गुण प्रदेश उनसबनि के एक बराबर लीन ॥
अनुभव रस मे लीनबिन पावे कष्ट महान ।
निज अनुभव को अचलकर पावे निज कल्याण ॥
झाड़ी जड़के नाशते सूखे पत्ता मोर ।
अनुभव से सब भवकटे जामण मरण मरोर ॥

कर अनुभव निज तत्त्व को जिसमें शांत प्रभाव।
पर से प्रेम मिटायके निजगुण गहो स्वभाव॥
जिनका चले न चित्त थल इन्द्रिय विषय कषाय।
उसका चेतन शुद्ध है निर्मल जल झलकाय॥
जो समाधि में मन रचे सावधान गुणवान।
मोह मरे मन नाचले पावे पद निर्वाण॥
चिन्ता तजदे सर्वथा शुद्धातम पहिचान।
मन विकलप कछुमत करे पावे पद निर्वाण॥
जो तुम भव दुख से डरो अरु चाहो कल्याण।
तो अपने में आपको जाप जपो निजमान॥
सीझे सीझसी सीझते जेसीझे तत्काल।
अनुभव रस के पानते सीझ सीझ रे लाल॥
कामधेनु चिन्तामणि सुरतरु पारस पाण।
मोतीमाणक आदिदे अनुभव सुख नहि आण॥
विधिनिषेद दो खेद है आप आपमें आप।
निश्चय चेतन शुद्ध है और सकल संताप॥
अनुभव अनुपम अमल है भव भंजन बलवन्त।
अनुभव चिन्तामणि रतन शिवसुन्दरि को कन्थ॥
अनुभव अमृतको रहै पावत सम्यक् ज्ञान।
ध्यान अग्नि प्रजलाय के कर्म जलावत ठान॥

चिनमूरत परमातमा आनंद दान अनूप ।
तन धन विसन विसार के निरालंभ भज रूप ॥
सकल विभाव अभावसे मन विकलप मिट जाय ।
परमातम या आतमा भेदाभेद विलाय ॥
अब हम निजपद नहि चगें स्वातम गुण गंभीर ।
परखेगें पद आपनो मोह फंद को चीर ॥
ज्ञेयक ज्ञायक आपही ज्ञान चरण दृग तीन ।
जगको लेखो मरगयो पुण्यपाप पद हीन ।
जगमग ज्योती आतमा वर्णादिक नहि काम ।
काल अनादि अनन्त भव भोगे निज तज नाम ॥
परसंगति परसादते दुख पावे यह जीव ।
स्फटिकमणि काला लगे तद गत स्वच्छ हनीव ॥
प्रगट सिद्धसम शुद्ध है देखलेउदृग जोय ।
ब्रह्मदेव भीतर बसे अनुभव कर सुख होय ॥
चेतन अनुभव नितकरो काजसरे सब कोय ।
आसन अपना साधिके थिर सामायिक जोय ॥
आतम ज्ञान विरागता शरणो सुन्दर साध ।
रमजाना गुण श्रेष्ठ है त्याग करोपर खाध ॥
पुण्य पदारथ स्वर्ग है पाप पदारथ नर्क ।
दोनों तज दुखदाव है भज निज आतम वर्ग ॥

पुद्‌गल जड़में राचकर चेतन करे विलाप।
सकल वस्तु अपनाय के भवभव करत प्रलाप॥
आतम ज्ञान जगायके अमर भये हम सोय।
गलत जलतजल अगनिते असिविष नाशे कोय॥
विषधर डस न सके नहीं दामनी दमकन काच।
सिह व्याघ्र गज सर्व पशु चीता चोर पिशाच॥
तिलि तेल घृत दुग्ध में तन में आतम जान।
पुद्‌गल विनसत जरत है आतम अमर महान॥
मिलजुल पुद्‌गल आतमा तिलमें तेल मलान।
आतम पुद्‌गल भिन्न है निश्चय नय परमान॥
आतम इन्द्रिय रहित है ज्ञानमई गुणवान।
अजर अमर यह आतमा आँख नाँक नहि कान॥
सुख दुख तन को होत है करत लाभ नहि हान।
रोग शोक नहि जासके हर्ष विषाद न आन॥
निजानन्द ज्योती जगा केवल ज्ञान विकाश।
उत्तम शिक्षा आपको अजर अमर पद पाश॥
चाहत निज कल्यान को तव आतम पहिचान।
चेतन पुद्‌गल भिन्न है निश्चय नय परमान॥
मिलन भये सब अंग में लवण खिल्लसबमान।
आतम इन्द्रिय रहित है ज्ञानमयी गुणवान॥

चिन्मूरत चैतन्य है गुण अनन्त चिद्रुप।
श्रेणी माडै क्षपक की जाय बणे शिव भूप॥

सकल विषय करतूत कर नाचनचत चउँ ओर।
तीन लोक को ईश हो लज्जित क्यों नहि मोर॥
ज्ञानमय यह आतमा त्याग योग पर द्रव्य।
नाशेतवही पुद्गला भाव शुद्ध भज भव्य॥
शुद्ध रूप जल लायके धोय करम रज रेण।
अविचल सुख पावो सदा यह निश्चय नय वेण॥
जाने निज पर भेद को आतमा ज्ञान नवीन।
सो स्वामी सब लोक को सदा शांत रस लीन॥
लोक शिखर तिनको लखे पुरुषाकार स्वरूप।
निर्विकार निर्दोष है निश्चय नय निज रूप॥
लोक शिखर पर सिद्ध है केवल ज्ञान स्वरूप।
जिन को उर अन्तर लखे रुपातीत अनूप॥
ध्यानी ताको ध्यानधर पावे केवल ज्ञान।
अविनाशी पद पायके करे सकल कल्यान॥
प्रथम जतन हृदये धरो सम्यक दर्शन लार।
ताके होते सहज में सम्यक ज्ञान निहार॥
दर्शन ज्ञान स्वभाव से मन थिरता हो जाय।
तब सम्यक चारित्र है रत्नत्रय पद पाय॥

चिदानन्द पहिचानते, अनुभव पावे आप ।
सहज स्वरूप स्वभाव से पुण्य पाप नहि ताप ॥
गुण अनन्त उपजत जहाँ अनुभव रस चाखन्त ।
इस लिये अनुभव रत्न सम नहि दूसरो सन्त ॥
गुण अनन्त अनुभव विषै सब रस इस रस मांहि ।
अनुभव रस समसारिखो और जगत में नाहि ॥
पंच परम गुरु हो गये होंगे इस जग माहि ।
इस अनुभव परसाद ते पावे शिव सुख जाहि ॥
अनुभव आतम रूप है अनुभव है निज सार ।
अनुभव चिन्ता मणि रतन भवदधि करते पार ॥
कोलाहल कलि त्याग के निश्चित हो षटमास ।
निजानन्द को मनन कर हृदय गर्भ निवास ॥
ज्ञानी जन के भाव ही ज्ञान मई निज होय ।
अज्ञानी अज्ञान वस ज्ञान भाव नहि कोय ॥
चक्री अनुभव रचन को चक्र रतन तज देय ।
महाभयानक जगत से शुद्ध होय शिव लेय ॥
श्रावक या ऋषिराज हो जो साधे निज तत्व ।
एक समे सब कर्म को दमन करें दल सत्व ॥
इन्द्र महेन्द्र नरेन्द्र नर विद्या धर धरणेन्द्र ।
रक्षक नहि इस जीव को रक्षक अनुभव केन्द्र ॥

सम्यग्ज्ञान स्वरूप है अनुभव के आधार।
अतुल अनुपम वीर्य से सिद्ध होत तत्कार॥
अन्तर दृष्टि डाल के कर आतम आचर्ण।
एक समें में लाभ लहि ज्ञान राज का शर्ण॥
निजानन्द निज रस विषें उपजत आनंद रूप।
सम कित लक्षण साध कर पावे सहज स्वरूप॥
सेनी चउंगति जीव के सम्यग्दर्शन भेष।
पावे सहज स्वभाव से या गुरु के उपदेश॥
सत्य अबस्था प्रेम है समता दिन दिन होय।
छिन छिन साधे सत्यता समकित समरस सोय॥
प्रशम भाव संवेग दम अनुकंपा आस्तीक।
सम्यग्दृष्टि आतमा ये लक्षण निज सीक॥
दागा दल संग्रह विना मुक्त माल नहि पोय।
सम्यग्दर्शन ज्ञान बिन मोक्ष माग नहि होय॥
भो संसारी आतमा परसे तोय न काज।
तेरे घर में तू वसे तामें तेरा राज॥
भो भ्राता सद्गुरु कहै स्वस्वरूप शिव वास।
कुन्द कुन्द वाणी खरी निश्चय मानो तास॥
चेतन चिन्मय रूप है पुद्गल में नहि अंश।
या ते पुद्गल त्याग के वसो चेतना वंश॥

चौरासी भ्रमता सतां दुर्लभ नर भव पाय।
करनी हो सो कर चुको औसर बीत्यो जाय॥
शुद्ध स्वरूप विचार के सिद्ध समान निहार।
आतम अमृत झरत है पान करो दृग धार॥
द्रव्य रूप सव थिर रहै थिरपर्यांयन कोन।
शुद्ध दशा धारो सही नयपर्यायक गोन॥
वैर भाव भय त्याग के समता सम रस लेय।
निज समान माने सभी आतम ज्योत जगेय॥
जैसा उज्जल फटिकमणि तैसा आतम ज्ञान।
तन मन वच जुदा रहै ऐसा उत्तम मान॥
निर्विकल्प शुद्धातमा ब्रह्म ज्ञान घन शुद्ध।
विभव विभाव से भिन्न है ब्रह्म स्वरूपी वुद्ध॥
चेतो चेतन चेतना चिदानन्द निज चैन।
याते चेतन चेततू चेतन चिन्मय नैन॥
अध्यातम निज आतमा वसे चतुर्गुण स्थान।
आतम वल प्रगटे तहां तेरह चौदह स्थान॥
चेतन लक्षण आतमा तन लक्षण जड़ जान।
तन से ममता मार कर चेतन चिन्ह मलान॥
तन प्रमाण चेतन रहै भिन्न रहे तनलक्ष।
लक्षण लक्ष विचक्षणा अक्षनहि परतक्ष॥

उपादान वलवान है आतम मूल स्वभाव।
जाने सम्यग्ज्ञन से सम्यग्दर्शन भाव॥
सकल देव में देव है आतम राम नरेश।
आराधन कर आतमा पावे निज परमेश॥
भ्रमत फिरो संसार में पार न पायो तास।
निरखे जव निज रूप को तव होवे शिव वास॥
परमारथ पर में नही परमारथ निज पास।
परमारथ साधो विना प्राणी सवको दास॥
ध्यान धरो निज रूप को ज्ञान चरण तप सार।
तुम तो राजा जगत के चेत चिदानंद तार॥
चेतन रूप अनूप है जो पहिचाने कोय।
तीन लोक के राज की पदवी पावे सोय॥
तुम तो कमल समान हो सदा अलिप्तस्वभाव।
लिप्त भये संसार जिय परपरणतिलिपटाव॥
अपने आपस्वरूप में प्रेम करे दिन रात।
सोही निश्चय शिवलहै जोड़े जग जनहात॥
जाणे जोगी जगत को सव से न्यारोनाथ।
जोग जुगत पावे सही शिव नगरी को साथ॥
पर पद से यह राचकर भूल्यो आतमा हंस।
संगत नीची त्याग दो चिदानन्द के वंस॥

सुद्धा तम पद साध के निज गुण आप रमंत।
मोक्ष मार्ग चलता थका पावे पावन पंथ॥
उपा दान आदर करो मोक्ष मार्ग को वीज।
चिदानन्द शिव लोक में पहुँचा वे निज रीझ॥
निर्मल आतम रूप को जव नहि साधन योग।
तव शिव सुख पावे नहीं परम समाधि योग॥
अपने शुद्ध स्वभाव की निजको नहि पहि छान।
उसके तप ब्रत शील सव व्यर्थ कहे भगवान॥
चेतन रूप अनूप है जपता आपही आप।
तन मंदिर में निरख लो फेंको भव की ताप॥
तीर्थ राज घट में बसे ढूंड़े सकल जहान।
मोह गहल की लहरमें आपा पर नहि भान॥
भव बाधा बधता रहा मन आशा के भार।
आतम रस राचा नहीं चला जात संसार॥
निजानन्द में मगन है परमानन्द स्वभाव।
वह योगी योगीन्द्र है शिव पुर स्वामी राव॥
जनम मरण कर थकगयो निद्रा मूर्छा खेद।
तो तुम समझो आप में परसे निज को भेद॥
अजरामर निज धर्म है धारो निज में नेक।
जनम मरण भय भगत है आपही पावे एक॥

निजानन्द में रमण कर केवल ज्ञान विकाश।
मलमूत्तर से मलिन तन तामे आत्म निवाश॥
रागद्वेष परिहार कर जड़ पुद्गल पहिचान।
क्षीर नीर सम न्याय कर आतम ज्ञान निधान॥
जीव अन्य तन अन्य है अन्य सकल जंजाल।
निजस्वरूप लख नम से पहिरे मंगल माल॥
दीप रतन दिन कर यही अग्नि क्षीर पाषाण।
स्वर्ण रजत घृत फटिकमणि येनवजीव प्रमाण॥
आतम तन से भिन्न है निर्मल जल आकाश।
अथवा जल में कमल है निजानन्द परकाश॥
निर्मलमय आकाश है तथा हेम अमलान।
ऐसे निर्मल आतमा भाव भक्ति पहिचान॥
दृष्टी धर नाशाग्र में चेतन चिनमय मान।
दुग्ध मात नहि पीयगे जन्म जराक्षय जान॥
ज्ञानमयी निज आतमा पुद्गल पर जड़ जान।
मिथ्या मोह मदान्ध तजभज आतम अमलान॥
पुण्य वान धरमातमा भाग्यवान गुणवान।
जो तजते परभाव को विश्व वस्तु पर जान॥
रमते आप स्वभाव में नहि पुद्गल आदेश।
ते शिव पावे परम सुख तज संसार क्लेश॥

किरले श्रद्धावान है विरले निरखे ब्रह्म।
नवलब्धि विरलेलहैं निजानन्द परिब्रह्म॥
निजानन्द शरणो सही भव वन उतरे पार।
ज्ञान मई यह आतमा सदा शान्ति दातार॥
वट शक्ति है बीजमें बीज मध्य बटजान।
शक्ति आतम राममें जग पूजत गुणगान॥
यन्त्र मन्त्र सबतन्त्रतज भज निश्चल श्रधान।
सो सम्यग दर्शन सही ज्ञान चरण अमलान॥
ज्ञान दरश चारित्रतप निजसें निजपहिचान।
स्व स्वरूप को ध्यान धर पावे केवल ज्ञान॥
सम्यगदृष्टि आतमा साधन है निजरूप।
एकाकी साधेसदा स्वातम रूप अनूप॥
पांचों अक्ष निरोध कर मन थिरता सम आय।
अजर अमर गुण गुण निलय ऐसा आतम राय॥
जग से मोह निवार के राग द्वेष परिहार।
उत्तम स्वातम ध्यान धर सिंधु नीर से पार॥
समता सुख में मगन हो राग द्वेष नहि लेश।
निजानन्द में रमण कर काटे सकल कलेश॥
विषय कषाय कषे नहि निराबरण निर्मोह।
इन्द्रिय मनमथसमन कर साधेस्वातम सोय॥

सुख सागर के स्नान में लगे रहे दिन रात।
रोग शोक नहि रोष है सम सन्तोषी गात॥
पूरण ज्ञानानन्दमय अजर अमर अमलान।
वीतराग सर्वज्ञमय ऐसा आतम जान॥
सम्यग्ज्ञान संभाल के मिथ्या मोह निवार।
शुद्ध दशा धारण करो निजानन्द अवतार॥
निराबाध निज गुण लसे ज्योती रूप अनूप।
ऐसा आतम राम है निरख निरख निज भूप॥
लोका लोक स्वरूप को जानन देखन हार।
ऐसा आतम ज्ञान है प्रगट करो तत्कार॥
जय जय सुर धुनी करत है ऐसा आतम बोध।
बार बार समरण करो मन में मानों मोद॥
आतम रूप अनूप है सुर नर के नहि गम्य।
ध्यान धरो चिद्रुप को होय निरंजन रम्य॥
शिव स्वरूप आतम सही आतम करो सुधार।
अनुभव रस धारा करो निज पर करो विचार॥
ब्रह्म रूप अपने विषें भजल्ले भाव विशाल।
मोह सेन परिहार कर गावो निज गुण माल॥
जगन्नाथ जगदीश है पुरुषोत्तम निज ज्ञान।
सर्वशिरोमणि आतमा ध्यावत निज कल्यान॥

परम पुरुष परधान है शुद्ध बोध आधार।
ऐसा आतमराम है अंतर करो विचार॥
ज्ञाना नन्द स्वभाव है शोभित है अमलान।
निजप्रदेश में रमन है परमातम परधान॥
पूरणचन्द्र प्रकाश मय भव संताप विनाश।
दिनकर समपरकाश है भेद ज्ञान निज पाश॥
आपहि मोक्ष निवास में जाने वाले लोग।
निज लीला में मगन हो आतम अनुभव भोग॥
सर्वोत्तम अति श्रेय है सन्तति धारक आप।
आप आप को परखलो गुण अनन्त है साप॥
मुनि जन आदर करत है आतम गुण अभिराम।
धर्म तरू सुन्दर हरा फल है मोक्ष मुलाम॥
भव सागर के पार को कारण आतम जान।
वार वार समरण करो समय सार वाख्यान॥
आतम अनुभव कमल है हरे हमारी ताप।
निजानन्द का गान में नही ताप संताप॥
धर्मरूप अवतार है आतम ज्ञान महान।
पारस लोहा हेमकर भूषण धारे मान॥
तीन लोक आनन्द मय रमते आत्म प्रभाव।
तारण तरण जहाज है ऐसा आतम राव॥

लोभ पाप को भार है देत सदा आताप ।
इनको कर परिहार तुम आतम दरशन साप ॥
मुनि न मोदन चन्द है आतम उत्तम कंद ।
निरावरण निजरूप है सुन्दर शोभा मंद ॥
मोह सुभट को पटक कर मन इन्द्रिय को जीत ।
आतम निधि साधन करो पावो परम पवीत ॥
निज आश्रय विश्राम है ऐसा चेतन राम ।
साधन कर पावे सही होय सकल अभिराम ॥
परमानन्द अभेद है ध्यावत जग जन सन्त ।
पावत निध अपने विषें भ्रमण मिटे जग अन्त ॥
शुद्ध भाव से ध्यावते पावे अपनु राज ।
केवल लक्ष्मी पायके शिवपुर करते राज ॥
अतुल वीर्य आतम लसे काम कोप नहि अंश ।
श्रेष्ट पुरुष पुरुषार्थ से करे कर्म विध्वंश ॥
आतम ज्योति अमंद है जन्म जरा क्षयकार ।
निश्चल ध्यान लगाय के निरखलेउतत्कार ॥
सम्यग दर्शन ज्ञान गुणचारित आत्म स्वरूप ।
धर्म मार्ग धारण करो तरो भवो दधि कूप ॥
काम दाह को दमन कर ज्यो ज्वाला जलधार ।
आतम रूप सम्हाल के पहुचे भव जलपार ॥

आतम रूप अनूप है लोकतरूप अनूप।
रमण भाव निज शक्ति सो साधन करो स्वरूप॥
निजानन्द आदीन है निर्मल सम परिणाम।
शुद्ध भाव साधन करो पावो निज आराम॥
गुण पर्याय अनन्त युत वस्तु स्वयं परदेश।
स्वयं काल स्वक्षेत्र हो स्वयं स्वभाव विशेष॥
शिवकन्या के कन्थ कव होंगे आतम राम।
अपनी संपति सारलो सिद्ध करो निज काम॥
शान्त स्वभावी आतमा अविनाशी अविकार।
शांति नाथ पद पाईये कर्म करो क्षय कार॥
जगत कार्यं जंजाल तज आतम भज आधीन।
सब गुणमें सरदार हो हम तुमरे आधीन॥
मिथ्या मोह कषाय मद महा घोर अंधियार।
जगमें शिवमग लोपते तजो तजो निज धार॥
आतम अनुभव आदरो नहि आदि नहि अन्त।
सदा काल शोभित रहै जयवन्तो जय वन्त॥
तीन लोक आराध्य है आतम धर्म महन्त।
धैर्य वीर्य गुणग्राम है शरणागत हो सन्त॥
गण धरादि समरण करे गणपति गावे गान।
ऐसा आतम राम है स्मरण करो निज मान॥

आतम अनुभव आवते राग द्वेष मिट जाय।
धर्माधर्म विरोध तज सम्यगदर्शन पाय॥
हे आतम तुम नोनिधी चिन्तामणि मय नाम।
हम को तुम भव सिंधुते पारकरो गुण धाम॥
दिव्य ध्वनि वर्षाय के सर्व अर्थ दिखलाय।
शिव मारग पावे हमें दोष रहित कर राय॥
ज्यो मोही मानी महा जाने नहि निज भेद।
धारत है अल्पज्ञ जन पावे निज गुण भेद॥
बल अनन्त आतम लसे सब विद्या के बीज।
ऐसा आतम राम है मुक्ति पंथ भज चीज॥
पर निमित्त से जीव को रागादिक परिणाम।
पर निमित्त को त्याग कर पुरुषारथ सज राम॥
अन्तर बाहिर शत्रु सब जीतो आतम राम।
निर्भय अचल मदा रहो करो सदा आराम॥
आतम ज्ञानी आतमा वाणी सुधा समान।
जो पीवत सुख अतिलहै अजर अमर पदथान॥
पाप सघन बन दहन दब विश्वेश्वर भगवान।
अतुल प्रभा धारे महाऐसा आतम जान॥
पूरण जब परकाश हो जागे केवल जोस।
लोका लोक विलोकते नहि राग नहि दोष॥

भवाताप आतम हरे शीतल निर्मल नीर ।
ध्यावे गावे भावसे वे उतरे भवतीर ॥
घन सम गर्जित कर्म रज तर्जित जग जन देह ।
ऐसे पुद्गल कर्म को दृग धारी नहि नेह ॥
आकुलता नहि तत्त्व में स्वपद में आनन्द ।
अचल रूप निज आतमा भाव अभावी द्वन्द ॥
शिवमारग की शुद्धता दोषरहित वरताव ।
ज्ञानानन्द स्वभाव में सर्व अर्थ झलकाव ॥
जाकरि आतम जानिये सो है अगम अलक्ष ।
निर्गुण सब जन कहत है अंतर लख परतक्ष ॥
चेतनतामय अष्टगुण आतम में परधान ।
अचल अमूरत आतमा अजर अमर अमलान ॥
ज्ञान जोति जाग्रत करे व्यापक लोका लोक ।
ऐसी उत्तम आतमा झलकत निजगुण थोक ॥
ऐसी अन्तर आतमा समरों मन वच काय ।
भव समुद्र को पार कर पहुँचा शिवपुर जाय ॥
सर्वोत्तम यह आतमा भवसागर से दूर ।
तत्वा तत्व प्रकाशते ज्ञाता व्यक्ता पूर ॥
तारणतरण निजातमा अतुल शक्ति क साथ ।
धीरवीर निज भाव है सदा रहत है साथ ॥

वस्तु शुद्ध स्वभाव है निर्मल ठंडा नीर ।
स्वच्छ लिखो समभाव मे हरे जगताकी पीर ॥
पुरुषारथ चारोविषें मोक्ष पदारथ सार ।
सोही पावे आतमा अतुल वीर्य निजधार ॥
कर्म मेल प्रक्षालकर वस्तु स्वरूप लखाय ।
ऐसी उत्तम आतमा शिव सुख भुगते जाय ॥
निजा नन्द तल्लीन से शुद्ध ज्ञान मय होय ।
मोह कर्म चक चूर कर निज स्वरूप निज जोय ॥
निज प्रदेश निष्कंप है निज आनन्द निवाश ।
परम पुरुष आतम लसे घट घट वास विलाश ॥
आतम तत्व विचारिये शास्त्र ज्ञान के द्वार ।
अंतर मुख अवलोक ते निजानन्द अवतार ॥
सदानन्द आनन्दमय आतम अनुभव जीव ।
निज आनन्द विलास में रमण करे शिव पीव ॥
गुण अनन्त पर्याय के ज्योऽविभाग परिछेद ।
भूमी जल तरु पवन अग त्रस जानत गुण भेद ॥
आतम ज्ञान अमोल है है आगम अनुकूल ।
भविजन बाधक शक्ति है शिव संपति को मूल ॥
आतम तत्व निहारते शब्द शास्त्र को ज्ञान ।
सहजेही पावे सही ऐसी शक्ति महान ॥

ब्रह्म ज्ञान आतम विषे लिखे शुद्ध अविकार।
शब्द शास्त्र का ज्ञान को आतम तत्व विचार॥
सूक्ष्म तत्व स्वभाव में झलकत है सब अंग।
मोक्ष मार्ग अंतरलसे ऐसा आतम गंग॥
तीन शतक त्रेसट भये पाखंडी शिर मोर।
आतम को न हिजानते जगत मचावे शोर॥
आतम बल परचंड है धर्मयथारथमंड।
ये ही गुण आतम विषें रत्नत्रये करंड॥
जो निरखे निज नेन से महाज्ञान भंडार
शुद्धातम होते सही शुद्ध बुद्ध अविकार॥
शान्त अकंपित आतमा घट में करे निवाश।
शुद्ध सुवर्ण समान है महाज्ञान गुण राश॥
कर्ण रूप कर्तार है निर्मल निज निर्लेप।
रहे अकंपित आतमा राग द्वेष नहि लेप॥
कर्म अंश झर जायगे नहि मोहमद फेख।
मेघ पटल बिन सूर्य जिम प्रगट आतमा देख॥
तेज प्रचंड प्रभावते अंधकार अघजार।
आतम जोत जगावसी ऐसा आतम सार॥
आतम शक्ति सुभाव से होत करम सब क्षीन।
सम्यग्दर्शन शुद्ध कर ज्ञान चरण निज लीन॥

शत्रू जीतेछिनक में होत सुखी स्वाधीन ।
निज स्वरूप आनन्दमय रमण रचत परवीन ॥
सकल पाप परमाद को अन्त करो बलवन्त ।
पुरुषारथ निज विर्यसे सुखी हो उसवसन्त ॥
मन मतंग बल मारकर इन्द्रिय विषय विडार ।
निजानन्द जीतव्यता जरामरण क्षयकार ॥
आतम सुखमय मान कर सदा मगन मन लीन ।
कर्मावर्ण विनाशकर धीर वीर भव छीन ॥
एक रूप निज स्वाद से सदा मगन गंभीर ।
कर्म काष्ठ जल जाय तब धीरवीर भवतीर ॥
आतम लक्षण शुद्ध है, इन्द्रिय विषयातीत ।
वचन अगोचर गम्य नहि सुरनर गावे गीत ॥
आतम रूप अगम्य है, मुनि जन मनमें मान्य ।
सज्जन जन समरण करे करे कर्म की हान्य ॥
सन्तन मनमें मान्य है आतम राम स्वरूप ।
सज्जन वल्लभ आतमा ध्यान धरे निज रूप ।
काल अनन्ता नन्त से आतमजोत अमंद ॥
अव्यय अविनाशी सदा कर्म वन्द के फन्द ।
स्वयंजोति जगायके देखे सब संसार ।
सब के स्वामी होत है आतम ज्ञान अपार ॥

हिलमिल रहते सर्व जन तबही सब आनन्द ।
संगत स्वातम सारलोचन्द जोत तव मन्द ॥
चक्रीनृपकी संपदा शक्रसारिसा भोग ।
वाजवीट सम गिनत है सम्यग्दृष्टो लोग ॥
आतम रस जव झलक है वनिता भोजन पान ।
सुखा भाष माने सदा देख जथा रथ ज्ञान ॥
सुख नहि है संसार में जैसे खाज खुजन्त ।
बलन जलन जारी रहै ऐसो सुख समजन्त ॥
आदर लज्जा नम्रता क्षमा प्रेम आचार ।
प्रिय भाषण नहि याचना भूषण आतम सार ॥
जगत वास को जानकर आतम शुद्ध विचार ।
निज स्वभाव समता गहो ममता कर परिहार ॥
बीत राग भावों विषें दोनों नये निषेध ।
तवही जाना जात है मन वाँछित निज भेद ॥
मोह जाल में पसरयो नहि पावे निज सत्व ।
आतम सो परमातमा परमातम निज तत्व ॥
मोह जाल जब झर परे पावे आतम तत्व ।
येही ज्ञाता ज्ञेय को भेद विचारो सत्व ॥
में अनन्त सुख को धनीं सुखमय आतम राम ।
अविनाशी आनन्द घन? धारो आठु जाम ।

शुद्ध हमारो रूप है शोभित सिद्ध समान।
गुण अनन्त ज्ञायक गुणी चिदानन्द भगवान।
कर्मनके संयोगते पुद्गल परणति लीन।
निश्चय दृष्टि निहारते आतम राम अलीन॥
भववन में भटकत फिरे सिद्ध होन के काज।
राग द्वेष मद त्यागदे यही सुगम इलाज॥
परमातम पद को धनी रँक भयो विल लाय।
मोहजाल में मत फसे मोक्षमार्ग निज लाय॥
राग द्वेष मदमोह तुम भूल करे नहिं रँच।
परमातम पद भूलकर तुम ही भये तिरंच॥
जप तप संयम शील व्रत मोहगहल नहि छाय।
तव तक भला है जीव के मोह भये जर माय॥
ज्योपरमातम पद चहो राग द्वेष कर चूर।
निजानन्द निरखो सदा पावो गुण भरपूर॥
लाख बात की बात यह तोकों दई बताय।
जो परमातम पद चहें तो न करतकषाय॥
राग भाव के त्याग विन परमातम पद नाहि।
कोटा कोटी तप तपा वृथा खेद कराहि॥
सब कर्मन को जीत वो कठिन कार्य है मित्र।
जड़ खोदे बिन नहि नशे येही बात विचित्र॥

जो दारू के पुंज को नर नहि सके उठाय।
तनक आग के योगते भस्म होय भग जाय॥
पर वस्तु के त्याग से आतम जोत जगाय।
जो पावे निज संपदा वचन जाल नहि गाय॥
वाणी वरसत मेघ झर जिन तन अमृत धार।
जो पीवत भविजन लहै अजर अमर पद सार॥
दीपक रजनी के विषे घट पट करे प्रकाश।
त्यों चेतन चिद् भाव में लोका लोक विकाश॥
ज्ञानी ज्ञान विषें रमें मूरख माने कोन।
पर सुभाव में मगन रत कनक पान मद सोन॥
चेतन चन्दन वृक्ष पर कर्म सर्प लिपटन्त।
के कै उत्तम वचन से भाग जाय दिशअन्त॥
दक्ष शिक्ष हित मित चहे शठ को शठ से प्रीत।
अलि अम्बुज में मगन है कर्दम मीडक मीत॥
पर भावन से प्रेम तज निज में निज आधार।
ध्यान धरो आतम रमो होये बेड़ा पार॥
पर वस्तु के त्याग से स्वातम ज्ञान लहाय।
जो पावे वह संपदा वचन गान नहि गाय॥
मिथ्या मत मानत थका हिंसा आतम होय।
तीतर तोता खात है मकरी माखी सोय॥

सत्य वचन संसार में मानत सब जग जान ।
सांच सूवा कहे राम को सुनत सकल सभ्म कान ॥
तस्कर विद्या त्याग दो महा पाप को मूल ।
पर वस्तु मे भिन्न हो सुंघो आतम फूल ॥
शील रतन को जतन कर निज आराधन साध ।
सीता सत्य प्रभाव से ज्वाला जल हि अगाध ॥
परिग्रह संचय मत करो परिग्रह जग को मूल ।
माखी मधु को सींचती जड़ा मूल से धूल ॥
राग द्वेष नहि कीजिये मोह शूल को मूल ।
कोकिल केले पींजरे मीष्ट वचन की भूल ॥
ज्वलन संग लोया लगे संडासी से पेख ।
पीट मार घण की लहै संगत का फल देख ॥
संगत कीजे साधु की पर वस्तु को त्याग ।
आतम रत इक पलक में लोहा कंचन भाग ॥
पर संपति लीजे नहि पर संगत से खेद ।
पट पानी में भींजते धोबी धोवे भेद ॥
पवन भरे मोटर चले मसक थूल तर जाय ।
संगत के फल देखिये पवन रबड़ दुख पाय ॥
बहुत बात में क्या धरा थोड़ी में समजन्त ।
त्याग राग भज भाव निज साधन साधो सन्त ॥

सकल जाल जंजाल तज भज निर्भय निज रूप ।
वीत राग अर्हन्त पद पावो आतम रूप ॥
पर परणति छटकाय के निज परणति आधार ।
अनुभव भव भेदन करो सम्यग्दर्शन सार ॥
अनुभव समरन के लिये निर्विकलप उपयोग ।
एकाग्र कर चित्त को भोगे निज रस भोग ॥
निर्विलप अनुभव दशा पीवो अमृत पान ।
निश्चय निज में वस्तु है सो ताको तू जान ॥
स्याद वाद वाणी भणे समझे दक्ष प्रतक्ष ।
आवे अनुभव आप में तजे सकल जग पक्ष ॥
शुद्ध द्रव्य अनुभव विषें वर्तें निशि दिन साथ ।
ध्याता सम्यक वन्तनर जल में कमल रहात ॥
ज्ञान राज अविचल दशा बने विकारन कोय ।
राग विरोध विमोह मय परणति कभी न होय ॥
ऐसी महिमा ज्ञान की ज्ञानी ज्ञान विलोक ।
शुद्ध सुवर्ण समान है निज गुण पावे थोक ॥
लेत नहि पर द्रव्य को देत धर्म उपदेश ।
तो भी लक्ष्मी चरण में समो सरण परवेश ॥
भैया बात अपार है कहें कहाँ लो तोय ।
थोरे ही में समझयो ज्ञान चरण दग जोय ॥

आतम निर्मल मुकर वत तीन लोक आभाष।
सुख सत्ता चैतन्य मय निश्चय ज्ञान विलाश॥
जाको गुण जामे वसे जगत वास नहि होय।
शुद्ध दृष्टि धारण करो दोष न लागे कोय॥
वीत राग वाणी भणे दया धम उपदेश।
आतम धर्म सुधार के दृग धारी धर भेष॥
आतम धर्म अनन्त है स्वाभाविक शिर मोर।
पर निमित्त रखता नही निश्चय धारो सोर॥
एक महूरत ठान के एक पलक छिन एक।
आतम मे राचे सहि कटते कर्म अनेक॥
शान्त छवी छाजे सहि समता सकल स्वभाव।
निजानन्द पदवी धरो पावो परम स्वभाव॥
स्वातम सुख सम सुख नहि निजानन्द दर्शाव।
निर्मल ज्ञायक भाव है शुद्ध स्वरूप स्वभाव॥
आतम से लव लाय के आशा पासी तोर।
पूरव संचित कर्म को चूरण करो मरोर॥
रतन पदारथ पाय के दे तु सिंधु में डार।
ते भव बन में भ्रमत है अन्त न आवे सार॥
शोभा अपरंपार है आतम परम पुनीत।
जपते पाप पलाय है आतम ज्ञान अतीत॥

महा तेज रवि कोटवत ऐसा आतम शूर।
शूद्ध योग साधन करो निधि पावो भरपूर ॥
दर्शन ज्ञान स्वभाव है हे परमातममान।
अन्तिम पौरष साध के करलो उत्तम काम ॥

सूक्षम रूप अनूप है महिमा अगम अपार।
शूद्ध निरंजन गुण मणि चेतन चिन्मय सार ॥
गण धर गावत गान को और सुरा सुर नार।
तीन लोक तारण बली आतम राम निहार ॥
आतम ज्ञान शिरोमणि सिद्ध अनन्तानन्त।
अपने आप स्वभाव है ऐसा आतम सन्त ॥

जनम मरण जरजर किये मेटी भवकी आस।
ऐसा आतम राम है सब जीवों के पास ॥
निज स्वभाव अविकार है परम धरम दातार।
ऐसा आतम तत्व है तीन लोक उद्धार ॥
धर्म तीर्थ धारी सदा धर्म धुरंधर धीर।
ऐसा आतम चिह्न है प्रकट करो निज वीर ॥

निजानन्द नायक महा आतम आनन्द कंद।
सम कित सहज स्वभाव है परमानंद अमंद ॥
जगत जीव जीते सबे ऐसा है अर्हन्त।
तैसा आतम नाम है ध्यान धरो निज संत ॥

मोह महा बल दल मलो विजये झंडा लार ।
ऐसा कू बलवान है कर्म युद्ध अविकार ॥
रागादिक रंगरस गयो अविनाशी शिरदार ।
शुद्ध सुवर्ण समान है आत्म निरंजन सार ॥
रोग दोष मद मोह मल इनको नाहि लगार ।
ऐसा आतम वीर है भावन भावो सार ॥
पाप कलाप विलाप कर भाग गयो घरबार ।
शुद्ध भये अर्हन्तजिम आतम समझ सुधार ॥
निजानंद के भोगमें सदा रह इकसार ।
ऐसा आतम तन बसे समरण साधो सार ॥
भवसागर से पार को होनेको मन चाह ।
उनमुख होकर निरखलो येही शिवपुर राह ॥
निजानंद के स्वाद में कभीं न आरत आय ।
ज्ञान आरसी झलक में सकल पदारथ पाय ॥
अहंकार आदिक भगे ज्ञानराज परतक्ष ।
गुणअनन्त बलवन्त है परम शक्ति निजलक्ष ॥
परम शक्ति परमातमा अजर अमर अजलक्ष ।
परसहाय नहि आपमें साधन से परतक्ष ॥
स्वयं तीर्थ आनन्द रस आतम राम स्वरूप ।
परम हंस पद वील है निराकार निजरूप ॥

बुद्ध परमातमा परम ज्ञान परवीण।
परम ब्रह्म विज्ञान घन ऐसा आतम लीन॥
कर्म मेल से लिप्त है जगवासी धन वान।
अंतर लक्ष्मी आतमा झलकत है निज भान॥
पूरण पंडित पद पढे द्वादशांग सब सार।
अणूमात्र धारण करे नहि उतरे भव पार॥
निराबाद निज आतमा चिदानन्द लवलीन।
पर वस्तु अपणी नही यह मानत भव क्षीण॥
परम ब्रह्म बिज्ञान है सब जग भोग उदास।
मोह कर्म मल दूर है निज संपत्ति सुख रास॥
नहीं चला चल चाल है अचल ध्यान में लीन।
चिदानन्द लखते सदा ज्ञान ध्यान स्वादीन॥
शिव स्वरूप निज आतमा आनन्द मय गुणवान।
शात इन्द्रादिक पूजसी परम पुरुष परमान॥
तीन लोक शिरताज है रमते आपही आप।
ऐसा हैंयह आतमा सवी करो निज जाप॥
जाप जपे निज भाव को भावे बारंबार।
समझो यह आतमा अल्पकाल शिवद्वार॥
महाभाग्य जाग्रत भयो जपते आतम जाप।
पर वस्तु से भिन्न है निरखे आपहि आप॥

निज पुरुषारथ सदन को कारण है जिन विंब।
आप आप में रम रहै आपही है प्रतिविंब॥
महा भाग्य के योगते जागत भयो सचेत।
अब अनुभव आदर करो महा शांत पद देत॥
चिदानन्द ज्योतीमये केवल ज्ञान महान।
ऐसी ही यह आतमा भेद ज्ञान निज भान॥
निज सुखमें सुख होत है, पर मुख में सुख नाहि।
सकल सनातन काल में अन्त कभी नहि आहि॥
करम रुलावे आतमा करे कर्म चक चूर।
आतम जोती जागता आतम ज्ञान हजूर॥
सब सुख निज में होत है पर सुख में दुख पाय।
में भी निज सुख का धनी पाउं निध निजराय॥
इन्द्रिय ज्ञान परोक्ष है क्रमवर्ति कहलाय।
युगपत वह जाने नहि अंतर येही लहाय॥
उत्तम सुख स्वाधीन है चारो गतिमें नाहिं।
पराधीन नहि विघ्न विन नित्यानन्दलहाय॥
पूरण पद स्वाधीन है आतम गुण अरविन्द।
निजानन्द आनंदमय ज्ञान कला गुण वृन्द॥
विघन भाव नहि लेश है उदय तेज बलवान।
महातेज का पुंज है अविनाशी विज्ञान॥

घट घट में शोभे सदा ज्ञान राजघन घोर ।
निज घर में दीपक जले निरावरण शिरमोर ॥
मन्दिर पत्थर चित्र है समझे नहि आज्ञान ।
ज्ञानी समझे ज्ञान से सर्व पदारथ जान ॥
सुर नर चारण मुनिजजे निजानन्द भगवान ।
ऐसी महिमा आतमा सतस्वरूप निज ज्ञान ॥
सूर्य सुमेर समान है सतस्वरूप निजभान ।
सम्यग दर्शन आतमा ज्ञानचरण गुण वान ॥
मरण रोग को हरण है समझत ज्ञानी ज्ञान ।
संसय विभ्रम मोह तज पावो पद निर्वाण ॥
तीनलोक के नाथ है तीनभुवन शिरताज ।
ऐसा आतम ज्ञान है धार धार निजराज ॥
आतम केवल ज्ञानमय निश्चय तत्व निहार ।
सव विभाव परिणाम तज निज भज वारं वार ॥
निर्मल अपनी आतमा तासो करो सनेह ।
जवही पुद्गल रुकत है तवही शिव मगलेह ॥
अपने अपने भाव को सर्व वस्तु वर्ताव ।
सदा काल चितवन करो परतं ममत अभाव ॥
परमारथ ते आतमा एक रूप ही जान ।
विकलप पर पद निमित है ते अभाव शिवमान ॥

पर पद से तू प्रेम तज हरे सर्व संसार ।
चहु गति दुख पावे नहीं भव समुद्र से पार ॥
आन कल्पना त्याग कर निजानन्द रस लीन ।
द्रव्य दृष्टि धारण करो पावो मोक्ष नवीन ॥
निज स्वरूप में मगनता शान्ति सुधा रस पान ।
संयम समता शील व्रत धर्म ध्यान धन मान ॥
सम्यग्दर्शन भाव निज ज्ञान चरण तप सार ।
निज स्वरूप पहचान के सिद्ध लोक स्थिर धार ॥
दर्शन ज्ञान स्वरूप है आतम धर्म महान ।
परमारथ परमातमा आप आप में मान ॥
केवल ज्ञान विकाशते लोका लोक निहार ।
शिव रमणी भोगे तुही भेद ज्ञान उर धार ॥
बोध समाधी आप है संयम साधन आप ।
आपहि आप रमाय के दूर भगे सब ताप ॥
शुद्ध निरंजन कर्म बिन मूरति रहित अखंड ।
निज ध्यावे परमातमा पावे शिव सुख कण्ड ॥
धर्म ध्यान धारण करो साधो निज पद चन्द्र ।
परंपरा शिव पुरलहो नमत चरण जुग इन्द्र ॥
गण धर ध्यावत आतमा हरिहर धरते ध्यान ।
क्रोध मोह मद मान नहि ध्यावो निज भगवान ॥

पुण्य पाप जाके नही नाही हर्ष विषाद ।
मण्डल मुद्रा मन्त्र नहिं ध्यान गम्य निज स्वाद ॥
चेतन इन्द्रिय रहित है रूप रहित चिन्मात्र ।
उत्तम लक्षण आतमा आपा आपहि मात्र ॥
गगन प्रदेश अनन्त है जानत केवल ज्ञान ।
सो आतम में झलक है निश्चय िनज पद मान ॥
ज्ञान ध्यान अरु ध्येय से परमातम पहिचान ।
जाके भीतर जग बसे जग से बाहिर मान ॥
महान ज्ञान मय आतमा सकल कर्म मल हान ।
नित्य निरंजन शान्त शिव सोपरमातम जान ॥
जल थल वर्णन गंध रस शब्द स्पर्श नहि पास ।
जरा जनम नहि मरण है नाम निरंजन तास ॥
जो निज भाव स्वभाव है पर संपति नहि लेश ।
ज्ञाता दृष्टा आतमा सो शिव समता भेष ॥
थिर कर आतम ज्ञान में मन को वेग विलाय ।
निजानन्द में रमणाकर शिव रमणी रम जाय ॥
देह भिन्न निज ज्ञान मे देखे ब्रह्म स्वरूप ।
परमातम पदवीधरे सकल निकल निज रूप ॥
नित्य निरंजन ज्ञानमय परमानन्द निधान ।
मन को स्थिर कर समरले यही अमृत पान ॥

जो पुरुषारथ साधना अपने आप स्वरूप ।
पर पदार्थ से मुक्त है पावे निज चिद्रूप ॥
मिथ्या विकलप त्याग के शुद्ध रूप परतीत ।
त्रिकाली स्थिरता भजे जन्म मरण जयरीत ॥
पराधीन पदवी तजो भजो शुद्ध निज रूप ।
अपने आतम राम की महिमा अगम अनूप ॥
पराधीन भव भव करे अपनी भूल सधार ।
निजानन्द रस पान कर पहुँचे शिवपुर द्वार ॥
यह अटल सिद्धान्त है आतम ज्ञान अनूप ।
जब आवे अनुभव दशा पावे सिद्ध स्वरूप ॥
पाप पुण्य फल भोगते पहिचाने परिणाम ।
आप आपमें रमर है पर परण तिनहि नाम ॥
ध्रुव स्वभाव की दृष्टि से पर पर्याय पिछान ।
वीत रागता आत है, पावे आत्म कल्यान ॥
निज स्वभाव दृष्टि धरो पर पर्याय पलाय ।
निजानन्द निज मान लो उत्तम औसर आय ॥
जिन पद निज पद एकता भेद भाव भय नाईं ।
लख आप में आप है जैन वैन दर्शाईं ॥
निज परिणाम पिछान में अंतर जोति जगन्त ।
उसही के आधार से शिव मग साधु रमन्त ॥

पर संयोग विभाव वस सोना ताँवा एक।
निज स्वभाव की दृष्टि से होत नाहिं इक मेक॥
ब्रह्मभाव भीतर वसे गुण गुणी नहि भेद।
इस प्रभाव के भाव से तन्मयता निज वेद॥
तत्स्वरूपता होंतही दर्शे आत्म स्वरूप।
निर्मल मणिसम शुद्ध है शुद्ध रूप चिद्रूप॥
तीन लोक वन्दित सदा निर्मल निष्कल श्रेय।
अविनाशी आनन्दमय मुनिजन ध्यान धरेय॥
भेदा भेद विकास से निवसे देहा देह।
उस चेतन को परखले औरन से क्या नेह॥
जीवा जीवन एक नहीं लक्षण भेद अनेक।
ज्ञान मूर्ति चिन्मात्र है चेतन चिन्मय एक॥
भव तन भोग विरक्तमन निजानन्द को ध्याय।
पुग्दल लंबी वेलड़ी भव व्याधी नश जाय॥
देव दिवालय वसत है सदा अनादि अनन्त।
केवल दर्शन ज्ञान मय चिदानन्द भगवन्त॥
निश्चय नयतन से रहित परमातम पद रूप।
परमानन्द पियूष है प्रति बिंबित निज भूप॥
लोका लोक विलोक की शक्ति सहज स्वरूप।
नय निश्चय से शुद्ध है विकल दृष्टि जड़ रूप॥

द्रव्य रूप उसको कहै गुण पर्याय स्वरूप ।
नित्य रूप से गुण रहै क्रम से पर्यय रूप ॥
आतम का हित आत्म से होवे छिन में बोध ।
उत्तम ज्ञान निवाश कर अन्यपदारथ रोध ॥
जो निजकोपहि चानकर निज प्रदेश रमजाय ॥
अल्प काल मे मुक्ति है ज्ञानी गगन समाय ॥
जो आतम से भिन्न है वह वहिरातम जान ।
जो निज में ही रमर है वही पंडित मान ॥
जो आतम पहिचान कर करे आत्म परकाश ।
आत्म ज्ञान के गम्य है लोका लोक विकाश ॥
जव तक ज्ञानी ज्ञान से लखे न अपना रूप ।
तव तक ही अज्ञान है नहि पावे चिद्रूप ॥
सुबुद्धि आतम वसे वही पुरुष पुमान ।
जैसी मति तैसी गती कहते वेद पुरान ॥
पुग्दल से परिणतर हूंयां वीत्यो काल अनन्त ।
अब चेतन चेतो सभे भव को करदो अन्त ॥
शुद्ध सुदर्शन ज्ञान गुण चेतन सहज स्वभाव ।
पुग्दल पूरण गलन है हानिबृद्धि वर ताव ॥
हरित पीतपर संगते नग वह रंग तरंग ॥
धुपे दाग नग झलक ज्यों उज्ज ज्योति अभंग ॥

गिरिते जल झरना झरे उष्ण सलिल परतच्छ ।
जलका सहज स्वभाव है परिणाम शीतल स्वच्छ ॥
गगन उरध अग्नि शिखा सलिल अधोग तिजाय ।
मारुत तिर्यगगमन है वस्तु भाव वताय ॥
मलिन धातु के मेलते कनक ज्योति छवि छीन ।
कार्माण पुग्ल मिले आतम गुण भये हीन ॥
उभय काल अनादि से नहिलख गुण निजसार ।
अपने शुद्ध स्वभाको निरखत सुरझे पार ॥
भ्रमत भ्रमत भव अंत में मिल्यो मनुष परयाय ।
इस अवसर चेतो नही फिर पीछे पछताय ॥
निज पुरुषारथ के बिना पशु वतनरपरजाय ।
जनम मरण करतो फिरे धरे अनन्ती काय ॥
जनम मरण करतो रह्यो तीन शतक तेताल ।
भव संकट सेवत रह्यो नाना विधि वेहाल ॥
आप अतुल महिमा धणी शिब रमणी भरतार ।
सो इक चूटकी चून वस तरसे तुझधिक्कार ॥
भोजन से तृप्तिनही यह अनादि की रीत ।
द्वादशतप भोजन करो क्षुधा वेदनी जीत ॥
वडे वडे भूपति भये रहो न नाम निशान ।
कालचक्र की चालमे मरणभये वलबान ॥

कालवली ललकार सुनि सिंह आतमा वीर ।
चमक उठे निजपदगहै संयम धारे धीर ॥
जन्म जरा भय मरन है मानसीक भय कार ।
धर्म ध्यान आतम करो समये उत्तम सार ॥
आज हि सुधरे सुगम है कल क्या होवे मित्र ।
ज्यों ज्यों भीजे कामली त्यों त्यों भारी चित्र ॥
अंत समय सधते नही धर्म धारिये आज ।
लाय लगे तव कूप को खोदत सरेन काज ॥
निज साधन अब कीजिये मिटे जगत जंजाल ।
निजानन्द रस पान कर कहा आज अरु काल ॥
भव जल भारी भौंर है दीरघगोता खाय ।
जो औसर खोवेतुही फिर पीछे पछताय ॥
अक्षर के जे अनन्त वे भाग ज्ञान रहि जाय ।
चेतन राम चिता रियो नित निगोद पर्याय ॥
तज अनादि निगोद को करत रास व्यवहार ।
सहस्त्र दोय सागर तणों फिरे जतुर्गति कार ॥
जो पुरुषारथ साध ले तो उतरे भव पार ।
उलट फिरे ज्यो आतमा वसे निगोदी धार ॥
भव्य मोक्ष के योग्य है वह अनन्त जगजन्तू ।
चहु गतिमय संसार है अक्षय राशि अनन्त ॥

भिन्न भिन्न सब जीव है मिले न काहु कोय।
अहंकरा सब त्याग दो ममता रहन कोय ॥
क्षण क्षण आयु घटत है ज्यो अंजुलेमे तोय।
भूलो मत निज काज को स्वयं सुधारो सोय ॥
जीव अनन्ता नन्त है काल अनन्ता नन्त।
कर्म फंद काटे सही शिव पुरवास वसन्त ॥
नित्य निरंजन आतमा ज्ञान राज भर पूर।
कर्म कलंक पलाय के बणो वीर गुण भूर ॥
उत्तम दिन वैषाक का पोषमाघ की रात।
तत्व ज्ञान धारो सदा येषी उत्तम बात ॥
निज्ञानन्द आराधके तजो सकल जंजाल।
चला चली सब चाल तज विलसो अपनु माल ॥
शुद्ध निरंजन आतमा पुग्दल परिचय हीन।
लक्षण दर्शन ज्ञान है निज में निज कर चीन ॥
शुद्ध निरंजन शान्त शिव मूरति रहित अनूप।
वस्तु यथारथ जान के ताको भजनि जरूप ॥
निजानन्द का भाव भज अभिचल दर्शन जान !
ये जैसा मिष्ठत रहै तैसा तिनको मान
वही उत्तम भाव है आतम सम्यक ज्ञान।
आत्म स्वभाव समा लियो अबिचल दर्शन ज्ञान ॥

चारित रतन अमोल है आप आप में मान ।
भेद ज्ञान कर आप पर रमण बुद्धि नहि कोय ॥
निज़ानन्द में लीनता चारिति रतन है सोय ।
रत्नत्रय का पारखी उसका लक्षण येहै ॥
ये रत्तनत्रय भाव को ध्यावे स्वातम शुद्ध ।
तेही अविचल पदलहै ध्यावे जग ज्ञन बुद्ध ॥
गुण अनन्त मय आतमा ज्यो ध्यावे नित ध्यान ।
महा मुनि माने गये शिग्रल है निर्वाण ॥
तारण तरण स्वरूप है निजानन्द अवतार ।
वार वार समरण करो होवे बेड़ा पार ॥
भेद रहित दर्शन लखे वह दर्शन गुण सोय ।
सकल वस्तु को ज्यो लखे ज्ञान राज तहां होय ॥
दर्शन करते प्राप्त ज्यो होत परम विज्ञान ।
भेद सहित वस्तु लखे येही अविचल ज्ञान ॥
सुख दुख सहते आतमा ज्ञान ध्यान तल्लीन ।
कर्म निर्जरातपतपे उत्तम चारित चीन ॥
आत्म रूप में लीनता सम्यक चारित जान ।
सकल परिग्रह परिहरे मोक्ष सांख्य निज भान ॥
दर्शन सन मुख जो मरे सो अति सुन्दर मान ।
स्वर्ग सौख्य संपतिल है पावे अविचल स्थान ॥

पुण्य पाप बान्छा नहीं नही मोह बस भाव।
शीघ्र बुद्धि शिव की भजे संयम सहज स्वभाव॥
देह बिषे नहि बुद्धि है व्रता व्रती नहि राग।
विषय वासना भग गई बीत राग निज जाग॥
स्तुति निन्दा नहि करत है राग दोष दो हान।
ज्ञान ध्यान निज सेवसे निजानन्द निज मान॥
दर्शन सन मुख जो रमे पावे शर्म अनन्त।
आगामी संयमलहै साधे अविचल पन्थ॥
वन्दन नन्दन स्तवन को करेन ज्ञानी एक।
शुद्ध स्वच्छ ज्ञानी रहैं निजानन्द इक मेक॥
संयम जप तप शुद्ध है शील रतन सिंगार।
भाव शुद्ध निज में रमे उत्तम संयम सार॥
शुभ भावों से पुण्य है अशुभ भाव निज पाप।
शुद्ध भाव शिव पदल है समझो आपहि आप॥
निज रतज्ञानी उपशमी संयम शोभे सार।
जो कषाय वस होत है आतम घात निहार॥
तपते सुरपति होत है शील दान से भोग।
ज्ञान ध्यान में मुनि रमे पावे परम निरोग॥
ज्ञान चरण दर्शन धरे सदा आत्म से प्रीत।
तन त्यागे निर्मोह से पावे परम पुनीत॥

आत्म ज्ञान से शून्य है व्यर्थ दशाते रीत।
जिसने मरकतमणि लखा काचगंडन हि प्रीत॥
आत्म ज्ञान उत्तम कहा सब जग करे विकाश।
सूर्य किरण के सामने अंधकार किम भाष॥
आत्म ज्ञान बिन वस्तु सब सुन्दर नहि है कोय।
इन ही की मोजूद में मन विषय वस होय॥
आत्म ज्ञान की हान में घूमें जन संसार।
बहुत नीर के मथनते मक्खन नहि है लार॥
संयत मुनि अरु मूढ में अन्तर भारी भेद।
ज्ञानी ज्ञान विषेरमें मूढ चरा चर खेद॥
धरदिगंबर भेष को पिछी कमंल हात।
मोह संग लारे लगे व्यर्थ विगाडे बात॥
शिर लोंचे ले राख को लोंग मान्यता होय।
उत्तम लोहे किलको व्यर्द विगाडे खोय॥
वह्य वस्तु संयोग में माने आप महन्त।
तो निश्चय परमार्थ को जानत नाहि अन्त॥
ज्ञानी ध्यानी आतमा सब से मैत्री भाव।
सर्व जीव पर ब्रह्म है ऐसा नित्य स्वभाव॥
रत्न त्रयका भक्त जन सदा क्षमा संयुक्त।
किसी देह में जिय रमें भेदन करता भक्त॥

ज्ञानी केवल ज्ञान से सब को लखे अभेद।
गुण प्रदे शउन सब निके एक वरा वर वेद॥
राग द्वेष को दूर कर समझे सबहि समान।
समता भाव निवास कर शिघ्रलहे निर्वान॥
शत्रु मित्र सब सम गिने जपे आप में आप।
काल लब्धि ज्यो पक गई मिटे सकल संताप॥
एक रहो दो मत करो मत कर वर्ण विचार।
निजानन्द का राज में राग द्वेष परि हार॥
भद्रो के गुण भ्रष्ट है दुष्ट जनों की संग।
लोह संग से वन्हि वल घन झेले सब अंग॥
मोह मान ममकार तज भज समता निज भाव,
नीरस करोकषाय को आवे निज गुण राव॥
मीन मरे रसना वसे भ्रमर गन्ध मृत गीत।
गज स्परशन से दुख सहै मच्छर दीपक प्रीत॥
निज अनुभव को अचलकर विषय वासना छोड़,
पर घर फिरत अनादि से सबसे नाता तोड़॥
आतम ज्ञान विकाशते केवल ज्ञान विकाश।
उस को निज में आनकर लोका लोक प्रकाश॥
ध्यावे सो पावे सही परभव लार लगाय।
याते रम पर ब्रह्म में उनही को गुण गाय॥

गोरा काला सावला पीला लाल न होय ।
सूक्ष्म स्थूल नहि आतमा वैश शूद्र नहि कोय ॥
नर नारी ब्राह्मण नही बोध बागंवर नाहि ।
स्वेतांवरन दिगंवरा नैयायक मत नाहि ॥
गुरु सेवक स्वामी नहि पंडित मूरख नाहि ।
बालक बूढा तरुण नहि आतम चेतन ताहि ॥
पुण्य पाप नहि आतमा राग द्वेष द्वय हीन ।
चेतन वन्त अनन्त गुण नित्य निरंजन लीन ॥
ऐसा है यह आतमा परमातम सम जान ।
दर्शन ज्ञान स्वरूप है शाश्वत शोभितमान ॥
रत्नत्रय निज रूप है देखन जानन हार ।
आतम निर्मल ध्याइये और सबे व्यवहार ॥
तप संयम गुण शील है अविनाशी निज रूप ।
तीन भवन में सार है निजानन्द चिद्रूप ॥
जिसके निर्मल भाव है निरखे आप स्वभाव ।
सोही परमातम बने मिटे कर्म के घाव ॥
आतम अनुभव लाइये अन्य सर्व वे काम ।
जिसको ध्यावत पाइये अविचल पद विश्राम ॥
काल लब्धि निज पायके मिथ्या मोह पलाय ।
सम्यग्दर्शन जब लहै तब ही शिवपुर जाय ॥

सब धर्मों से भिन्न है आतम धर्म महान।
क्षण भर भी सुमरण करे पावे पद निर्वान॥
ज्योपावक वन भस्म करे त्यों कर्म न की रेख।
निज दर्शन से होत है इमें मीन न मेख॥
निज दर्शन से सुखल है वह नहि इन्द्र नरेन्द्र।
याते आतम ध्यान कर पावे पद अहमिन्द्र॥
केवल ज्ञान अनन्त गुण जोजिन वर के जोय।
सो सुख साधु समाधिते अन्त क्रिया में होय॥
निर्मल मन कर देखले महाब्रह्म प्रत्यक्ष।
घन गर्जन विन गगन में रवि दर्शे अतिस्वच्छ॥
अद्भुत महिमा आतमा राग रंग दिल माहिं।
जैसे मैले आरसी वस्तु झलकते नाहिं।
पंचकरण हृदये वसे तिस नहिं ब्रह्म विचार।
एक म्यान संयोग में दोन वने तलवार॥
मन्दिर पर्वत वन विषैले पवित्र पाषाण।
नित्त्य निरंजन आतमा नहि पावत कल्याण॥
पुद्गल धर्मा धर्म नभ जीव काल आकाश।
तामें चेतन जीव है पंच अचेतन राश॥
अनाकार दृग ज्ञानमय परमानन्द प्रभाव।
निश्चय लख निज आतमा नित्त्य निरंजन राव॥

जिय तज पुद्‌गल शेष सब गमना गमन विहीन ।
उत्तम वस्तु स्वरूप को कहते ज्ञान नवीन ॥
गगन अनन्त प्रदेश है धर्मा धर्म असंख्य ।
जीव असंख्य प्रदेश है वहु विधि पुद्‌गल पेख्य ॥
वर्तन लक्षण का लहै भेद दोय परकार ।
रत्न राशि सम मानिये असंख्येय व्यवहार ॥
सकल द्रव्य माये गये लोका का शनिवाश ।
एक क्षेत्र वासी कहै तदपि स्वगुण में खास ॥
जीवादिक ये द्रव्य सब निज निज काय स्वरूप ।
चारगति भुगतान है भटकत भव भव कूप ॥
याते इन से नेह तज भजले आतम रूप ।
शिव शंकर ब्रह्मा वही बुद्ध सिद्ध जिन रूपु ॥
धर्म अथ रति काम में मोक्ष सकल शिर मोर ।
मोक्ष मोक्ष फल मोक्षमग आतमरत रह जोर ॥
तीथ कर इसमें रमें गणधर मुनिवर लोक ।
पशु वध बंधन नहि चहै तुम करते किम कोक ॥
तीन भुवन में सार है आतम ज्ञान महान ।
सुख कारण नहि अन्य है मोक्षस्थान निज भान ॥
दर्शन ज्ञान अनन्त सुख अविनाशी अमलान ।
ये ही पावे मोक्षफल आप आप में मग्न ॥

आतम हित कल्यान है दर्शन चारित ज्ञान।
रत्नत्रय निधि आतमा निश्चय है भगवान॥
दर्शन जाने अनुचरे निज से निज में जोय।
आप आप में आपसे शिव कारण है सोय॥
रत्नत्रय व्यवहार को पाले परम पुनीत।
यह साधन है मोक्ष का धरो भव्य उर प्रीत।
ज्ञानी ज्ञान विषेरमें छोड़ सकल व्यवहार।
निजानन्द रस रमण कर समय सार यह द्वार॥
इति प्रथम द्वार

कर्ता कर्माधिकार॥ द्वितीय द्वार

समदर्शि सर्वज्ञ हो वीतराग भरपूर।
चिदानन्द चिद्रूप हो नमो विघन कर दूर॥
घट पट की जाने सभी निजानन्द रस पूर।
नन्दो विरदो विश्व में ज्ञानानन्द हजूर॥
जगत जाल जंजाल तज भये सिद्ध अर्हन्त;
बार बार प्रणाम न करो करो जगत को अंत॥
लखे भिन्न नहि जीव जब आस्रव आवत सोय।
आस्रव भाव भरायके कर्म कलंकित होय॥
कर्म बंध दृढ़ होय तव रुले चतुर्गति मांय।
रागद्वेष से प्रेमकर करे जगत जन काय॥

भिन्न भिन्न जाने नहीं आतम आस्रव कोय।
भरयो भरम से मूढ़मति मोह गहल बस होय॥
मोह कर्म के फन्द से सचय करते कर्म।
जीव कर्म के फन्द में फंसकरतजते धर्म॥
वर्णादिक इस जीव के माने सहजस्वभाव।
नहिं जड़ चेतन भेद कछु भ्रम से भरता नाव॥
वरणादिक कहैं जीव के निराकार नहि कोय।
लोक जीव रूपी भये पुद्गल जीव ही होय॥
मोक्ष सौख्य चेतन पना पुद्गल ही के भेद।
ऐसे तो बनती नहीं भरम भाव बहु खेद॥
इक इन्द्रिय से आदिले पच इन्द्रिय सब जीव।
पर्याप्तक बादर इतर नाम कर्म प्रकृतीव॥
प्रत्ययसे यह बनत है कहते जीव समास।
प्रकृती कहि पुद्गल मही जीव चेतना कास॥
पर्याप्ता पर्याप्त से सूक्ष्म बादर होय।
जीव देह धारी कहै यह व्यवहारी सोय॥
गुण स्थानादिक मोह से आगम में वरणीय।
उसे जीव कैसे लिखे चेतन रहित सदीय॥
आतम ज्ञान विलास ते जाने निज पर भेद।
एक समय में जीव यह करे बंध विच्छेद॥

जब जिय आस्रव को लिखे अशुचिया विपरीत।
कलिकारण इम समझके चेतन तज सुप्रीत्त॥
निश्चय से मैं एक हूं दर्शन ज्ञान स्वरूप।
शुद्ध स्वभावी तिष्ट कर मोहादि क्षय रूप॥
ये आस्रव इस जीव के अध्रुव अनित्य निबद्ध।
अशरण है दुख रूप है इनका फल भी निशद्ध॥
ऐसा ज्ञानी जानकर इनसे निरव्रत होय।
दुख फल दुख ही रूप है निज से निज लवलोय॥
द्रव्य कर्म नो कर्म के परिणामी नहिं जीव।
जानत है वह ज्ञान से आतम ज्ञान सदीव॥
पुद्गल के पर्याय को जानत है तदरूप।
नहि उपजे नहि रमत है पर पर्याय स्वरूप॥
ज्ञानी निज परिणाम में जाने वस्तु स्वरूप।
नहि उपजे नहि परणवे ग्रहेनपर के रूप॥
भिन्न भिन्न सब जानता पुद्गल फल दुखदाय।
इच्छे नहि नहि परणावे लहेन पर पर्याय॥
उपजे नहि नहि परिणवे रमे न पर पर जाय।
ये पुद्गल निज भाव से रमता है बतलाय।
विभाव भाव के निमित ते होते पुद्गलकर्म।
पुद्गल के फैलाव से जीव धरे बहु धर्म॥

इसी लिये निज भाव का कर्ता जीवनिधान ।
सकल कर्म पुद्गल रचे जिय कर्ता नहि मान ॥
निश्चय नययोदर्शते कर्ता अपना आप ।
भोग संपदा भोग वे दुख सुख आपहि आप ॥
कर्ता पुद्गल कर्म को नानाविधि व्यवहार ।
नाना पुद्गल कर्म को जीव भोगता सार ॥
कर्ता पुद्गल कर्म को जीव भोगवे ताहि ।
क्रिया दोय नहि भिन्न है ऐसी बाणी नाहि ॥
जिसको कर्ता आतमा निज पर पुद्गल भाव ।
दो क्रिया को एकही माने मिथ्या राव ॥
जीबाजीव मिथ्यारत ऐसेही अज्ञान ।
मोह कोप अविरत दशा योग चला चल जान ॥
अविरत योग अज्ञान भ्रम येही पुद्गल कर्म ।
ये सब मिल इस जीव को दर्श ज्ञान में भम ॥
मोह युक्त इस जीव के मिथ्यातम अज्ञान ।
अविरत त्रय उप योग में है अनादि परधान ॥
शुद्ध स्वभावी आतमा नित्यनिरंजन जान ।
पूर्वभाव त्रय है सही कर्ता तिसका मान ॥
करे जीव जिस भाव को कर्ता जिसका आप ।
कर्म रेणु फिर परिणवे अपने पुद्गल आप ॥

अपना परको मानता परको अपना मान।
अज्ञानी वह आतमा सजते कर्म महान॥
निज को फिरमाने नही नहि पर को निज आप।
ज्ञानमय वह आतमा रटे आपको आप॥
तीन विधि उपयोग से क्रोधी मानी राम।
अपनेही उपयोग से कर्ता आपही काम॥
तीन विधि उपयोग से धर्मादिक निजमान।
अपने उस उपयोग का कर्ता आपही जान॥
पूर्वरीत को जान कर अज्ञानी अज्ञान।
पर वस्तु को परणावे परको निजमें ठान॥
पूर्वा परे विचार कर निश्चनय लवलीन।
यथा योग्य विधि जान कर आप आप में लीन॥
व्यवहारी यह आतमा घट पट मठ में लीन।
विविध कर्म करणादि को नोकर्मादि कचीन॥
पर संपति से प्रेम कर सदा बने तल्लीन।
करे कर्म बंधन सदा भोगे आप मलीन॥
पराधीन बन्धन पड्यो भोगे निज तज भाव।
परमें लीनन पाईये कर्ता नाहि राव॥
घट पट करे न जीव यह शेष द्रव्य से दूर।
निमित्त जीव उपयोग है कर्ता आप हजूर॥

ज्ञाना वरणी कर्म सबतेपुद्गल परिणाम।
कर्ता ज्ञानी न बने जानन देखद काम॥
भाव शुभाशुभ जो करे जिसका कर्ता जोहि।
तिन भावों से कर्म सज भोग भोगता होहि॥
अपने गुण पर्याय में उलट पलट नहि कोय।
मिले नहि पर द्रव्य में परको स्वामिन कोय॥
पुद्गल के गुण द्रव्य को करे जीव नहि कोय।
तिन दोनों को नहि करे कर्ता कैसे होय॥
निमित्त जीव का होत है कर्म बंध परिणाम।
कर्म की ये इस जीवने व्यवहारी नय काम॥
रणमें जोधा लड़त है लोक कहै नृप काज।
ऐसेही व्यवहार से जीव कर्म निजसाज॥
जिय पुद्गल उत्पन्न कर अवगुण गुण उपजाय।
ऐसे यह व्यवहार से द्रव्य और गुण राय॥
अविरत योग कषाय सब मिथ्यादर्शन चार।
ये आस्रव जिनवर कहे बंध करत शिर भार॥
तिनके भेद प्रपंच से तेरह ही गुण स्थान।
ये मिथ्यात्त्वसयोगी जिन तेरह भेद बखान॥
है पुद्गल परचय यह पुद्गल कर्म विभाग।
करते हैं सब कर्म को नहि भोगे जिय भाग॥

ये आस्रव गुण स्थान है कैसे करते कर्म।
नहीं जीव कर्ता इसे करते येही कर्म॥
जीव एक उपयोगमय तेसेही यह क्रोध।
एक रूप हो जाय फिर जीवा जीवन बोध॥
जोमाने यह जीव तब होत अजीव नियत्त।
आस्रव भी फिर एक हो कर्मादिक भीरत्त॥
उपयोगी है आतमा मोहादिक जड़ तत्त्व।
आस्रव मोह स्वरूप है कर्मादिक नो सत्त्व॥
अपनेही उपयोग में ठहरावो विश्राम।
आस्रव बंध सबेनशे पावे निजआराम॥
ऐसे समझे आतमा कर्म बंध नहि होय।
बंध दशा आवे नहीं सुख पावे जिय सोय॥
पुद्गल परिचय आपही कर्म रूप लेमान।
निज भावों से परिणवे कहते मिथ्या ज्ञान॥
पुद्गल द्रव्य स्वभाव से परिणत हुआ ही जान।
कर्म रूप होता सही अष्ट कर्म पहिचान॥
जीव बद्ध नहि कर्म से कभी न करते क्रोध।
यों माने तो जीव यह विनपरणामी बोध॥
परणामी नहि जीव सब क्रोधादिक ते होय।
नष्ट होय संसार भव सांख्य मानता होय॥

पुद्गल क्रोधी जीव को परिणावेयदि क्रोध।
विन परिणाम ते को कहो किम परिणमन क्रोध॥
आप आतमा क्रोध से परिणमताले मान।
परिणावेये क्रोध ही यह वच मिथ्या जान॥
कोप युक्त मय क्रोध कर मान सहित कर मान।
माया रच माया मई लोभ तहा कृत जान॥
जिया कर्ता जिस भाव को कर्ता कर्म निधान।
यह ज्ञानी के ज्ञान में अज्ञानी अज्ञान॥
मुग्ध भाव से मूढ है तेसे कर्ता कर्म।
ज्ञानी ज्ञान स्वभाव से कर्ता नहि है भर्म॥
ज्ञानी ज्ञान स्वभाव है निश्चय नय व्याख्यान।
इस कारण निज ज्ञान में ज्ञान भाव सव मान॥
यिही तरे अज्ञान में मूढ भाव स्फुरन्त।
अज्ञानी अज्ञान वस नीच भाव उपजन्त॥
जैसे भूषण हेम को पीत रंग उपजन्त।
लोहे के संकलवने अपने भाव रमन्त॥
ज्ञान अन्यथा होय जव उदयमान अज्ञान।
जव उदय अज्ञान है तत्व नही श्रधान॥
जिस के अविरत भाव जव उदय असं यतमान।
हीण भाव प्राणी करे उदय कषाय महान॥

जीवों के शुभ अशुभ प्रति जो चेष्टा उत्साह।
उदय योग्य मानो उसे ब्रता ब्रती की राह॥
आतम कारण मिलतही कर्म वर्गण छाय।
ज्ञानावरणी आदिले अष्ट भेद बन जाय॥
आतम निश्चय शुद्ध है कर्म वर्गणा हीन।
पुद्गल जीवनि भिन्न है आकर्षण लवलीन॥
जीव साथ पुद्गल चये कर्म रूप निजमान।
तेता के वे साथ है कर्म रूप पहिचान॥
ऐसे पुद्गल द्रव्य का जीवनिमित अज्ञान।
कर्म जुदा परिणाम है राग भाव मय मान॥
राग द्वेष परिणाम से कर्म कलंकित होय।
ते दोनों रागादिमय जीव कर्म मल होय॥
निश्चय नय रागादि से जीव करे परिणाम।
उदय कर्म कारण विना नही जीव परिणाम॥
स्पर्श बद्ध नही आतमा शुद्ध नये यह लक्ष।
स्पर्शबद्ध यह आतमा नय अशुद्ध यह पक्ष॥
जीव कर्म से बद्ध है नय अबद्ध परमान।
सर्व पक्ष से हीन है समय सार को मान॥
जो जाने निज भाव को सो ज्ञाता नय दोय।
पक्ष प्रबल पकडे नही पक्ष रहित शिव होय॥

सव पक्ष से रहित है कुन्द कुन्द भगवान।
पुण्य पाप पद रहित है शुद्ध आतमा ज्ञान ॥
ब्रह्म ज्ञान में लीन से आतम रूप लखाय।
मन वांछित फल फलत है सिधोशिव पुरजाय ॥
जो ध्यावे आतम मती दुविधा दिल की खोय।
तीन लोक के सकल जन चाकर बनते सोय ॥
सब देवन के देव है सदा पूजने योग्य।
निजानन्द पद वीय है प्रगट करो सब योग्य ॥
ज्ञानानन्द सुभाव है परभावों से भिन्न।
अपने ही आराध्य है ब्रह्म ज्ञान निज चिन्न ॥
रविशशि जोती मंद है दशोदिशा परकाश।
ऐसा आतम तेज है घट में करते वास ॥
भविजन कुमुद विकाश है जैसे पूरणचन्द।
ऐसे निज आतमगुणी शोभित है अरविन्द ॥
सुरन रमाने आतमा जिन आज्ञा अनुसार।
निज पुरुषारथ साध लो होय अमल अवतार ॥
पूरन ज्ञान प्रकाशकर बनोज गत के ईश।
सुजतिनार भरतार सव विद्या के ईश ॥
आतम ज्ञान विकाश कर मेटो जग संताप।
सुरनर जाने आण तुम आज्ञाशिर परधान ॥

ज्यो आतन को ध्या वसी तब सव जगत विकार।
सम्यग दर्शन शुद्ध कर भव दधि उतरे पार॥
निश्चय नय से साधिये वस्तु अपरंपार।
न्याय शास्त्र व्यवहार से वर्णन समझो सार।
यन्त्र मन्त्र नहि तन्त्र है यह निश्चल श्रद्धान।
सो सम्यग्दर्शन धरे आतम लीन निधान॥
गुण अनन्त पर्याय युत द्रव्य अनन्तानन्त।
युगपत जाने ज्ञान में ऐसा आतम सन्त॥
विश्व वन्ध दृढ़ तोड़ के विश्व शिखर सिरदार।
शिव लक्ष्मी भरतार वन करे निजानन्द कार॥
आतम ज्ञान निहार के मुनि सम समता साथ।
गणधर वत भाषण करो हो शिव लक्ष्मी नाथ॥
तीन लोक को नाथ है शरणागत प्रतिपाल।
अंतर मुख कर देखले कभी न खावे काल॥
स्वयं वुद्ध शंभु सुखी धर्म तीर्थ करतार।
समरण कर पावे सही आतम राम निहार॥
आतम गुण अमलान है पूरण शक्ति स्वभाव।
तीन लोक पूजत चरण ऐसा आतम राव॥
हे आतम तुम शरण हूं तुम समान नहि और।
तुम प्रभाव शिव पदल हूं नमन करों कर जोर॥

समय मात्र नहि भूल स्यो हृदये नाम रटन्त ।
सदा अनादि अन्त हो सिद्ध समान भजन्त ॥
नित्य उदय विन अस्त हो पूरण ब्रह्म स्वरूप ।
स्वामी हो निज राज को एही आत्म स्वरूप ॥
धर्म रूप जगदीश हों धर्म मूर्ति धर्मज्ञ ।
निज शरीर अवगाह में अचल थान मर्मज्ञ ॥
तिन के कछु न चाह है ऐसे ज्ञानी जीव ।
रमत निरंतर निज विषे समरसरसी सदीव ॥
भूतारथ जाने गये आस्त्रवादिसव तत्व ।
समकित जिस के शुद्ध हों निश्चय नयमय सत्व ॥
नित्य एक ज्ञायक गुणी निज स्वभाव निज मन्त्र ।
शुद्ध नय भूतार्थ है स्वयं सदा स्वतन्त्र ॥
घट में ज्ञान निधान है दाबत निधि निज आप ।
फट कत विषये तुषन को जपते नहि निज जाप ॥
बोधविर्जित लघुपनो तरुण पनो रसलीन ।
विरध भयो बल थक गयो अमृत तज विष पीन ॥
तन दृष्टि पलटी घटी पड़ो पड़ो चिल्लाय ।
जोवन भो को दे गयो हा हाकार मचाय ॥
वाजीगर बन्दर नचे गल में डारी डाल ।
करते खेला नाच रच खंजर दे दे ताल ॥

कठ पुतली का ख्याल में धागा शीश लगाय।
चटके अंगुली आप की त्यूं त्यूं नाचे जाय॥
कर्म जाल में पशरयो बीत्यो काल अनन्त।
औसर उत्तम आईया करो कर्म को अन्त॥
आतम पुद्गल भिन्न है समझ समालो सार।
आतम को पहिचान कर आस्रव भाव विडार॥
मिल जुल संगम हो रहा ज्यों तिल तेल मलान।
न्यारा रज से रतन इव भिन्न भिन्न कर मान॥
संपति चक्री इन्द्र की पाई बार अनेक।
आतम रस चाखो नहि फिरयो एक लो एक॥
पंचकरण के भोग में बीत्यो काल अनन्त।
सार वस्तु पायो नही आस्रव भाव रमन्त॥
सुन्दर भोजन मधुर जल षटरस अमल महान।
सेवत सेवत विरस है बंध पदार्थ जान॥
मलिन भाव संसार है तजन करो निज काज।
शुद्ध भाव धारण करो ज्यो पावो शिवराज॥
क्रोध भाव विभाव है सुख मय शान्ति स्वभाव।
माया मोह विकार तज सम दम समता भाव॥
निज स्वरूप में स्थिर रहो पर स्वरूप परिहार।
सकल पदाथ जगत के अपनु आप निहार॥

दर्शन ज्ञान अनन्त गुण शाश्वत आतम पिंड।
अपने रूप समार में पर स्वरूप नहि पिंड॥
आनन्दादि अन्त गुण चरण अनन्तानन्त।
वीर्य अनन्तानन्त है ऐसा आतम सन्त॥
जैसे मिश्री मिष्ट है तैसा आतम जोय।
परसे नहि अनुकूलता छवि छाजे निज सोय॥
शान्त छवी साधन करो समता सकल स्वभाव।
आस्रव भाव विहाय के निरख निजानन्द राव॥
एक महूरत माड़ के मान करो निज भाव।
कटते कर्म अनेक ही एक पलक लख राव॥
वीत्यो काल अनादिते अंतन आयो हाल।
चार गति चक्कर करे भरे कर्म जंजाल॥
देख देख ये तिर गये शूकर मर्कट सिंह।
सर्प स्वान गज भेक पशु अंजनादिनृ सिंह॥
असंयोगी आतमा शक्ति भरी अनन्त।
निरालंभ चिद्रूपहै ज्ञान पिंड नहि अन्त॥
नीर अनिल संयोगते होय उष्ण सव भाव।
तव वन्हि दूरे भये शीतल जल ही स्वभाव॥
अन्तरंग दृष्टि धरो निर को आतम माल।
वोध वीज अति हरित हो वृक्ष फलेततत्काल॥

संकट सहचिरकाल से अनु भूती छिटकाय।
पर परणति रत होत है येही आस्त्रव गाय॥
नाव जीवकी पाप वस जनम जलधि मझधार।
पत्थरते भारी भरी आस्त्रव बंध अपार॥
वीते काल विकल्प से कल्प अनन्ता नन्त।
आशा तृष्णा वढ रही बंध वढे नहि अन्त॥
पुद्गल कर्म अनादि से संयोगी है भर्म।
मालुम होते एक से यही आस्त्रव कर्म॥
नर नारक तिर्यंचसुर चारो गति आकार।
आस्त्रव कर्म निमित्त से आतम फंदा डार॥
एकें रूप अनन्त गुण आस्त्रव सव इक साथ।
होना दिक होते रहै रूप अनेक विख्यात॥
मोह फन्द के निमित से आस्त्रव तत्व अनेक।
व्यव साई दीखे सदा आतम पुद्गल एक॥
जिस दर्पण में अग्नि की ज्वाला दर्शन देत।
दर्पण मे अग्नि नही दर्पण स्वच्छ समेत॥
अग्नि के गुण अग्नि में दर्पण स्वच्छ स्वभाव।
लाल रंग ज्यो दर्शता एही ढाक स्वभाव॥
स्वपर प्रकाशक शक्ति है भारी वच भ्रम भेद।
ज्ञेयदशा दुविधा कही निजपर रूपा भेद॥

समझ समझ रेमानवा मोह दशा तज देय।
शुद्ध स्वभावी धर्म को अंगी कारकरेय॥
सुरसंपतिया शिव गति पावे धर्म प्रभाव।
आस्त्रव दूर भगाय के समरण करो स्वभाव॥
श्रद्धा ज्ञान चरित्रता गुण अनेक है भेद।
अनुक्रम द्वारा देखते दिखलाई है खेद॥
वर्तमान संयोगते आतम पांच प्रकार।
नय व्यवहार से ज्ञात है नाना रूप निहार॥
पुण्य पाप आस्त्रव अरु बंध अजीव ये पंच।
नास्ति रूप कहे आत्म का हेय रूप पर पंच॥
याते क्रिया कलाप को आस्त्रव तत्व स्वरूप।
त्याग करो अनभव धरो केवल ज्ञान स्वरूप॥
सम दृष्टि सम कितगहै वीत राग मय होय।
सुथिर चित्त अनु भव रचो निज पर परसो सोय॥
सुन आतम तू वात हम पर सो तोयन काज।
तेरा घट मे तू वसे तामे तेरा राज॥
जो निश्चय निर्मल सदा आदिमध्य अवसान।
सोचिद्रूपसदा रहो जयवन्तो भगवान॥
जग माहि जय वन्त है आतम तत्व महान।
स्पष्ट निराला अनुभवे शिव का रण यह जान।

चिदानन्द ध्रुव भाव है आस्त्रव कारण रूप।
अंतरंग पर काश है ज्ञायक मात्र स्वरूप॥
परके आश्रय रहित है पुण्य पाप पर भाव।
वे पर के कर्तृत्व नही रहित भोक्तृत्व स्वभाव॥
विकल्प पवृति में नहीं सदा प्रकट इक रूप।
अंतर ज्योतिस्वरूप है अनुभव के तद रूप॥
आप गिरे है मोह वस पर को देह गिराय।
ऐसी तृष्णा मोह वस भ्रमे चतुर गति काय॥
जो अनादि अज्ञान को एक समे कर दूर।
जानकार शक्ति करो केवल ज्ञान हजूर॥
श्री फल वकल युत भीतर रस भर पूर।
तेजसकर्म को अलग करो गुण भूर॥
अशुचि देह से नेह तज भज ते उत्तम भाव।
ताके सांची भावना आस्त्रव भाव अभाव॥
आस्त्रव पंच प्रकार है अविरत मिथ्या ज्ञान॥
क्रोध योग परमाद तज भज निज में विज्ञान॥
क्षमा भाव से क्रोध को सम भावों से मान।
सरल भाव माया हने लोभ तोषते हान॥
जीव एक पर्याय वहु धरतं स्वपरनिधान।
पर का तज कर निज भजो करो भव्य कल्यान॥

स्वातम से सब भिन्न है ऐसा जाने सन्त।
अंतर मुख है रम रहै शिव रमणी के कन्थ॥
राग रोष मद मार के आतम रूप निहार।
श्रेष्ठ समय इक आयगा कर्म भगे तत्तकार॥
लोका कार निहार के सिद्ध स्वरूप निहार।
अपने घट से आपको वारं बार विचार॥
आधिव्याधि जर मरण भय निद्रा चिन्ता खेद।
नाश होत है बेदना निज स्वरूप को भेद॥
दुर्लभ नर भव पाय के धरम रतन उर धार।
उत्तम औसर मिल गया करणी हो सो कार॥
निरा वाध निज गुण लिये आतम रुप अनूप।
स्वयं ज्योति विकाशते लोका लोक स्वरूप॥
आतम रूप अनूप है सुरनर केनहि गम्य।
निरा कार निर्लप है शुद्ध निरंजन रम्य॥
आतम सो परमातमा पर मातमनिज तत्व।
येही ज्ञाता ज्ञेय को भेद विचारो सत्व॥
सव अनन्त सुखका धनी सुख मय आत्मस्वभाव।
अविनाशी आनन्दघन तीन जगत दर्शाव॥
शुद्ध हमारा रूप है शोभित सिद्ध समान।
गुण अनन्त ज्ञायक गुणी सदानन्द गुणवान॥

कर्मन के संयोगसे पुद्गल परणित लीन।
निश्चय दृष्टि निहारते आतम राम अलीन॥
सन्तन जन मन मान्य है सज्जन वल्लभ साज।
मुनि जन मन में रमण है मेरे घट में राज॥
लक्षण शुद्ध अगम्य है इन्द्रिय विषयातीत।
वचन अगोचर आतमा सुर नर गावे गीत॥
काल अनन्तानन्त है आतम चेतन राव।
अविनाशी अव्यय सदा शुद्ध स्वभावी भाव॥
दुखदायक जगवास है सुख स्वपनमे नाहिं।
सुक वन में रहता सुखी रत्न पींजरे हांहि॥
चिदानन्द निज आतमा गाऊँ तुम गुण गान।
छिनक एक भूलो नही आप आप में मान॥
आप आपको आपकर अपने आतम काज।
आप ही से आपा विषें जाने वासर सांज॥
निजानन्द निज आदरो मन वच काय लगाय।
एक घड़ी आधी घड़ी अपने रूप रचाय॥
भैया निज पायें विना चौरासी लख योन।
भ्रमत फिरे संसार में साथी सगा न कोन॥
वीतराग वानी सुणो दया धर्म उपदेश।
शील रतन पालन करो सम्यग्दर्शन भेष॥

समता रस पीता रहो भव दधि शोषण हार ।
कर्म बंध छेदक सही आतम धर्म निहार ॥
अति निर्मल गुणाकार है साधो सन्त महान ।
आस्त्रव रोकन हार है पूरव कर्म जहान ॥
समता सुख में मगन है राग द्वेष नहिं लेश ।
निजानन्द में रमत है धरे दिगंबर भेष ॥
विषयकषायकर्षे नहीं निरावरण निर्मोह ।
इन्द्रिय मन को समनकर साधे स्वातम सोह ॥
सुख सागरकें स्नान में लगे रहें दिन रात ।
रोग शोक नहि रोष है सम सन्तोष निजात ॥
पूरण ज्ञानानन्दमय अजर अमर अमलान ।
ऐसा ही मैंहूँ अवे वीत राग परधान ॥
माया मिथ्या मोह को करो आज परिहार ।
सब जीवन से प्रेम है निश्चय नय व्यवहार ॥
जो पूरव कृत कर्म को फल भुंजेरति टार ।
शुद्धातम में मगन है गली जेवरी कार ॥
ज्ञानी कर्म दशा नहीं भोगे परम समाधि ।
मोक्ष दशा पावे सही निजानन्द आराधि ।
माया विषय कषायते फिर्यो अनादि चाल ।
शुद्धा तम अनुभव करो पावो अनुपम माल ॥

वस्तु व्यवस्था जान के रागादिक रस त्याग ।
ज्ञानवन्त ज्ञानीभनें कर्म बंध नहि भाग ॥
सत्तापरि मित वस्तु है आतम सत्ता माहिं ।
चेतन लक्षण आतमा आप आपके माहिं ॥
परसंगति पर भाव में बंधवढावत भार ।
ज्यो निज सत्ता रमण है सो ही धन दातार ॥
उपजे विनसे थिर रहै ये ही वस्तु स्वभाव ।
जो मरयादा वस्तु की सत्ता समझो साव ॥
विकलप त्यागी अनुभवी शुद्ध चेतना युक्त ।
ते साधु सम काल में होय कर्म सेमुक्त ॥
ज्ञान चरण तप शील व्रत उत्तम संयम सार ।
इनकी शोभा होत है सम्यग्दर्शन लार ॥
रंजित होते देह में तन चेतन नहि होय ।
भिन्न देह से ज्ञानमय आप आतमा जोय ॥
चितवन अनुपम अनन्त बल, शान्त भाव वैराग ।
आतम ज्ञान विकाशते, बोध निजातम जाग ॥
सम्यग्दर्शन के विना व्रत विधान नहि कोय ।
सामग्री वर्जित जहाँ, तहाँ भोजन किम होय ।
निज स्वरूप में मगन हो परस्वरूप परिहार ।
आस्रव बंध अभाव कर निज पर भेद निवार ॥

कठिन पाय कारज करो निजानन्द अवतार ।
दिक्षा धरो दिगंबरी श्री गुरु कहे पुकार ॥
वीत राग परणति रचो पावन परम पवित्र ।
भव समुद्र से तर सके ये ही वात विचित्र ॥
नशा जाल झलके सदा चाम मास मलखून ।
खान पान आधार से नहि होत है नून ॥
चमक दमक भारी बनी धन संपति सब जोग ।
जब आयू पूरण भई नीच गति को भोग ॥
चिदानन्द से कहत हूं तज विषयो से राग ।
होनहार तेरा कहा जैसे कानन आग ॥
यह तन स्थिर रहते नहीं जैसे जल की रेख ।
ऐते पर विषया रती ममता धरे अनेक ॥
नाम अनंत धरायकें भागवन्त धनवन्त ।
ममता माया छा गई समता कर गई अन्त ॥
एक एक तुम जन्म के दुग्ध वुन्द सज लेय ।
सर्व मगेवर समझत है वृथा मचावत धेय ॥
सकल उपाधी होत है भावन के आधार ।
भिन्न भिन्न परणति रचो शिक्षा उत्तम सार ॥
शुद्ध भाव साधन सही पावत नाहि मनोज्ञ ।
पुण्य योग करणी करे आस्रव संचित योग ॥

तस्कर तेरे ख्वार है लेहि रतन त्रय छीन।
संसारी ऐसी दशा भव भव देत नवीन॥
आलस भ्रमभय मोह मद कोप कथा कोतूक।
कृपण बुद्धि अज्ञानता चिन्ता निद्रा शोक॥
तस्कर तेरह भेद है करे धर्म की हान।
ताते इन को तजन कर पावे निज में ज्ञान॥
शुद्ध स्वभावी रूप है आनन्द रूप अखंड।
पुद्गल के संयोग ते दर्शे पुद्गल पिन्ड॥
चेतन तन में रम रहा अंग अंग शिर मोर।
चेतनता नाशे सदा भ्रम रूपी द्रुय चोर॥
शीष केश नख नाक है अधर दशन मुख कान।
कांख चरण जंघा कटी आँख शिरोमणि जान॥
हाथ पेर सब अंग है तामें करो विचार।
नाम रूप नहि जीव को आस्रव भाव विडार॥
अज्ञानी मानी महा लोचन दोय धरन्त।
खोवत विषय कषाय में आय जायगो अन्त॥
जोवटेर खग आईयो लोचन रहित मनुष्य।
ते से तुमने तन लयो विषयवासना बष्य॥
चिदानन्द आनन्द है आप आपमें आप।
स्वसंवेदन ज्ञान से जाणलेह तज ताप॥

देखन जाननहार है वर्त एक सुभाव।
ध्यान साध्य साधक सभी भेद कछु नहिराव॥
आतम रूप अनूप है मिश्री स्वाद न जाय।
अन्धमिष्ट बोले भला सपरस मिष्टलखाय॥
जैन वचन अमृत मई मिथ्या नाहि सुहाय।
चन्द्र कुमुद फूलेसही रवितेजी नहि खाय॥
जग षण दूषण रहित निर्मल अचल अनूप।
वार वार साधन करो चेतन रूप स्वरूप॥
निर्मल गगन समान है अनुकंपा गुणखान।
पुद्गल से ममता तजो भजो ब्रह्म भगवान॥
गुन अनन्त सुखपिंड है ऐसा चेतन राम।
होय विमुख तुम नहि लहो पावे नहि विश्राम॥
ध्यान धवल शुचि सलिल ते आस्रव मल नहि धोय।
पर द्रव्यन की चाह में वृथा जमारो खोय॥
कृमिकुल कलित शरीर है पुद्गल परिचय पिंड।
पुतला मल माटी भरा काल व्याल मुख खंड॥
काकादिक भक्षण करे चामनसा भुजदन्ड।
क्षणिक काल क्षय होयगे बुद बुदजलसम पन्ड॥
याते दिक्षा धारके त्याग परिग्रह भीर।
बन वासी कर पात्र में सह परी षह धीर॥

दुर्धरतप द्वादशधरो मोह वृक्ष कर चूर ।
आतम ज्ञान विकाश कर निजानन्द गुण भूर ॥
परम ब्रह्म परमातमा परम ज्ञान परमेश ।
परम निरंजन आतमा शिवशंकर निज भेश ॥
कृमि कुल कलित शरीर है नोय द्वार मलदेय ।
खग पक्षि का असन है कहा करत है नेह ॥
सम्यक उत्तम रत्न है धारो सब जन नेम ।
सकल कर्म क्षयकार है भव भवनाशक वेन ॥
आतम राम अनन्त भव धर धर तजे सनेह ।
परा वर्त वर्तन करे काल अनन्ते तेह ॥
कल्प अनन्ता काल से सुख दुख भोगे भोर ।
भूल मिटी निज पद लयो परमानन्द हलोर ॥
इस अपार संसार में सरन सहाई धर्म ।
विषय न विष के वीज को मतबोवे शठ कर्म ॥
तू स्वामी सब लोक को उत्तम तेरा नाम ।
इन विषयों के कारणो तुझे नही आराम ॥
आम न लागे आकके हीरा काँच न होय ।
सुख चाहे यह जीयरा विषय बासना खोय ॥
विष्मु शंकर बुद्ध है शुद्ध गुणागवसंत ।
ऐसा उत्तम आतमा कर्म फंद ते जंत ॥

पुद्गल ऊपर पटधरे रूप नदीसे कोय ॥
ज्ञाना वर्णी कर्म से जीव अज्ञानी होय ।
दर्शन वर्णी कर्म से जिय आवर्ण महान ॥
जसे दर्शन भूप को देखन दे दर्वान ।
ज्ञानावरणी नाशते केवल ज्ञान विकाश ॥
दर्शन वरणी हान से लोका लोक प्रकाश ॥
सुख दुख दाता जीव को निमत वेदनी धार ।
शहत मिली असिधार को चाटत दुःख अपार ॥
कर्म वेदनी वृक्ष है पुन्य पाप फल दोय ।
पुन्य पाप फल छोड़के आप रूप निज होय ॥
मदरा पानी पीय के सुध बुध सर्व नशाय ।
मोह अंध पागल बने उदय अवस्था आय ॥
अष्टा विंशति मोह को दूर करे गुणवान ।
सुख अनन्त सम्यक्त ते पावे निजगुण स्थान ॥
राज काठमें ठोकते नर नारी को अंग ।
तैसे थिति गति जीवको आय कर्म मातंग ॥
आयु कर्म भारी बली जान देत नहि कोय ।
अटल शुद्ध अवगाहना धारो आतम सोय ॥
चित्रकार चरचे सदा नाना चित्र स्वरूप ।
नाम कर्म तैसे करे चेतन को वहु रूप ॥

नाम कर्म बहु भेद है तथा एक सो तीन।
सबनाशक यह आतमा सदा शुद्ध गुण लीन ॥
ज्यो कुम्हारकल से करे छोटे मोट समेत।
गोत्र कर्म संयोग ते ऊंच नीच कुल लेत ॥
आतम शक्ति समाल के अगुरुलघुगुणलेय।
शुद्ध भये सर्वांग ते सिद्ध सिला निवशेय ॥
दर्वदिवावे भूपती भंडारी नहि देत।
अंतराय पंचक कहा वस्तु लाभ नहि लेत ॥
ऐसे जग की संपदा अन्तराय करलेत।
गुण अनन्त वलधार के पांचों नाश करेत ॥
बन्धु वर्ग सब त्याग के आस्रव भाव समेश।
केवल ज्ञान विकाश के देहू भव्य उपदेश ॥
अन्तर मूर्छा मारके शुद्ध भाव कर सन्त।
निज स्वरूपानन्द में रमण करो जग अन्त ॥
समकित सहज स्वभाव है आतम को शिव पन्थ।
याविन तप जप व्यर्थ है नहि पावे निज पन्थ ॥
हय गय रथ राजा सवे चलतनहि ऋजु पन्थ।
सरधानी साधु सही शिव लक्ष्मी के कन्थ ॥
वाह्य क्रियातू कोट कर सकल वृथा है सन्त।
याते आस्त्रव भाव को दूर करो गुण वन्त ॥

विषय वासना आसते मोह बृक्षसी चन्त ।
कनक धतूरा पान से पीत वर्ण दर्शन्त ॥
काललब्धि पाकत भई उत्तम कुल सवरीत ।
टिकट मिलन आशा भई त्यारी करलो मीत ॥
गणधर गोतम गोत है दिव्य ध्वनी वर्षन्त ।
सम्यग्दर्शन टिकट है शिव पुर जाना सन्त ॥
ज्ञान गार्ड मजबूत है चारित्र अंजन साथ ।
धीरज धर सन्यास में आतम जोति हात ॥
मन मन्त्री ठहरायदे आतम सत्व निवास ।
चली वेग की चाल से पर्वत जगत पलास ॥
गुण स्थानक चौदे चले पंचमगति आवास ।
जाकरके लोटे नही ऐमा सिद्ध निवास ॥
राग द्वेष दोरहित है मुनिपद फर्स्टकलास ।
श्रावक ब्रत सेकिन्ढ है सम कित थर्डा कास ॥
आस्त्रव आव मोह से पर से प्रेमी होय ।
कुशल क्षेम जातीर है जाय अधो गति सोय ॥
अभिलासा वर्ते जहां मोक्ष कभी नहि साथ ।
इसी लिये इच्छा तजो तात मात सुत गात ॥
परिग्रह फंदा में पसे सुख नहि आवत लेश ।
निशि वसर चिन्तारहै चौर अग्नि जल क्लेश ॥

याते परिग्रह त्याग के धरो दिगंबर भेष।
रत्न त्रय संपति लहो पावो पावन देश ॥
शान्त स्वभावी आतमा गुण अनन्त अविकार।
त्यागे सकल विभाव को पावे आतम सार॥
पावे परम सुभाव को ध्यावे अविचल ध्यान।
केवल ज्ञान प्रकाश कर मोक्ष सौख्य अम लान॥
शान्तात्मा समरसी ऋषी ध्यावे आतम ध्यान।
वज्र पात से नहि चगे पावे केवल ज्ञान॥
जो सुख चाहो आपणों मत दुख से भय भीत।
पापी मिथ्या चोर की संगति त्यागे प्रीत॥
वाक जाल वक वादतज आरत दुजो ध्यान।
खोदन फोरन ज्वलन तज पावो पद कल्यान॥
चलन हलन पीसन घसन बंधन रोधन पीर।
तेलमधुघृत घोल के डारे अगनि समीर॥
कफ कूड़ा मल मूत्र में दावदी ये जग जीव।
इत्यादिक विकल त्रय हिंसा करीसदीव॥
यन्त्र जालधीवरदई तीक्ष्ण सर संधान।
चर्म उपारन शस्त्र दे पाप पके घमसान॥
दंत उखाल पींजरा विषरस्सी हर ताल।
जीभ पूछ काटन करा महा पाप भर माल॥

मुझ मानव पर्याय में धन योवन मद लीन।
निंध काय करते रहे नर्क निवाश मलीन॥
ऐसे आस्त्रव भाव को त्याग करो सुख दाय।
आतमता त्यागो मती उत्तम पद निज पाय॥
समता समरस आदरो चेतन चित चमकाय,
वचन अमोलकमानिये जीवन को सुख दाय।
सत्य स्वरूपी आतमा रमते आप ही आप।
कर्म फंद काटन लगे चिदानन्द का जाप॥
कर्म भूमि मानुष गति उत्तम कुल अवतार।
आर्य देश जिन धर्म से संयमसाधोसार॥
दीरघ आयु पूर्णता तननिरोग अविकार।
देश काल स्वाधीनता धर्म रुचीकर सार॥
शास्त्र श्रवण उपदेशहित देता चारो दान।
धारण शक्ति धर्म की औसर उत्तम मान॥
सामग्रीसवही सही ज्ञान ध्यान धन पूर।
तृष्णा नागनी डस रही दुख पासी अति भूर॥
राग द्वेष मद मोह भय क्रोध लोभ छल मान।
इन आस्त्रव को छोड दे तव पावे कल्यान॥
इस मानवपर्याय में मोक्ष महल सो पान।
मिलता है दुर्लभ नहीं समझ सोचवल वान॥

मनुष जनम दुर्लभ मिल्यो उत्तम कुल संयोग।
धर्म ध्यान साधन करो रत्न त्रय निज भोग॥
रत्नत्रय उत्तम निधी आतम में धर धीर।
चिन्तामणि समपायके बन जावो तुम वीर॥
मोह चोर बहु फिरत है धरो तजेरी धीर।
साव चेत वरतो सदा पावो गुण गंभीर॥
महा पुण्य के उदय से पायो मानव रत्न।
व्यर्थ पशु सम खोतु हो भूल सुधारो यत्न॥
इस संसार असार में मानव कुल अवतार।
धर्म तरू सेवन करो महा मोक्ष फल सार॥
श्रेष्ट नावको छोड के उपल नाव मत लेहु।
भव सागर तिर वोछहै धर्म खेबटया सेहु॥
शुद्ध धर्म धारण करो उत्तम है उपदेश।
मोक्ष सौख्य करतार है आस्त्रव रहित बिशेष॥
दुर्लभ नर भव पाय के केई पुरुष महान।
मुक्ति रमा के पति भये में भी उनसम जान॥
सर्व सार में सार है समय सार अवतार।
जाने नहि इस सार को ताको जन्म असार॥
सत्य दिगंवर धर्म है भाष्यो श्री भगवान।
भव्य धर्म धारण करो महा शान्ति सुकदान॥

कोन किसी को देत है कोन किसी से लेय।
पूरव बांधे कर्म मल उदय आय रस देय॥
हेम सुनार की संगति भूषण बनते सोय।
कंचनपन मिटता नहि ओटत कंच न होय॥
ऐसे पुद्गल जीव मिल भये स्वरूप अनेक।
चेतन तानाशी नही ब्रह्म कहावत एक॥
पूरव संचित कर्म वस सुख दुख भुंजे जीव।
आतम ज्ञान विकाश से वरो मुक्ति के पीव॥
हंस चूंच से क्षीर जल अलग अलग हो जाय।
भेद ज्ञान की दृष्टि में जड़ चेतन दर्शाय॥
मृग तृष्णा वस भागतो भ्रमत फिरत भ्रम जोय।
तैसे मोही आतमा भ्रमत जगत में सोय॥
मोह मल्ल को मार कर इन्द्रिय जय कर बीर।
निश्चय नय धारक बनों सत्य जितेन्द्रिय धीर॥
पुरुषारथ के पारखी वीतराग पद धार।
निश्चय एक स्वभाव में भावो बारंबार॥
चिदानन्द नो कर्म नहि कर्म वर्ण व्यवहार।
भिन्न भिन्न सब समझ लो आतम कर उपकार॥
पुद्गल के फैलाव में धरे अनन्ते काय।
इसी लिये इस भाव का कर्ता चेतन राय॥

पर वस्तु की मान में कहीं नही विश्राम।
भिन्न भिन्न सब समझ लो चेतन चिन्मय राम॥
वचन अमोलक मानिये आगम के अनुकूल।
यह उत्तम उपदेश है जीवन का इक मूल॥
शुद्ध स्वभावी आतमा नित्य निरंजन ज्ञान।
अपनी भूल सुधार के पावे पद निर्वान॥
अपनापर को मानता पर को अपना मान।
संसारी होता हुआ आस्रव सजत महान॥
पर को पर जाने सहि निज में निज पहिचान।
भजे आप को आप ही नहि बने संतान॥
भाव शुभाशुभ जो भजे जिस का कर्ता जोहि।
तिन भावों से कर्म रज लगत आप के सोहि॥
ज्ञानी जन के सर्वदा ज्ञान भाव है संग।
अज्ञानी अज्ञान से राच रयो सब अंग॥
वीत राग वाणी भजो तजो कर्म अनुराग।
प्रेम करो निज भाव में पर संगत को त्याग।
स्व स्वरूप संपति गहो निज मारग में लाग।
रागी बांधे कर्म को मुंचति जीव विराग॥
जैसा जिन वर रूप है तैसा आत्म स्वरूप।
निरख परख कर आचरो पावे निज पद रूप॥

वीत राग विज्ञान मय ध्यावे निशि दिन ध्यान।
निज भावों में स्थिर रहै जब होवे कल्पान ॥
वीतराग परमार्थ से आप आप को जान।
ध्यावे निशि दिन ध्यान में पावे केवल ज्ञान ॥
उपयोगी निज स्थान में करे सदा विश्राम।
पुण्य पाप सब त्याग कर पावे निज पुर नाम ॥
कर्म वर्गणा त्याग कर निज पुर करे निवास।
सुखी रहे शाश्वत सदा नित्य निरंजन काश ॥
राग द्वेष मद मोह वस वर्तें विषय कषाय।
कर्म बंध संचित करे काल अनन्ता पाय ॥
आतम राग विभाव से कर्म बंध फंद जाय।
चारो गति में भ्रमण कर कहि न थिरता पाय ॥
उत्तम मानव पाय के वर्तें राग कषाय।
सो तुम समझो चतुर नर जल में लागी लाय ॥
रागा दिक भरपूर है कर्म बंध दृढ थाय।
भ्रमे चतुर्गतिबावलो चौरासी लख काय ॥
या ते नर भव पायके चेतो चतुर सुजान।
धर्म धुरंधर होय के पावो केवल ज्ञान ॥
जो जग में नहि जोत है कर्म बंध अवतार।
सुखी रहे शाश्वत सदा अजर अमर पदकार ॥

पर द्रव्यों से प्रेम कर भ्रम्यो चतुर्गति जन्त।
ताको फल नीचोलयो कहन सके नहि सन्त॥
वैर भाव सब ही तजो भजो क्षमा व्रत सार।
शुद्ध भाव संचित करो कर्म कलंक पखार॥
समुयक् रत्न त्रयविना गृह त्यागी किमहोय।
ध्यान योग्यता है नहि घर निवास क्यों खोय॥
रत्न त्रयको धारकर शम, यम, दम, मन, मेल।
ध्यान करे एकाग्रता धन्य मुनि शिव गेल॥
अतुल महा सुख कन्ड है निज कल्यान को वीज।
जनन जलधि शुभ पोत है पुराय तीर्थ निज चीज॥
दुरित तिमर को हंस है मोक्ष लक्षी को कन्थ।
मदन भुजग महा मन्त्र है ज्ञान राज शिव सन्त॥
विस व्याधि कों हरत है विषय सफर को जाल।
विश्व तत्व दर्शाव है मन मतंग वस ब्याल॥
मिथ्या दर्शन कोप तज दया क्षमा निज धार।
शील लीन संतोष भज कर्म शैल निरवार॥
ध्याता ध्यान लगाय के ध्येय और फल चार।
सूत्र रूप संक्षेप है निज में करो विचार॥
सम्यग्दर्शन साध के ज्ञान राज समझाय।
पूरण चारित आचरो ध्याना ध्यय न लगाय॥

सप्त तत्व षट द्रव्य को श्रद्धा आत्म विशेष।
उपाध्येय है आप के सम्यग्दर्शन भेष॥
यह श्रद्धा साची धरो धर हृदये संतोष।
विकलपभाव बिडारि के उत्तम पद सम्झ कोष॥
ज्ञान दर्श मय चेतना स्वातम धर्म महान।
दश लक्षण मय धर्म है रत्न त्रय निज मान॥

सम्यगदर्श शुद्ध कर ज्ञान विशेष बधाय।
चारित विधिवत् धारके ध्यावो ध्यान लगाय॥
तत्व रुचि सम्यक्त है तत्व समझ सु ज्ञान।
दया क्षमा चारित्र है रत्नत्रय पहिछान॥
पापारंभपलाय के भजो सदा निज आप।
उत्तम संपत तुम लहो फिर नहि भुगतो ताप॥

मौनी तपसी संयमी श्रुत पाठी ऋषिराज।
संगत के संसर्ग से बिगड़े निज तज लाज॥
भाव शुभा शुभ नहि तजे तीन सल्य नहि खोय।
मन थिरता पावे नहीं आतम हित किम होय॥
कर्म करे फल भोगवे जीव अनादि जगोय।
यह कथनी व्यवहार की वस्तु स्वरूप न कोय॥
सकल वस्तु जगमे वसे वस्तु वस्तु नहि मेल।
जगत जीव वस्तु कहे सो व्यवहारी खेल॥

द्रव्य कर्म कर्ता अलख यह व्यवहारी बात।
निश्चय नय जैसा दरब तैसा ता कागात॥
निजानन्द निज तत्व को आतम रूप निहार।
को इन किस का होत है विकलप भाव विडार॥
कपट झपट निज खेल के भ्रम्यो चतुर्गति ताप।
शुद्ध बुद्ध ज्ञानेशतू तजो सकल संताप॥
पर घर फिरत अनादि से निज घर आयो नाहि।
शुद्ध बुद्ध सर्वज्ञ तू तज पर घर निज आहि॥
चारगति निज जीव की मान रयो अज्ञान।
जड़ चेतन भी भिन्न है समझ सोच चित आन॥
केवल ज्ञान स्वभाव तुम दर्शन वीर्य अनन्त।
इस सवाय जे अन्य है सव संयोगी अन्त॥
आलंवन अपना करो ममता तज परसंग।
साम्यभाव साधन करो पावो अविचल अंग॥
आतम में समता धरो ध्यावो निज पद राज।
पर पद त्यागो मूलसे भूल सुधारो आज॥
काम क्रोध मद कपट तज शल्य लोभपरि हार।
भाव शुद्धि उत्तम भजो स्व समय सिरदार॥
निरखे परखे आतमा धरे निजातम ध्यान।
स्व समय रमता रहै भाव शुद्धि सो जान॥

भिन्न कर्म से आतमा गावे निजगुण गान ।
अल्पकाल में शुद्ध हो पावे गुण अमलान ॥
मे नहि पर काहू सदा पर नहि मेरा रूप ।
निश्चय कर के मेही हूँ पर है परही रूप ॥
रागद्वेष मद मोह से जगवासी जन होय ।
विविध बंध पैदा करे घूमे जगमें सोय ॥
जो ज्ञानी अज्ञान बस माने धर्म सराग ।
संसारी ते जीव है लहे चतुर्गति भाग ॥
मुनि अनुभवि को देख के आदर करे न कोय ।
विनय हीननिन्दाल है निज संयम व्रत खोय ॥
यंत्र तंत्र सब जानि के सब से तज सनेह ।
ज्ञायक जीव स्वभाव है समता सभ्क निज गेह ॥
मे नहि पर का परन मम मेही ज्ञान स्वरूप ।
ऐसा ध्यान लगाय के निरखे आतम रूप ॥
मनवाणी तन हूं नहीं उनका कारण नाहि ।
देहात्मक सब भिन्न है निजानन्द दर्शाहि ॥
परमाणु पुद्गल कही नहि में पुद्गल पिंड ।
स्कधरूप नहि आतमा न परमाण पिंड ॥
नहि तन कर्ता तन मई नहीरचाहै देह ।
दर्शन ज्ञान स्वरूप है निर्मल ज्ञानी येह ॥

देहादिक जड़ तत्व है चेतनतत्व विशाल।
देख निजातम तत्व को छोड़ सकल जंजाल॥
ज्यो तू जाने तत्व को पावेगा भव पार।
परको अपना मानसी घूमेंगा संसार॥
चेतन चिन्मय आतमा मगन होय दिन रेन।
संयम तप साधे सदा समता आवे चेन॥
शुद्ध भाव से शिवलहै शुभ भावन ते स्वर्ग।
अशुभ भाव संसार है चारों गति के वर्ग॥
आतम ज्ञान मलीनता करते पुण्य अपार।
नहि पावे निज आतमा नापेगा संसार॥
गुणस्थानक सब मार्गणा कथन किया व्यवहार।
निश्चय ज्ञानी आतमा परम पदारथ सार॥
परम ईष्ट दातार है निजानन्द भगवान।
स्वानुभव से गम्य है साधन करो समान॥
आतमरस लवलीन है समरण चित बन ध्यान।
पर पस्तु से भिन्न है पावे परम निधान॥
जिनवर जैसा आतमा भेद नहीं है भ्रात।
इस कारण तुम शिवलहो निश्चय नय से बात॥
जो जिन है सो आतमा भेद कछु है नाहिं।
आतम ज्ञान प्रभाव से पहुँच जाय शिवमांहि॥

येही सार सिद्धान्त है करे जगत का अन्त।
केवल ज्ञान स्वभाव से बनजाते हैं सन्त॥
केवल ज्ञान स्वभाव है आप आप में जान।
अनुभव से यह गम्य है साधन करो महान॥
रत्नत्रय युत आतमा उत्तम तीर्थ पवित्र।
आतम में सब गुण भरे साधन करो चरित्र॥
पांचो इन्द्रिय रोधसे मन बच तन कर शुद्ध।
एका की निज ज्ञान में रमण करो अविरुद्ध॥
अजर अमर परमातमा गुण गण निलय रूप।
सम्यग दृष्टि आतमा माने है निज रूप॥
अशुचि अपावन देह से भिन्न रूप चिद्रुप।
सकल शास्त्र पाठीलहै पाता रूप अनूप॥
सूक्ष्म लोभ पलायते क्षायक श्रेणी स्थान।
वही सूक्ष्म चरण है अक्षय सुख भुगतान॥
सुगुन रत्न की राश है अगम अथाह महान।
मुनि जन ध्यावे भाव से पावे पद निर्वाण॥
ज्ञान जोति प्रति भास में रागादिक मल नाहिं।
विशद अनुपम भाषते दीप्त ज्योति जग छाहिं॥
मुनि महन्त स्नातक कहै निजानन्द निर्दोष।
दिप्त रूप निज रूप है परमातम पद पोष॥

निरावरण निज ज्ञान में संशय बिभ्रम नाहिं।
सम्यक् ज्ञान विकाशते वस्तु यथारथ आहिं॥
तुम शिवशंकर विष्णु हो बुद्ध शुद्ध निज रूप।
इन्द्रादिक पूजे चरण परमातम पद भूप॥
अर्हत् सिद्धाचार्य पद उपाध्याय मुनि रूप।
आराधोव्यबहार से निश्चय आतम रूप॥
जग से मोह निवार के राग द्वेष रस छार।
दुद्धर स्वातम ध्यान कर च्यार घातिया जार॥
दर्शन ज्ञान अनन्त वल सुख चतुष्टय रूप।
दे उपदेश कल्यान कर सिद्ध चक्र चिद्रूप॥
राग द्वेष मद मोह से जीव जोनि में जोय।
विवध बंध पैदा करे इस कारण क्षय होय॥
जो जन्मे सो मरण है योवन जरा प्रमाण।
लक्ष्मी चञ्चल चलत है क्षण बंगुर वखाण॥
एक जीव पर्याय बह धारे स्वपर निधान।
पर तजकर निज को भजे तव होवे कल्यान॥
वास यह संसार का महा कष्ट का मूल।
ध्यावो अपणी आतमा मट जावे जग शूल॥
देव नहि है तीर्थ में नहि मंदिर में मान।
तन मंदिर में देव है यह निश्चय कर जान।

तन मंदिर को त्याग कर नर देखे कहिं और।
देख हँसी आवे सवे घर घर भिक्षा सौर॥
देव नहीं है तीर्थ में चित्र मूर्त्ति पाषाण।
मन मंदिर में जिन वसे समझ मित्र यह ताण॥
देव तीर्थ मंदिर वसे कहते हैं अज्ञान।
विरले ज्ञानी जानते निश्चय आतम ज्ञान॥
जरा मरण से डरत है तो कर आतम ध्यान।
अजरा मरपद पाय के करो सकल कल्यान॥
नरक वासफीको परे जानो मलिन शरीर।
कर शुद्धातम भावना शीघ्र लहो भव तीर॥
जगत जाल जंजाल में पसा रहा अज्ञान।
इस कारण यह आतमा पावे नहि कल्यान॥
मन मंदिर में मुक्त हो तो मत पूछे वात।
राग यिरोध निवार कर सहज रूप निज ज्ञात॥
जिय पुद्गल दोनो अलग सकल भिन्न व्यवहार।
पुद्गल से आसातजो शीघ्र मिटे संसार॥
भिन्न भिन्न समझे नही यह संसारी जीव।
नहि निकसे संसार में जनम मरण सदीव॥
रत्न दीप रवि दग्धदधि घी पत्थर तम हेम।
स्फटि करजत जल अगनि में आतमता नहि खेम॥

नित्य निरंजन ज्ञानमय परमानन्द प्रभाव ।
चिदानन्द जिन शान्त शिव अजर अमर उमराव ।
शुद्ध ज्ञानमय आतमा सकल कर्म कर क्षीण ।
जैसा जिनवर देव है तेसा ही लख लीन ॥
इस असार संसार में वीत्यो काल अनन्त ।
भ्रमत भ्रमत सुख ना लयो पायो दुःख अनन्त ॥
देह भिन्न निज ज्ञानमय देखो आतम राम ।
वही ब्रह्म स्वरूप है नरख परख अभिराम ॥
निर्मल ज्ञान पवित्र है वसे शिवालय स्थान ।
तेसा ब्रह्म शरीर में भेद भाव नहि जान ॥
शास्त्रों वेद पुराण में गाया गया है गीत ।
सो वह निवसे देह में भेद ज्ञान से चीत ॥
किसी दृष्टि से सर्वगत किसी दृष्टि जड़ खेद ।
मुनि ज्ञानी अरु मूर्ख में अंतर भारी भेद ॥
निश्चयनय यों कहत है दर्शन ज्ञान स्वरूप ।
कर्म रहित निज आतमा केवल ज्ञान स्वरूप ॥
रत्नत्रय का पारखी उसका लक्षण येह ।
परवस्तु से पर रहै निजानन्द में स्नेह ॥
पर वस्तु से प्रेमकर माने आप महन्त ।
नहि जाने निज आतमा जगवासी शठ सन्त ॥

आतमपद को पायके मुनि जन माने मोद।
सो सुख नाहि इन्द्र के नहि नागेन्द्र प्रमोद ॥
निज दर्शन से सुख बढ़े सो सिद्धन के होय।
सो सुख साधु साधते अंत क्रिया में सोय ॥
बद्दल बिन नभ में रवि विमल स्वच्च दर्श सन्त।
निर्मल मन जब स्वच्छ है आतम आप, रमन्त ॥
जो सर वर मेंहं सरत तैसा तुझे विकाश।
निर्मल है परिणाम जब आतम तत्व निवाश ॥
आतम मंदिर शैल पर लेप चित्र में नाहिं।
नित्य निरंजन ज्ञानघन है तन घट के माहिं ॥
धर्म अर्थ सब द्वन्द में आतमरत शिर मोर।
कहते गणधर ज्ञान से निज से निज में जोर ॥
तीन भुवन मंदिर विषें आतम रूप अनूप।
कर्म कलंक विमुक्त कर पहुंचो शिव पुरभूप ॥
मृगनेनी का ख्याल में विषय वासना ध्यान।
मोह जाल में पस रहा कैसे होवे ज्ञान ॥
जैसे मेले काच में कंचन झलके नाहिं।
राग रंग रंजित रहै आतम दर्शन नाहिं ॥
एक म्यान तलवार दो बने नहि यहकाम।
भोग भोग नामोक्ष पद कैसे होवे राम ॥

रत्नत्रय है श्रेष्ठ गुण धारे आतम माम ।
आराधक है मोक्ष का ध्यावे निज गुण राम ॥
पूव कम को क्षय करे आगत आवे नाहिं ।
सकल परिग्रह परिहरे ऐसा न्याय रमाहिं ॥
रत्नत्रय का पारखी धरते है सम भाव ।
यासे होत विकल्प विन पावो आत्म स्वभाव ॥
ज्यो स्वरूप समझ्या विना पायो दुःख अपार ।
समझ समझरे आतमा सद्गुरु कहै पुकार ॥
छहों द्रव्य सव शुद्ध है कहते गणधर सूर ।
आदि अंत से रहित है जिनसे जग भरपूर ॥
जीव द्रव्य चेतन कहा पंच अचेतन कास ।
पुद्गल धर्म अधर्म है गगन काल जग वास ॥
द्रव्य यथारथ जान कर करो शुद्ध श्रद्धान ।
अविचल दर्शन शुद्ध है वही आतम ज्ञान ॥
जड़ जीवन संसार में है अनादि संयोग ।
दुख पावे मिथ्या त्वसे कर्म योग सव रोग ॥
पुद्गल है इक मूर्तियुत पांच अमूरतिमान ।
सकल द्रव्य जिसमें वसे वह आकाश वखान ॥
वर्तन लक्षण कालहै रत्न राश ज्यो भिन्न ।
इतरहि निजनिज देशमें जान अखंडित चिन्न ॥

पुद्गल चेतन शेष तज गमना गमन विहीन ।
ये ही वस्तु स्वरूप है समझो निज गुण लीन ॥
असंख्यात परदेश है धर्मा धर्म सजीव ।
नभ अनन्त परदेश है पुद्गल बहु विधि लीव ॥
छहों द्रव्य जो कह गये लोका काशनिवास ।
एक क्षेत्र रहते सदा निज निज गुण में वास ॥
कलि कारण है जीव के पर द्रव्यों का भाव ।
यदि तज पर द्रव्य को निज को करो निभाव ॥
भलिभाति व्यवहार को ज्ञाता बनो विलेष ।
ज्ञान चरण धारण करो जिससे बिगड़े भेष ॥
तिष्टे तेसी वस्तु है ऐसा उसको मान ।
वही उत्तम ज्ञान है वही सम कितवान ॥
अरहन्तादि उपासना मोह उदय से होय ।
स्वयं ज्ञान मे रम रहो मोह कर्म को खोय ॥
निज सुख सम पर सुख नही पर से हानी होय ।
याते सुख अपने विषें परखुझाल सम सोय ॥
चारगती दुख से भरी भ्रमत अन्त नहि आय ।
मानव पद उत्तम लिया शिव सुख साधो साय ॥
त्याग शिघ्र वहिरात्म को अन्तर आतम होय ।
परमातम आराध से परमातम पद होय ॥

जंगल में मंगल करो निर्मल मन निज वास।
अपने आप स्वभाव में भव भव दुख का नाश॥
निर्भय पद प्रापत करो आतम राम निवाश॥
विमल ध्यान में मगन हो कर्म कलंक विनाश॥
महा शुद्ध यह आतमा अचल अनाकुल रूप।
निज शरीर अवगाह में शोभित शिव सम रूप॥
निर आकुल निर्भय सदा निरावरण निज ज्ञान।
निजआनन्द अभेद है ऐसा आतम जान॥
ज्ञान ध्यान निज एकता सुथिर रहै निज माहि।
निज पद में लवलीन कर जगत वास फिर नाहि॥
देवशास्त्र गुरु भक्ति से होते पुन्य महान।
स्वर्ग संपदा भोग के पावे पद निर्वाण॥
स्वानुभव वालक लहै वरष आठ को जान।
मानव कोटि पूर्व तक पावत निज पद भान॥
केवल ज्ञानी ज्ञानमय जनम मरण से हीन।
गुण प्रदेद उन सवनि के एक वरावर चीन॥
जीवों का लक्षण लहा दर्शन ज्ञान प्रभाव।
ये ही निश्चय मान लो जिय सव एक स्वभाव॥
राग दोष दो दूर कर अपनावो निज बीज।
माने सर्व समानता शिव कन्या तुम रीझ॥

समता भाव समानता जाणे सब समान।
जीवों का लक्षण लिखा जिनमें दर्शन ज्ञान॥
मित्र शत्रु को सम गिने अपने और परान।
एक भाव भावत सदा ताके आतम ज्ञान॥
पुद्गल रचना राचके उत्तम समझ शरीर।
देह भिन्न जो ज्ञान है वही आतम नीर॥
ज्ञान स्वरूपी आतमा उत्तम सुख को कोश।
निजाधीन सुख ऊपजे उसमें कर संतोष॥
धर्म मूर्ति धरमातमा धर्म तीर्थ करतार।
धरम धुरंधर परम गुरु धर्म आतमा सार॥
आकुलता सबही मटी समता शासन सार।
रत्नत्रय धन साथ है पहुंच जाय शिव द्वार॥
कर्म भूमि मानव गति उत्तम कुल अण गार।
तप संयम व्रत तुम लीयो करलो बेड़ा पार॥
गिरी गुहा सुन्दर भवन बाधा नहि जहां काय।
दशों दशामय वस्त्र है ध्यान लीन निज लोय॥
गगन सवारी सार के तिष्टो उत्तम स्थान।
काल अनन्तानन्त तक भोगो सुख अमलान॥
मोह मान मद लोभरत मिथ्या मत अज्ञान।
यह अनादि उपयोग में अविरत संज्ञा स्थान॥

ज्ञायकहै इक आतमा शुद्धनय भूतार्थ ।
स्वतन्त्र संपूर्ण है पावन रूप यथार्थ ॥
अद्‌भुत आतम तत्व है समय सार व्याख्यान ।
निज परके परमार्थते भेद भिन्न निज मान ॥
चेतवन्त अनन्त गुण आतम शक्ति अनन्त ।
निजानन्द चिद्रूप है अलख अखंडित वन्त ॥
परस बरण रस गंध नहि नहि जगत से राग ।
चिदानन्द चिद्रूप है आतम ज्ञान विराग ॥
वार वार समरण करो समय सार सुख कार ।
आतम जोत प्रकाशते पहुचों शिव पुर द्वार ॥

(अथ पुण्य पापाधिकार)

जय जिन सुर धुनि करत है मन में माने मोद ।
निजपद जो नर नमत है पावे उत्तम बोध ॥
निरा बाध निज गुण महा चिदानन्द चिद्रूप ।
ज्योती रूप अनूप है लोका लोक स्वरूप ॥
जगन्नाथ जगदीश है पुरुषोत्तम परधान ।
सर्व शिरोमणि आतमा ध्यावत निजकल्याण ॥
परमानन्द अभेद है ध्यावत सुर नर वृन्द ।
शुद्ध भाव साधन करो लोक शिखर शोभन्त ॥

अतुल वीय आतम धरे करे कर्म चकचूर।
ऐसा आतम राम है समरण है गुणभूर ॥
सर्वोत्तम अतिश्रेष्ठ है पूरण प्रभा प्रकाश।
ज्ञानानन्द स्वभाव है करते निज घट वास ॥
तन प्रदेश में वसत है परमातम पद कास।
शुद्ध बोध आधार है निजानन्द निज वास ॥
गुण पर्याय अनन्त युत वास स्वयं परदेश।
स्वयं काल स्वक्षेत्र है स्वयं स्वभाव विशेष ॥
सब विद्या के बीज है बल अनन्त सुख स्थान।
पर निमित्त से जीव का रागादिक परिणाम ॥
अतुल प्रभा धारक यह विश्व नाथ भगवान।
पाप सघन बन दहन दब आतम राम निधान ॥
आतम राम निहारते होते है आनन्द।
अचल रूप निजराज है भाव अभावी द्वन्द ॥
अचल अमूरत आतमा अजर अमर पद लार।
ज्ञान ज्योति जाग्रत रहै निजानन्द निज सार ॥
ज्ञान सहित वैराग्य रस पान करे सम काल।
ज्यो लोचन न्यारे रहें देखे सब जग हाल ॥
भेद ज्ञान ज्योती विषें परम ज्योति परकाश।
जबतक शिव पदना लहै तबल्यां निज पदवास ॥

जगत जाल जंजाल है पुण्य पाप दो रूप।
वीत्यो काल अनादि से मिथ्या अध तद रूप॥
जो कारण संसार को कर्म शुभा शुभ शील।
अशुभ कर्म जंजाल है सो किम होय सुशील॥
हेम लोह की बेड़ियां भूषण शहित शरीर।
कर्म वेदनी दोय है सात असाता वीर॥
अशुभ कर्म कुशील है शुभनामक सुशील।
कारण है संसार का शुद्ध शील किम मील॥
दोनों कर्म खलील है त्याग रूप निज धाम।
प्राण हरण स्वाधीनता बन्ध बंधे वसु नाम॥
जैसे जोगी सन्त जन देखे निघ जन रीत।
संगति त्यागे तुरतही फेर करे नहि प्रीत॥
ऐसे ही सब कर्म को जग में निंघत जान।
संगत जे वह सर्वदा अपनो पद पहिचान।
बांधे रागी राग से मुँचे जीव विराग।
वीतराग वाणी यह तजो कर्म अनुराग॥
प्रेम करो निज भाव में पर संगत परिहार।
निजानन्द संपति गहो निज मारग में लार॥
जैसा है अरहन्त जिन तैसा आतम रूप।
नरख परख कर आचरो पावो निज पद रूप॥

वीतराग परमार्थ ते जिन मुनि शुद्ध समान।
निज भावों में स्थिर रहै सो पावे निर्वान॥
परमारथ में स्थिर नहीं व्रत तप संयम लीन।
येही है अज्ञान तप भ्रमे चतुर्गति दीन॥
व्रत विधान सब साधते संयम वृषतपधार।
दर्श ज्ञान परमार्थ विन तिरे नहीं संसार॥
परमारथ को त्याग कर पुण्य चहे मति हीण।
ग्रीसम घाम निवारने अग्नि तपत है हीण॥
तत्व रुचिसम कितल है उनका अधिगम ज्ञान।
राग त्याग चारित्र है येही मोक्ष महान॥
परिवर्तन व्यवहार का विद्वत् वर्ते कोय।
विशंवाद बातां करे कर्मक्षय नहि होय॥
तज संसार असार को निश्चय नय ले पक्ष।
मुनि पद में निज स्थिर रहै करे कर्म क्षय दक्ष॥
जैसे पट में स्वेत पन मैल मिले दब जाय।
ऐसे ही मिथ्या त्वसे उत्तम गुण रस जाय।
पूरवही व्याख्यान से समझ लीजिये भ्रात।
तैसे सब ज्ञानीभने सम्यक् ज्ञान विलात॥
जिम सूतका श्वेत पन लगे कलंक विलाय।
यो कषाय के तेज से चारित भाव नशाय॥

आत्म ज्ञानधारी यती कर्म वर्गणालीन।
भ्रमे जीव संसार में पुद्‌गल अर्द्ध नवीन॥
आत्म स्वभावी आतमा जानन देखन हार।
तोभी संचित कर्म वस सर्व वस्तु नहि पार॥
समकितरतन विराधना येही है महा पाप।
सत्तर कोड़ा कोड़ि को भ्रमे जगत विल्लाप॥
आच्छादित है ज्ञान गुण सो अज्ञानी मान।
जीव उदय अज्ञान से भ्रमे लोक सबस्थान॥
चरण हरण महा को पहै राग द्वेष मद मूल।
जीव रमे अविरत जवे आप आपनी भूल॥
पुण्य पाप इक वेल है आस्रव को इक मूल।
जो इन की संगति लहै तिन के शिरपर धूल॥
वीत्यो काल अनादि से लेमिथ्या अघभार।
तप जप संयम नालियो सम्यग दर्शन लार॥
समिकित विनतरता नहीं कोटि यतन कर जीव।
बाध लाभ होता नही भवबाहि सदीव॥
अपनी करनी कर चुको करनी वाले लार।
भेद ज्ञान धन धार के अपनों करो सुधार॥
धर्म विना पावे नहीं उदर पुरण नाज।
याते धारो धर्म को पावे शिव पुर राज॥

भ्रमत फिर्यो संसार में कही न समता होय।
एकाकी निश्चल रहो ध्यावो निज पद सोय॥
लखचौरासी योनि में श्रावक कुल सिरदार।
परम दिगंबर पद गहो पावो भव दधि पार॥
अन्तर आँखो खोलके संपति समता सार।
अलखनिरंजन घट विषें ध्यान धारणा धार॥
गुण ज्ञानी ज्ञानी सही कर्म लेप नहि रेक।
होत कृतारथ आतमा निरखे केवल एक॥
विषय वासना नाशके साधु समाधि धरंत।
परमारथ पद पायके लोका लोक लखंत॥
मुनिमारग समसाध के लखे आतमा सन्त।
मोक्ष धरामें जायके भोगे भोग अनन्त॥
केवल दर्शन ज्ञान सुख और वीर्य अनन्त।
परमातम परमेश पद हरिहर ब्रह्मा सन्त॥
जो तुम भव दुख से डरो अरुछावो कल्याण।
तो अपने में आपको ध्यान धरो मतिमान॥
जो परमारथ में रमे भजे न विषय कषाय।
मोह मल्ल उनका मरे जग स्वामी कहलाय॥
हित कारक हैं सर्वके शास्वत शुद्ध स्वभाव।
जन्म जरामरणो नहीं सिद्ध अवस्थाराव॥

दिव्य ग्यान की झलक है जाने लोका लोक।
निश्चय परमानन्द मब सब जन देते ढोक॥
ध्यान योग्य निज आतमा दर्शन ज्ञान स्वभाव।
निश्चय नय साधो सदा उत्तम पद दर्शाव॥

जो नहि जाने आतमा महामूर्ख पररूप।
ब्रत तपसंयम व्यर्थ है पड़े भवो दधिकूप॥
स्वर्ग मिले शुभ पुण्य से नरक पाप संताप।
द्वंद छोड़ भज आप को पावे शिव पुर आप॥
सप्त तत्व नव अर्थ सब जिन भाषित व्यवहार।
निश्चय जप निज आतमा होय भवार्णवपार॥

व्यवहारी सारी क्रिया संयम तप जप दान।
निश्चय आतम ध्यान है शिवकारण निजमान॥
दृगधारी संयम धरे सुद्धातम संयुक्त।
ज्ञान ध्यान तप लीन है ते पावे भव मुक्त॥

सकल जाल जंजाल तज शिव मारग स्थिरहोय।
कर्म घातिया घात कर आतम अरहत होय॥
ज्ञान विलक्षण शुद्धमन सत्य स्वरूप स्वभाव।
जो आतम को ध्यावते पावे मोक्ष प्रभाव॥
ज्ञायक भाव जहाँ रहै तहाँ न आवे कर्म।
याते ज्ञान विराग से साधो आतम धर्म॥

यथा अंध के खंदपर चढ़े चतुर पंगु कोय ।
याग़े दृग वाके चरण चले जात मिल दोय ॥
जहाँ ज्ञान विराग्य है तहाँ मोक्ष मगहोय ।
वह जाने पद को मरम वह पद में स्थिर होय ॥
ज्ञान जीव के जाग्रता कर्म जीव के शूल ।
ज्ञान मोक्ष अंकूर है कर्म जगत को मूल ॥
ज्ञान चेतना जागते विकसत केवल ज्ञान ।
कर्म चेतना के विषे कर्म बंध बल वान ॥
जीव अनादि स्वरूप है कर्म रहित अविकार ।
अविनाशी असरणसदा आतम राम निहार ॥
अवलंबन लो आपको चिदविलास चिद्रूप ।
शुद्ध द्रव्य अनुभव करो शुद्ध दृष्टि तद रूप ॥
नय प्रमाण जिन सूत्र से वस्तु रूप लखेह ।
होय मोहक्षयनियम से केवल ज्ञानी तेह ॥
अज्ञानी जिस कर्म को क्षय करे भव कोट ।
उसको ज्ञानी छिनक में चला देत है चोट ॥
अंसमात्र ममता रहै पुद्गल परिचय मान ।
सर्व शास्त्रपाठी भये नहि पावे निज ज्ञान ॥
शुद्ध भाव से मोक्ष है आस्रव से जग वास ।
आस्रव भाव विसार के परमातम रततास ॥

देव शास्त्र गुरुतीन की भक्ति भाव विशाल ।
तेपावे अमरेशयद भोगे भोग रसाल ॥
पाप पंक सेरहित है सहित शुद्ध शुभ लोग ।
गुण समूह सेवन करे स्वर्ग संपदा भोग ॥
श्रेष्ठ पात्र को देखते आनद वर्षे सार ।
हाथ जोड आदर करे भरे पुण्य भंडार ॥
अनुभव युतशुद्धातमा मोह रहित वलवान ।
जगत जाल के फन्द को काट गये निर्वाण ॥
अण गारी योगी यती श्रमण संयमी मान ।
इन की संगत नित करो मन का मैल मिटान ॥
धर्म भावना आदरो रत्न त्रय गुण गाय ।
निर्मल पद को पाय के सीधो शिवपुर जाय ॥
विष दृश मिथ्या दृष्टि है पथ च्युत व्यसनीवान ।
कपटी खल झपटी महा संगत जो विद्वान ॥
तप संयम शुभ ध्यान धर मूलोत्तर गुण लीन ।
सम्यग दर्शन साथले आतमता लव लीन ॥
निर अम्बर ऋषि तापसीं वैरागी शिव पन्थ ।
नगन दिगंवरतन करो परम हंस निर्ग्रन्थ ॥
परम शान्त मुद्रा धणी आतम ज्ञान विशेष ।
निजानन्द में रमण कर पावे पद परमेश ॥

बहुत किये क्या होत है शुद्ध ज्ञान अमलान ।
वार वार समरण करो पावो पद निर्वाण ॥
शत्रु मित्र तन धन सवेराग रोस सव वंश ॥
नहि जीव के ध्रुवरहे उपयोगी निज हंस ॥
स्वयं सूर्य सो गगन मे चमक दमक उद्योत ।
शुद्ध जीव संसार में ज्ञान वीर्य सुख जोत ॥
संयम साधन नियम मे रह सदा लयलीन ।
ध्यान धरे निज आतमा करे कर्म मलछीन ॥
देव शास्त्र गुरु भक्ति युत दान शील व्रत लीन ।
ध्यान पठन अनसन करे शुभ उपयोगी चीन ॥
शुभ उपयोगी आतमा खग सुर नर में होय ।
विषय वासना रत रहे पुण्य योग फल जोय ॥
जैसी करणी आचरे तैसा ही फल होय ।
देह वेदना यस महा भोगे सुन्दर भोग ॥
इन्द्र नरद्र खगेन्द्र सव भोगे शुभ फल शर्म ।
देह नेह अपणाय के विस जोयनिज धर्म ॥
शुभ उपयोगी आतमा पुण्य पुंज प्रति भास ।
फिर तृष्णा वर्द्धन करे विषय भोग जगदास ॥
पराधीन वाधा सहै विषय क्षणिकबंधान ।
जो विषयो से सधत है ते सुख दुःख समान ॥

पुण्य पदारथ स्वर्ग है नर को लेता पाप।
इन दोनों को त्यागकर सेवो शिव पद आप॥
द्वादशांग वाणी भजो निजानन्द अनु राग।
ध्याता आतमराम है मोह नींद अब जाग॥
आतम को साधे विना संयम व्रत चउदान।
पुण्य पदारथ व्यर्थ है यो भाषे भगवान॥
संयम व्रत साधे सदा निर्मल आतम ज्ञान।
वह पाते है परम पद शुद्ध योग अमलान॥
अनागार यति धर्म है देखत है निज रूप।
तो समझो भव अल्प है पावे परम अनूप॥
जीव अकेला आत है जाते है तद रूप।
ज्ञान मई निज आतमा सदा शान्त स्वरूप॥
पाप पुण्य वेड़ी बनी लोहा कंचन अंग।
दोनों त्यागो मित्र जी वन्धन है दृढ संग॥
विरले श्रद्धा वन्त है विरले निरखे ब्रह्म।
विरले पावे लब्धिनव विरले समझे धर्म।
इन्द्र चन्द्र सव ढूंढहै नहि शरणो दातार।
निजानन्द शरणो सहो भववन त्यागे सार॥
विषय महा दुखदान है त्यागे सन्तमहन्त।
कर्म काट शिव पुर वसे जय जय जय भगवन्त॥

ज्ञानानन्द स्वभाव है पर पदार्थ से भिन्न।
एही उत्तम भावना यही आतम चिन्न ॥
ऊर्ध अधोमध्य लोक में परपदार्थ हमनाहि।
एही उत्तम भावना अक्षय सुख जा माहि ॥
तन से भिन्न अतेन्द्रिय आतम राम स्वरूप।
ज्ञान ध्यान में झलकते अबिनश्वर निज रूप ।
शिव स्वरूप अविचल कि यो रहते काल अनन्त।
सुख साग रमें मगन है वीते काल अनन्त ॥
ज्ञाता दृष्टा आतमा धनी नाथ जगदीश।
परमब्रह्म पूरण सुखी सवजग जन के ईश ॥
सुरपति नरपति खग पती सेवे चन्द्र दिनेश।
स्तुति गाता हूं भक्ति से मेटो सकल कलेश ॥
सूक्ष्म शुद्ध स्वभाव है न कोई आधार ।
इन्द्र मुनि अहमिन्द्र सव ध्यावे निज आधार ॥
कर्मावर्ण विनाश के निरावाद पहिचान ।
अक्षातीत अनक्ष लख परमानन्द महान ॥
संघ रहो या मत रहो भंग रहित सम भाव।
अनुभव रस पीवत रहो तज के मोह स्वभाव ॥
दर्शन ज्ञान प्रधान कर चरण रमण लवलीन।
निजानन्द समरण करे वही श्रमन नवीन ॥

जो जाने अरहंत गुण सकल द्रव्य पर्याय।
वह जाने निज आतमा क्षीण मोह मुनि राय॥
निज आतमते भिन्न सब साधत है नर दक्ष।
वस्तु रूप विचारते ज्ञान चरण दृग लक्ष॥
अध्रुव इसको कहत है जो उपजे थिर नाश।
सदा काल रह तान ही मेघ पटल जो वास॥
द्रव्य रूप से नित्य है गुण भी समझो नित्य।
विनश रूप पर्याय है याते कही अनित्य॥
मिथ्या कर्दम लेपकर घूमे जग मझधार।
पंच परावर्तन मयी सकल रूप संसार॥
जो वर्ते संसार में सभी विरोधी भाव।
इष्टा निष्ट न मानिये मोह महातम राव॥
लक्ष्मी चंचल चपल है पानी लहर समान।
दोय तीन दिन थिर रहै ज्यों भुगते मझ मान॥
सम्यग्दर्शन हीन यदि पुण्य सहित भी होय।
तो पापी समझो उसें निज स्वरूप निज खोय॥
वस्तु यथारथ जान के करो शुद्ध श्रद्धान।
वही आत्म स्वभाव है अविचल दर्शन ज्ञान॥
पुण्य उदय सुर संपदा पाप उदय पशु जान।
मिश्र उदय मानुष लहै सब नाशे निर्वाण॥

निन्दन बंधन स्तवन को ज्ञानी करे न एक।
शुद्ध स्वच्छ विज्ञानमय निज में निज को देख॥
शुद्ध शील संयम धरो दर्शन चारित ज्ञान।
द्वादश तप आराधकें करो सकल कल्याण॥
भाव शुद्धि निज में करो धरम धुरंधर धार।
सकल कर्म को परिहरो पावो भव दधि पार॥
पुण्य पाप संचय करे बंध दशा लव लीन।
विषय भिन्न आतम लखे पुण्य पाप द्वय क्षीण॥
तज मन से ममता सवे जागे नाहिं कषाय।
परवस्तु से ममत तज तव सद्बोध लहाय॥
संसारी सोते रहै तव जागे जग राज।
संसारी जागे जहाँ जोगी साधे काज॥
स्तुति निन्दा नहि करत है पढे पढावे नाहिं।
निज हेतू समभाव को राखे निश्चय ताहिं॥
देहादिक सम्बन्ध में राग द्वेष मलहीण।
निजानन्द निज रूप में राच रहै गुण लीन॥
दर्शन सन्मुख जो मरे सुन्दर मरण कहन्त।
कर्म जाल काटत रहै पावे सुःख महन्त॥
दर्शन ज्ञान चरित्र को कभि नहि करे मलीन।
विषय भिन्न निज को लखे शोभित अनभव लीन॥

शुभ भावनते पुराय है अशुभ भाव से पाप।
पाप पुराय सबनाश के पावे शिवपुर आप॥
मोक्ष मार्ग वह एक है ज्यो ध्यावे निज ध्यान।
कर्म काट शिवपुर लहै पावे मोक्ष कल्याण॥
मन मलीन जब तक रहै तब तक शुद्धि न कोय।
मनोवेग थिर होत ही आवे निज पद सोय॥
दान देत सुख संपति तप से सुरपति होय।
जनम मरण से रहित पद आतम रमते सोय॥
रत्नत्रय पद हीण से मोक्ष पन्थ नहि पाय।
जैसे जल के मथन से चिकणाई नहि आय॥
अन्स मात्र भी राग है नहि लिखते परमार्थ।
श्रुति पाठी तपसी वर्णो नहि आते हैं स्वार्थ॥
वाह्य वस्तु संबंधते जो माने है सन्त।
वह निश्चय मरमार्थ को समझ सके नहि अन्त॥
गमना गमन निरोध के करते आतम ध्यान।
भिन्न भाव सब हान के पावे निज कल्यान॥
निर्मल ध्यान लगाय के निरखो आतम रूप।
आतम ज्ञान विकाशते पावे सिद्ध स्वरूप॥
अभिनाशी यह आतमा निज स्वरूप में ध्यान।
जब स्वरूप में परणवे ज्ञान ज्योति छा जाय॥

ये ही उपन्त काम है ऐसी अपने जोग्य।
जिस क्षण जाने आपको तब सब सिद्धि योग्य ॥
जो परमातम ज्ञान है सो मेही हू शुद्ध।
जो मैं सो परमातमा भावो भ्रम तज बुद्ध ॥
मेरे मे परमातमा परमातम नहि दूर।
ध्यान धरों ध्यावो उसे ज्ञान लहूँ भरपूर ॥
मन परमातम में मिला परमातम में चित्त।
दोनों सामल हो गये रतननिधि निज वित्त ॥
जेसा निर्मल शलिल है तैसा आतम राम।
वारबार समरण करो पावों निज विश्राम ॥
मत कर चिन्ता मोक्ष की चिन्ता मोक्ष न देय।
जिनसे लपट्या जीवड़ा तिन से शिव किम लेय ॥
अंशमात्र भी शल्प है वह करती नुकसान।
शलत्याग शुद्धातमा होय परम निर्वाण ॥
घोर तपस्या करत है श्रुतपाठी भरपूर।
नहि पावे निज आतमा शान्त भाव नहि सूर ॥
बुढ़ापो आयो अवे ढीली पर गई खाल।
घड़ी पलक बीते दिना मत खोवे निज माल ॥
खावे मत दिन व्यसन में आण सतावे काल।
जाय पड़े भव सिंधु में धरा रहेगा माल ॥

पुद्गल की संगत तजो आतम ज्ञानी होय।
सुरनर पशुनर के गति छूट जाय सब कोय॥
सदा स्वरूपी सिद्धसम अविनाशी अमलान।
जनम मरण सब छूटसी निर्मल जल जिम जान॥
सार पदारथ आतम नहि क्रोधी नहि मान।
सो घट में शोभे सदा दर्शन कर गुण वान॥
परम ब्रह्म मम मूरती जो मम सो भगवान।
मरमीजन जानो सदा जानत नाहि अजान॥
ध्यान धरत मुनिगन सबे पावत है निज रूप।
सिद्ध सूरी अर्हन्त गुरु पाठक आतम रूप॥
जोनिगोद से निखलकर पहुंचेहै शिव थान।
यह मरम की बात है जाने सो मति मान॥
पाप पुण्य रथ बेठके सुरनर नर के जाय।
निज स्वरूप शिव पंथ में भूल भ्रमे पशु पाय॥
ज्ञान सुधारस पानकर मोह नीद सब खोय।
आपा से आपो लखे वस्तु यथारथ सोय॥
मृतक दशा जोवन गिने जीवित मृतक समान।
सेन दशा जागृत गिने जागत मृतक समान॥
मित्रा को दुशमन गिने रिपु को प्रेमी मान।
भोजन करि भूखा गहै भू को भोजन जान॥

उलट चाल से चालता चेतन जोत लखाय ।
ज्ञान सुधारस पान कर भव आताप मिटाय ॥
ज्ञानमई दर्शन मई चरण मई चितलाय ।
परमातम पद पाईये ये ही श्रेष्ठ उपाय ॥
समता चपला चमकती वादल शुद्ध स्वभाव ।
मोह सूर्य अब छप गया भ्रम आताप मिटाव ॥
अनहद गाजे गर्जना अनुभव भर वरषाय ।
सम कित सत्ता वीज है भूमी शिव पद दाय ॥
जानो आपही आप को आप माहि है आप ।
सब झगड़ा यह मिट गया कहां पुण्य कहां पाप ॥
शुद्ध समय अनुभव लखो पीबो अमृत पान ।
रत्नत्रय अभेद से पावो केवल ज्ञान ॥
अन्तर अनुभव लीजिये करिये करुणाभाव ।
वाहिर समता आदसे फिर पाछे पछताय ॥
तीन लोक के पुद्गला निगल निगल उगलाय ।
छर्दिकर चाखे उसे वृथा जमारो जाय ॥
बिना आठ प्रदेश के जन्म लयो सब ठोर ।
क्षेत्र जगह खाली नही वृथा मचावे शोर ॥
भव भब के नख केश को संचे एक ही स्थान ।
होय अधिक गिर राजते भाषे वेद पुराण ॥

विकलपरहित जिनेश है सो ही आतमराम।
मोहादिक न्यारे लिखें बंध मोक्ष नहि काम॥
असंख्यात परदेश है ज्ञान दर्श गुणवन्त।
अमल अनाकुल आतमा भीतर देखो सन्त॥

जब जागे वैराग्य गुण तब असार संसार।
नगर वस्ति उज्जड़ कहे कानन भवन निहार॥
जननी थनपय जनमते जो तुमकीना पान।
अधिक सकल सागरभरे समझ सोच मन आन॥
मरते माता रोत है आँसू जलगिरजाय।
अधिक होय सब सागरा बार बार सम जाय॥
गरभ जनम वय वालतन भोगे वार अनन्त।
दरवलिंधारी भयो मध्या ग्रिव अनन्त॥
आतम अनुभव कीजिये यह संसार असार।
जैसे मोती ओसको जात न लागे बार॥
संपूरण व्योपार में पैसा उत्तपत्ति सार।
तैसे जिन वाणी विषें अनुभव है हितकार॥
पंचमहा व्रत पालते सहते परिषह भार।
आतम जोत जगे नहीं ते डूबे मझधार॥
जैसे पूरब अंगको अभव सेन अज्ञान।
भेद विज्ञान जगो नही रुलियो जगत जहान॥

जिनवाणी श्रद्धाधरी शिवभूती मुनि राज।
भेद कर्यो तुष मास को पायो निज गुण राज॥
इन्द्र चन्द्र नागेन्द्र के राग भाव अधिकार।
दर्शन ज्ञान विरागते तद्भव मुक्ति न कार॥
राग भाव भव बंध है इनको त्याग करेय।
अविनाशी पद पायके काल अनन्त रहेय॥
राग भाव संसार है वीतराग पद धार।
आतम धर्म समालके अनुभव भाव समार॥
कौन किसी का होत है जगरूठा व्यवहार।
तन साथी है जगत में को इन चाले लार॥
आसा पासी तोड़ के वीतराग पद धार।
शुद्धातम में मगन हो चेतन चाल समार॥
विधिनिषेद दो खेद है आप आप में आप।
निश्चय चेतन शुद्ध है और सकल संताप॥
संम्यज्दर्शन धारकर जप तप विविध प्रकार।
पूजाशील प्रभावना आतम जय जय कार॥
आगम पढ़ नवतत्वलख ज्ञान सुधारस खीर।
चेतन पद भोजन करो तोर करम जंजीर॥
अशुचि अपावन दुष्टतन विषय भोग लपटन्त।
मूढपना अपनाय के भोगत रोग महन्म॥

दान शील तप जप बृथा आतम हेतु न एक।
याते इनको गोण कर लावो अनुभव एक॥
जोनिगोद में जीव था सोही मुक्ति द्वार।
भेद कछु निश्चय नहीं भेद भणे संसार॥
पर वस्तु से ठग गयो रागद्वेष दो धार।
जीवन मरण अनादि से येही है उरझार॥
अग्नि जलावे काष्ट को पानी भूमी बीज।
पुद्गल रूपी ख्याल में चेतन तू मत रीझ॥
होनहार सो होत है सुर नर नाहि मिटाय।
अंतराय ऋषि राज के कमठ मेघबरषाय॥
लछमण शीता राम के भेद भयो तत्काल।
रावण ने सीता हरी हनुमत लंका जाल॥
ज्ञानी चेतत क्योंनही काम मोह मदलीन।
क्रोध दसा राचत रयो माया चार मलीन॥
रूप अनूपमचेतना रूपवन्त गुणवान।
आतम ज्ञान मलीन है भव अनन्त भुगतान॥
शत्रु मित्र नाही सगे करणी चाल लार।
आतम धर्म प्रधान है पावे शिव शुभ नार॥
धन तन योवन जात है इन्द्रधनुष आकार।
मानुष पद दुर्लभ लही मत खोवो निजसार॥

नर जीवन विजुली मये स्वप्नमय संयोग ।
संध्या सम सब स्नेह है शाक चाय सम भोग ॥
तृष्णा विन्दु व्रत तन यह लक्ष्मी जलपाषाण ।
योवन जलरेखा इव सर्व विनी श्वर जाण ॥
रामचन्द्र लक्ष्मण बली तीर्थंकर भगवान ।
सबको धरणी गलतगई क्योंनहि करत गिलान ॥
देह अपावन मल भरी रुधिर मूत्र की खान ।
शुद्ध चेतना राम हो वस्तु स्वभाव मलान ॥
तू अविनाशी आतमा यह पुद्गल पर जाय ।
तू ज्ञानी ध्यानी महा फिरक्यो करत रझाय ॥
भेषदिगंबर धार के आतम शुद्ध निहार ।
शुद्ध भाव धारण करो परम मुक्ति दातार ॥
निशा जाल झलके तहाँ हाड मास भरपूर ।
तोभी यारी करत है क्यों न बने बल पूर ॥
काल अनन्तानन्तते धरी अनन्ती काय ।
दुर्लभ मानव पद लयो कर्म भूमि पर्याय ॥
चिर जीवन बहु पुण्यते उत्तम कुल संयोग ।
दर्श निजातम रूप को हरो कर्म वसु रोग ॥
तन से नेह निवार के स्थिर एकांत निवाश ।
मन वच काय निरोध के चेतन करो विकाश ॥

पंच महा व्रत आदरो सुमति पंच परकार।
तीन गुप्त गोपो सदा पावो आतम सार॥
आसन स्थिर एकान्त में ध्याना ध्यय न विशाल।
केवल बोध विकाश के पावो मुक्ति रशाल॥
तीर्थं कर पद तुम लहो केवल दर्शन ज्ञान।
रत्नत्रय धारी तुही अविनाशी अमलान॥
चेतन वन्त शरीर में सदा रह भगवान।
पर वस्तु से भिन्न है निश्चनय पर मान॥
जैन धर्म जो आचरे चार गती में कोय।
सो नर नारी भव्य जन शिव सुर पावे सोय॥
पुन्य पाप परिजार के आप आपमय होय।
शुद्धातम संपति लहै वीर वचन है साय॥

अथ आस्त्रवा धिकार

जैसी कंचन आरसी तेसी आतम जोत।
आस्त्रव से जुदी लखो करे सकल उद्योत॥
मिथ्या अविरत योग रुष जड़ चेतन विश्राम।
विविध भेद से जीव है ते अनन्य परिणाम॥
ज्ञाना वरणी आदि ते बंध हेतु जो कर्म।
उनके कारण येक है राग द्वेष दो धम॥

सम्यग्दृष्टि जीव के आस्त्रव बंध अभाव।
सत्ता पूर्व निवद्ध फुनि आस्त्रव बंध लखाव॥
फलपाका भूमी गिरे बंधनहिवह फेर।
खिरे कर्म दृग जीव के उदयन आवे फेर॥
बंधे कर्म जो पूर्व सब भूमी पिंढ़ समान।
कारमाण निवद्धक है बुस बांधे अज्ञान॥
चहु विधि आस्त्र पूर्व के समय समय में बंध।
दर्श ज्ञान गुण युक्त है ज्ञानी धरे निवंध॥
जो यह ज्ञान जघन्य है परिणामन शक्ति कोय।
अन्य स्वरूपी परणवे बंध दशातव होय॥
जघन भाव से परिणवे दर्शन चारित ज्ञान।
इस कारण से कर्म वहु ज्ञानी वांधे जान॥
पूरव कर्म निवद्धजे अपनी सत्ता मान।
यह उपयोग कियालहै कर्म बंध दृढ जान॥
सम्य ग्दृष्टि के सभी आस्त्रव सत्तायुक्त।
वालक स्त्रि समयोग है भोगत तरुणी युक्त॥
भोग योग विनतिष्टते भोग योग्यता पाय।
अष्टा विन्शाति बंध सभी कर्म भाव उपजाय॥
दृग दृष्टि इस भेद से बंध रहित है जान।
आस्त्रव भाव अभाव से बंधन आगे मान॥

राग द्वेष मद मोह से आस्त्रव नहि है शुद्ध ।
आस्त्रव के बिन बंध किम होई सके नहि बुद्ध ॥
आस्त्रव के चतु भेद है अष्ट कर्म की खान ।
रागादिक वहु वीज है इनको बंधन मान ॥
जैसे षट रस अहार को जठर अग्नि को जोर ।
रुधिर मांस मज्जाल है मल मूतादिक ओर ॥
योज्ञानी के पूर्व बंध द्रव्यास्त्रव वहु भेद ।
संचित वहु विध कर्म को ये जिय राग अभेद ॥
उपयोगी निज स्थान में करे सदा विश्राम ।
आस्त्रव भागे दूर से पावे शिव पुर धाम ॥
आस्त्रव भाव भगाय के आतम भाव समाल ।
सम्यग्दृष्टि आतमा तोडे जग जंजाल ॥
शिव कन्या व्याहनचले मोहित भविजन लोग ।
रत्नमय शिर से हरा संवर वक्तर योग ॥
दश दो भाव बरात है दशल क्षण सव मीत ।
सुमतिस ख्यां मंगल पढे अजपागावे गीत ॥
रागद्वेष वारूद है आतस वाजी मोह ।
शुकल ध्यान अंगार है दुविधि कर्म क्षय होह ॥
निश्चल निज मंदिरविषें तिष्टत आतमराम ।
सकल उपाधी भग गई पावत है विश्राम ॥

दर्शन ज्ञान स्वरूप है चरण रमण चितलाय ।
आतम गुण सव पाईये येही मोक्ष उपाय ॥
एक मोह की मगन में आस्त्रव भाव निहार ।
देखे नहि समझे नही भूल भरमनिज धार ॥
जगत जाल इक राग है भ्रमत फिरे संसार ।
मूक्ति मूल वैराग्य है जाग सके तो पार ॥
कोप मान माया तजो लोभसहित परिणाम ।
येही दुसमन शत्रु है मानो आतम राम ॥
आस्रव चारों शत्रु का जीते जन जग मांहि ।
सो पावे मग मोक्ष को यामें शंका नाहि ॥
इन आस्त्रव संवंध में खोवत है निज धर्म ।
नहि तेरी संगत चले काहे संचित कर्म ॥
जिस कुटंव के कारणे करने वहु विधि पाप ।
सा कुटंव सवछूटते दुख पावे गो आप ॥
पोषत है इस देह को नाना भोजन जीम ।
सो तो कों छिन एक में दगा देयगी ईम ॥
आस्त्रघ आवत दोय विधि पुण्य पाप का भेद ।
पुण्य योग संपतल है पाप योग दुख खेद ॥
तीर्थ करगणधर ऋषि चक्र वर्ति वल देव ।
विद्या धर नारयण पुण्य फल समजेव ॥

कु मानुष तिर्यंचअरु नरक वास दारिद्र ।
जन्म जरा व्याधि मरण पाप वृक्ष फल चिद्र ॥
मिथ्या दृष्टि निकृष्ट अति लखेन इष्ट अनिष्ट ।
भ्रष्ट करत है सिष्ट को सुद्धदृष्टि कर पिष्ट ॥
आतम कर्म उपाधि है तजो दोष को संग ।
जो प्रगटे परमातमा शिव सुन्दरि के अंग ॥
इस असार संसार में आतम सार विचार ।
चेतन अवतो चेतहू नर भव लहि अति सार ॥
फल पाने की समय है मरते मूरख लोग ।
किंचित सुख के कारणे नर भव दुलंभ फोग ॥
भर गंगा जल पात्र में चन्दनकाष्ट जलाय ।
मंदमति भुष रांधते कनक पात्र जल जाय ॥
ब्रह्म वर्ग आतम नही क्षत्री वर्ग में नाहिं ।
वैश्य शूद्र दोनों नही चिदानन्द निज माहि ॥
मंगल गावे एक घर पूरे मन की आस ।
रुदन करे इक घर विषे भर भर ने न निरास ॥
तेज तुरंगनिपे चढे पहरे मोती हार ।
कोई दिन नागे फिरे देख जगत का कार ॥
अव चेतो तो चेतलो आतम शरण सहाय ।
शुद्ध चिदानन्द ध्यान घर अपणी संपत आय ॥

दर्शन ज्ञान अनन्त सुख वलबीरज भी अनन्त ।
जोहरी बन निज परखले निज चेतन हिरमन्त ॥
सपना वत जग जाल है पर वस्तु अपनाय ।
फिरे जगत में घुम तो सर्व बुद्ध बिसराय ॥
कर्मास्त्रव को पीसके कर कब्जे चैतन्य ।
मोह राज को मारके शिव राजा बन धन्य ॥
कोपादिक पलटन खड़ी चतुर्गति घर चार ।
गोली गाली मारते हाय हाय दरवार ॥
क्षमा शान्ति समता सजी विपदा भागी दूर ।
जंजीरे काटे सबे शुद्धस्वरूप हजूर ॥
जैन धर्म धारो सही सबदर्शन में नेन ।
लख चौरासी से बचो सीख सयानी लेन ॥
दुविधा आस्त्रव मेट के माया वेली काट ।
आप आप में रम रहो मोक्ष सौख्य है बाट ॥
मिष्ट सुधारस अमल करि समता रसपी पान ।
भाव विशुद्धि सयनकर आनन्द मंगल गान ॥
मन इन्द्रिय को गूढ कर गुप्त करो सव योग ।
वीत रागनिज रूप में स्वयं बुद्ध निज भोग ॥
इन्द्रिय मनजीते जती सम्पति संयम साथ ।
त्याग करो सबकरन को बनो भुवन के नाथ ॥

निजानन्द में रमण कर भोगो आतम भोग।
स्वाभाविक स्वशक्ति से मेटो भव के रोग॥
काल अनन्तानन्त से जीव जनम मरणान्त।
उत्तम मानव पद लियो जपो निजातम सन्त॥
धर्म मूर्ति धनवान हो आतम ज्ञान नवीन।
स्वामी बन निज राज को सकल परिग्रह हीन॥
शशि सूरज चिन्ता मणी आतम ज्ञान विकाश।
निज शक्ति विन नहि लखे अन्धकार सम भाष॥
जिय जड़ संग अनादि से पर निमित्त के योग।
पर निमित्त दूरेभये आपही भोगे भोग॥
आप पराय होर है पर परणति को सोर।
पर परणति त्यागे तवे आप आप को जोर॥
महिमा आतम रूप की कैसे वरणी जाय।
अपनी शक्ति समाल के काट फंद उड़ जाय॥
छोर कर्मकी कालिमा जोर जोग की ओर।
योग रोक आतम लखो सूरज उगतो भोर॥
तोर मोह की मर्मको तीन गुप्ति कर गोप।
निजानन्द दरशण करो मिटे जगत की जोफ॥
मोह मान मिथ्या त्वमें भई अनादि भूल।
अब वेदी रघ दख भये फैलगये सब शूल॥

मोह महातम छायो विकलप करे अनन्त।
अहंबुध्दि व्यवहार में पसे फंद जकड़न्त॥
तुम तोपद्म समान है की चलगे नहि काय।
ज्ञानानन्द सुभाव हो उत्तम पद दर्शाय॥
चेतन रूप अनूप है महिमा अगम अपार।
जो पहिचाने आतमा पदवी पावे सार॥
जांकी महिमा जगत में छाए रही आकाश।
सो अविनाशी घट विषें गुप्त ज्ञान को वास॥
शिव स्वरूप साधन करो आप आपके पास।
गठड़ी खोल समालिये तीन लोक आवास॥
जैसे घृत बत्ती वले दीप जोति परकाश।
अंधकार सब हरत है तेसे ज्ञान विकाश॥
उपादान कारण भलो रोकन हारो कोन।
सुलट चले यह जीव जब रोकन समरथ कोन॥
जो झलकी भगवान के सो ही सांची होय।
पुद्गल संघ अनादिते छोड़ सके तुम सोव॥
वर्णिवावो वोलियो अमृत रूपी वेन।
भैया भावो भावना सुख पावो दिन रेन॥
परम पदारथ पाय के वर्णि भयो विशाल।
आतम तुम साधन करो पावो परम रशाल॥

आप परायेवस पर्‌यो आपा पर को जोय।
आपो में आपो लखे आप रूप निज होय॥

एक अछंबो होरयो एक नगर के बीच।
राजा दव गयो शत्रु से राज करे सब नीच॥
राज करे जहां नीच नर तहां राजा रज हीन।
दीन हीन आनन रहै सब जन के आधीन॥
सत्तर कोड़ा कोटिल्यो बंधीखाने कीन।
बंदीबान समान है दर्शन वरणी तीन॥
राजन जोर चले नही उनही के शिर मौर।
अब बैरी के बस पर्‌यो बृथा मचावे सोर॥
यह रचना इस जीव को जिन को ऐसा ज्ञान।
तो भी कर्म विपाक से दशा हमारी हान॥
सम्यग्दर्शन के बिना सुख पावे जिय नाहि।
काया नगरी जीव नृप कर्म जाल लपटाहि॥
कैसे होगये भारतवासी भूप।
खंड साधन करे जिनका रहा न रूप॥
अपना भाव विगोयके पर परणति लिपटाय।
जन्म भवार्ण व दुख सहै कोई न होत सहाय॥
सन्यासी योगी बनो नाना भेष धरंत।
आतम ज्ञान विना यह तुस में कण समजन्त॥

एक पुरुष धरणी बिषे करता तेज विलाप।
जरा रोग जरजित हुआ भरा शोक संताप॥
एक मित्र ने आय के पूछी कुसल विशाल।
कहो मित्र कैसे गिरे सब सुनावो हाल॥
कुशल क्षेम सब ही गया बुद्धि भई बल हीण।
जोसजवानी ढल गयो दृष्टि घटी तन क्षीण॥
राज पाट सब हट गयो नहि दीशत है रात।
अन्न जोस करते नहीं सूक गया सब गात॥
हात पावँ चलते नहीं पैसा रहा न पास।
देह धरी है भूमि में तज जीवन की आस॥
आसा पासी ना कटी दिन दिन बढ़ती त्रास।
भई दिशा ऐसी हमें दुख सुख लारा कास॥
ग्रीसम ऋतु के दिन बड़े शीत ऋतु की रात।
मंत्री तुमसे कहत हूं अपने मन की बात॥
सुर सुरपति पाताल पति अजपा जपते जाप।
निजानन्द पावे नही वृथा सहें संताप॥
सम्यग्दृष्टि आतमा भजते आप स्वभाव।
तेज पुरतते तुरत ही तिमर ताप सब जाव॥
परम पुरुष निज आतमा निजानन्द सुखकन्द।
जनम जरा मृत्यु सवे मिटे जगत के फन्द॥

कर्म उधदि शोषण करो आतम रतन अमोल ।
सब संकट को हरत है अजर अमर फलतोल ॥
देह अपावन अथिर है विषया रस भरपूर ।
करता भरता भोगता आतम राम हजूर ॥
ज्ञान बिना सब शून्य है समझो चतुर सुजान ।
काम करो बैरी हरो भजो निरंजन ज्ञान ॥
जो मृग तृष्णा वासते ढूंढत वन की ओर ।
कस्तूरी नाभी लसे खोजत है बहु दोर ॥
माटी भूमी शैल की समझत संपत आप ।
मोह मरोड़ो देरयो भूल गयो संताप ॥
ममता माता मान तो मोह लोभ दो भ्रात ।
काम क्रोध काका कहो वाई तृष्णा सात ॥
पापी पाप पड़ोस है अशुभ कर्म घर वार ।
मामा नाना नगर है फल रयो परवार ॥
दुरमति दादी दुष्ट है विकथा दादो जान ।
रूप चरण कछु है नही नाम धर्‍यो अज्ञान ॥
पराधीन परवस्तु को अपनावत हित मान ।
जगत जाति में कल्पना तामें भूले जान ॥
जाप जपो निज आपका आपो आपही आप ।
अंतरंग अनुभव करो और सकल संताप ॥

जों मथि मांखन काढिये मथनी दधि घमसान ।
जो रस लीन रसायनी रसरीती करमान ॥
रचना पंडित पिंडकी जाने सबही भेद ।
विथा हरे औषधि करें जस लेवे वे बैद ॥
जो घट म परमारथी परमारथ परवीण ।
कर्म खरे करुणा घरे पावे शिव परवीण ॥

चेतन लक्षण आतमा तन लक्षण जड़ जान ।
चंचल लक्षण चित्त है भ्रम लक्षण अज्ञान ॥
जो रज सोध नारिया धन संपति के हेत ।
त्यो मुनि कर्म विपाकमें अपनो रस निज लेत ॥
चेत परम पद आपनो विषयन केदे धूल ।
शुद्ध सोमवत रूप है वीच सरोवर फूल ॥
शुक्लभाव से स्वर्ग है मलिन भाव संसार ।
शुद्ध भाव से मोक्ष है जो पावो भवपार ॥
कुन्द कुन्द मुनि के वचन समय सार शुभ ग्रंथ ।
कुमतध्वान्त नाशक सदा चमकत सूर्य महन्य ॥
तुग इन कोधारोसदा मन बचकाय लगाय ।
मिथ्या भाव बिसारि के सम्यग्दर्शन पाय ॥
जगधंधा को त्याग के निज स्वरूप थिर होय ।
अष्ट कर्म जब डगमगे अविचल पद शिव सोय ॥

जिन भाषित सिद्धान्त को हृदय गर्भ सम्भ साज ।
स्वर्ग संपदा तूल है पीछे शिवे पुर राज ॥
निश्चय संयम चरणयुत दर्शन ज्ञान लहाय ।
समकित संसय हरण है तप द्वादश सजवाय ॥
समकित संयम चरण है ज्ञान राज परकाश ।
निश्चय पावे मोक्षपद अष्ट कर्म को नाश ॥
जेनर आगम जान के तप तपते तज मान ।
चारित दर्शन ज्ञान लहि पावे पद निर्वान ॥

निश्चय अरु व्यवहार से ज्ञान दर्श व्रत सार ।
जो धारण करते सदा ते पावे भव पार ॥
जिन वरकी ध्वनि मेघ सम गरजे वर्षे धर्म ।
अक्षर पद सरजे सदा नाशेवसुविधि कर्म ॥
सकल तत्व को सार है साधन साधो सार ।
निश्चय अरु व्यवहार से आतम ज्ञान प्रचार ॥
मुनि श्रावक आचरण को निश्चय अरु व्यवहार ।
भव्य पाय शिवमगल हो मानुष भव अवतार ॥
सकल काज संताप तज त्याग जगत की ताप ।
हेयाहेय विधान को नीके मन रच आप ॥
जिन मुद्रा जिनविंब है प्रतिमा दर्शन सार ।
साधन साधो संत हो रत्नत्रय व्यवहार ॥

प्रथम आयतन शास्त्र है चैत्यग्रह दृगधाम।
जिनवर प्रतिमा दर्श है यति मुद्रा अभिराम॥
परमारथ से परखले अन्य भेष सब निन्द।
फटिक मणि पाषाणमय धातु जिनवर वन्द॥
सदा जीव चिद्भाव से अविनाशी अमलान।
कर्म कलंक पखाल के पावे पद निर्वान॥
भव्य जीव उपदेश यह तजो भाव मिथ्यात्व।
शुद्ध भाव धर कर्म हर लहो परम निज तत्व॥
मंगलमय यह आतमा शुद्ध भाव अविकार।
जाप्रसाद पावो स्वपद बार बार उर धार॥

अथ संवरअधिकार

देव धरम गुरु से बसी करसी शिव पुरवास।
संवर साधे साध वा निजानन्द आवास॥
निजानन्द है आतमा क्रोधादिक निज नाहिं।
कोप नहि उपयोग में क्रोध कोप के माहिं॥
क्रोध महा विष रूप है करे प्राण की घात।
अष्ट कर्म नो कर्म सभ गर्क निगोद निपात॥
कर्मादिक नो कर्म में मान्य नही उपयोग।
रमन नहि उपयोग मे कर्म कलंक प्रयोग॥

वह समय बलियारि है सत्य ज्ञान जिय होय।
समता भाव स्वभाव है शुद्धातम सम जोय॥
चिदानन्द के राज में निजानन्द विश्राम।
समरस पान पिया करे पावे अखिल काम॥
ज्ञाता है तिह् लोक को ज्ञायक आप स्वरूप।
आप आप में रम रहे चिन्मय चेतन भूप॥
हैम तपत हैम अगनिसेतजेन हेम स्वभाव।
कर्म उदय से जीव भी तजे न आतम भाव॥
ज्ञानी जाने ज्ञान से समय सार अवतार।
अज्ञानी अज्ञान से आपो नाहि विचार॥

मूढ पुरुष समझे नहीं आपा पर को भेद।
समरण करते कर्म को संचित होते खेद॥
ज्ञानी जाने चेतना रत रमते निज रूप।
अज्ञानी अज्ञान ते गिरते चउँगति कूप॥
ज्ञानी जाने आतमा निजानन्द निज बास।
अज्ञानी अज्ञान से स्व स्वभाव नहि भास॥
अनुभव है निज आपको उत्तम शुद्ध स्वभाव।
सदा समय रमता रहो आवे परम प्रभाव॥
शुद्ध स्वभावी आतमा शुद्ध ज्ञान मय होय।
ते पावे परमेशपद भव व्याधि सब खोय॥

पर संपति अपनाय के निज संपति सब खोय।
अज्ञानी अज्ञान बस आप रूप नहि होय॥
शुद्ध स्वभाव विडार के परको माने आप।
भव बंधन को बाँध कर पावे दुखसंताप॥
निजको निजमें रमन है पुण्य पाप तज रोग।
रत्न त्रयमय स्थिर रहै पावे परममनोग॥
ज्ञान दर्श निज रूप है सरणो सांचो सेय।
सकल जाल जंजाल तज आप रूप निज धेय॥
जो निजको निजमें रमें आप आप को ध्याय।
तजे कर्म नो कर्म को आप रूप रुचिलाय॥
तज पर ध्यावे चेतना रत्नत्रय शिरमोर।
अल्प काल में फल पके चाखे अमृत कोर॥
निज पद ध्यावे आतमा सम्यग्दर्शन बोध।
अल्प काल में शिबल है कर्म कलंक निरोध॥
आस्रव भाव विनाश के संवर भाव समाल।
सम्यग् दृष्टि साधवा जाले जग जंजाल॥
कहे पूर्व सर्वज्ञने कारण अध्यवसान।
योग भाव मिथ्याततम अविरत अरु अज्ञान॥
ज्ञानी योग निरोध से आस्रव कर्म निरोध।
आस्रव कर्म निरोध से दर्श विश्व को बोध॥

कर्म कलंक निरोध से भावे समता भान।
जब नो कर्म निरोध है तब होवे कल्पान॥
आस्रव भाव विरोध से संवर है शिरमोर।
करे कर्म की निर्जरा शिवरमणी में जोड़॥
अन्तर उज्वल करन को जप तप तीरथ तीन।
संवर साधन आतमा खोवत कर्म नवीन॥
सात विसन मद आठ तज षट अनाय तन त्याग।
शंकादिक दूषण तजो तीन मूढता त्याग॥
गुपतिसुमति व्रत धर्म दश भावे भावन सार।
सहे परिषह वीसदो तप चारित्र प्रचार॥
आतम अनुभव आचरो करुणा हृदय विचार।
तीन रतन निधि लीजीये आवागम निवार॥
भेद ज्ञान संवर कयो सो चेतन निज रूप।
भेद ज्ञान जिनके नहीं ते जड़ जीव स्वरूप॥
कोन हरी चेतन मती कोन दिया सब दोष।
मिथ्या मत समता हरी कुमति किया अतिरोष॥
अभिमानी जिय छोड़ दे मिथ्यामत अघ छोड़।
भव भव में बाधा करे सत्तर कोडा कोड़॥
किसको तू तुम कोन हो सबही जनममान।
एक दिना चलना पड़े आपही आप पिछान॥

राग द्वेष अघमूल है भव भव बाधा देत।
इन बस नाचे नृत्य वह इनसे मत कर हेत॥
तू शुद्धातम रूप है दर्शन ज्ञान स्वरूप।
अविनाशी पद अचल है निरालंभ चिद्रूप॥
तू राजा सब लोकका चेतन तेरा नाम।
इन विषयन के मेल में तुझे नहीं आराम॥
अंतर बाहिर जप जपे वार्तालाभालोल।
देख्या देखी तू करे खोवे अपनो मोल॥
सव परिग्रह पोट से तजे नहीं ममकार।
साधु पन जाता रहै संयम संवर द्वार॥
मन गुप्ति को साध कर ले संयम को भार।
संवर धर निज भाव में सामायक सुख कार॥
हो विरक्त सब राग से इन्द्रिय जय परवीण।
त्रस थावर रक्षा करोस ामायकलव लीन॥
संयम समता शील शुभ धम ध्यान आराधि।
ज्योध्यावे निज आतमा पाव परम समाधि॥
तप संवर दम संयमी पाले निरती चार।
सामायिक तिस के रहै निजानन्द अवतार॥
क्यों वासो बनके विषें अन सन काय कलेश।
मौनी समता रहित है वृथा बनायो भेश॥

मात सुता सुत तात से नेह तजो निज नार।
दर्शन ज्ञान चरित्र तप धारो संवर सार॥
केशलोच करतपकरो धरो दिगंवर भेष।
राग द्वेष रिपुताड़ के आतम रत नकलेश॥
दिक्षा पद मुनिगुण अधिकया समान गुणवान।
तिनकी संगति सादरो जो चाहो कल्यान॥
संयम श्रुत निर्मोह यति वीतराग पद भेष।
सावधान निज ध्यान में पावे पद परमेश॥
साधि भये सर्वज्ञ जिन वही तुमारो भेष।
वचन गुप्ति धारण करो मेटो सकल कलेश॥
संयम तप व्रत आदरो तजो परिग्रह भार।
निजानन्द पदलीन हो उतरो भवो दधिपार॥
जन्म जरा क्षय काम है साधो संयम शुद्ध।
आयु क्षय होते हुए एक समय में बुद्ध॥
जो भ्रम विद्या रत रहै नहि कर्मों को रुद्ध।
ममता भगे न भाव से तेरागी जग जोध॥
सप्त तत्व षट द्रव्य में साधत है सब ज्ञान।
संयम तप व्रत युक्त है बहुत दूर निर्वांन॥
मन न भजन जग जन करो विमल ज्ञान उर धार।
सरस निर्जरा करम की करो आत्म उपकार॥

वस्तु भाव विचार के समझे शरणो साप।
निश्चय आतम राम है और सकल संताप॥
काया नगरी बस करो येही संवर भाव।
मानुष भव दुर्लभ मिल्यो मत चूको यह दाव॥

चौपाई

राग दोष परकी उत पात शुद्ध चेतना निश्चय आप।
विधिनिषेधको खेद निवार आपआप में आप समार॥
बंध मोक्ष विकलप तजभ्रात आनंदकंद चिदातम साथ।
दर्शन ज्ञान चरण आचरो तपसंयम व्रत निजमेकरो॥
चेतन पुद्गल काल अनादि मिलजुड़े पारावर्त साद।
पुद्गल द्रव्य अचेतन भिन्न मेरा चेतन निश्चय भिन्न॥
चेतन चिह्न चेतना जान कल्प अनंत रहें इक थान।
पुद्गल की पुद्गल परजाय क्षीरनीर जो भेद बताय॥
भूलमटी निजपद पहिचान परमानंद परम निजथान।
जैसा सिद्ध क्षेत्र में राज तैसा घट में जानो आज॥
यह शरीर पर द्रव्य सदैव मेरा चेतन मुझ में सैव।
धारो अब संवर वैराग मन थिरकर निज पावो भाग॥
आतमलीन अनूपमरूप तपकरि काटो कर्म स्वरूप।
निर्विकप ज्योति घट वास पावो केवल ज्ञान विकाश॥
ध्यावो आतम रूप अनूप सिद्ध करो चिद्रूप स्वरूप।

दोहा

सिद्ध क्षेत्र में सिद्ध है ऐसा आतम रूप।
स्याना तो जाने सही नहिं जाने जग भूप ॥
धम निजातम रूप है धरे विवेकी लोग।
जो इनको अनुभव करे तिनको शिव सुख भोग ॥
वारी षेण साधो सही पूल माल असि धार।
सीता साधो शील से पावक पानी सार ॥
सेठ सुदर्शन पालियो सिंहा सन भयो सूल।
सरि पाल सागर गिरियो जल थल हो गया फूल ॥
सोमा साधो धर्म निज फूल माल अहिकाल।
अंजन तस्कर पालियो छेद छीक गिर भाल ॥
धन कुमार साध्यो सही भयो देव अहन्द्रि।
पांचों पांडव साध कर शिव भये अहन्द्रि ॥
गजमुनि साधो भाव से पहुचे मुक्ति महान।
जो सधेगे भाव से संवर पद निर्वान ॥
स्तुति निन्दा सम भाव है जीवन मरन स्वभाव।
तन से ममता तोर के जो रो निज के काज ॥
भाग्य उदय आयो सही अब पावो शिव राज।
हित उपदेशक मंत्र है विषय वासना त्याग ॥

अपना माल समाल कर ध्यान धरो तज राग ॥
गुरु माता गुरु ही पिता गुरु भ्राता गुरु ज्ञान।
गुरु सज्जन उत्तम ऋषी वचन अमोलकमान ॥
महल समान मसान गिन फूल माल अहिकाल।
शत्रु मित्रमणि काच सम भावो भाव विशाल ॥
जगवासी जीवन प्रति देते है उपदेश।
काल अनन्ता गम गये धारो संवर भेश ॥
दुर्लभ नर भव भव लियो साधो संयम सार।
संवर को आराध के उतरो भवदधि पार ॥
नगन दिगंबर पद धरो परम हंस निर ग्रन्थ।
सन्यासी योगी वर्णों वैरागी शिव पन्थ ॥
परम हंस परमेष्टि पद नगन दिगंवर रूप।
अणगारी साधु ऋषि ज्ञान धानतप भूप ॥
शांत निरंवरआतमा मोक्ष मार्ग परवीण।
एकाकी निस्प्ट हसदा श्रवण तपस्वी लीन ॥
भूमी साधन सयन है अंवर है आकाश।
ज्ञानामृत निज पान है आतम परम प्रकाश ॥
गंगा तीरे हिम गिरी शिला शुद्ध सुख वास।
खर्गासन पद्मासन ब्रह्मा ध्यान निज वास ॥
हिरण आयतन सेलरे ज्ञान ध्यान तल्लीन।

शैया आसन भूमि है आलस निद्रा हीन ॥
शान्त स्वभावी आतमा परमातम परकास ।
परमपदारथ लीन है सुमति गुपति व्रत पास ॥
विन्ध्याचल पर्वतग्रह शिखर समेद निवाश ।
चन्द्र ज्योति जोति गिने आतम ज्ञान विकाश ॥
इन्द्र चन्द्र सुर बृन्द नर असुरयक्षचक्रेश ।
केशव माधव रामहनु शीष नवावे देश ॥
संयम संवर के धनी निजानन्द में लीन ।
गुण वर्णन उनका करो धवला के आदीन ।
पराक्रमी हैं सिंह सम अभिमानी गजराज ॥
उन्नत भी गज राज सम बृषभ भद्र तम साज ।
मृग के सम वह सरल है धीरज धारी साध ॥
पशु समनिरीहस्वभाव है आतम गुण आराध ।
पवन समान असंग है भानुसम तेजस्व ॥
गोचरी बृति आदरे गर्त पूरण भक्ष ।
सकल तत्व दर्शावते जाने अंतर ज्ञान ॥
सागर सम गंभीर है मन्दिरा चलथिर थान ॥
सर्व परिषह आदरे द्वादश भावे भाव ।
मणि प्रभा सम तेज है शीतल परम सुभास ॥
निरालंभ आकश सम उरग वास सम वास ।

अन्वेषण है मोक्ष का ज्ञानानन्द सुभास ॥
सहस अठारे शील है गुण चौरसी लाख।
निजानन्द निज मेर में संवर साधे साख ॥
सम्यग्ज्ञानी संयमी गुरु जहाज को पाय।
भव सागर से तिर गये उत्तम मार्ग वताय ॥
परमहंस परमातमा वीत राग निर्ग्रन्थ।
परमदिगंवर पदल है पाले उत्ताम पन्थ ॥
भेद ज्ञान सावनरचे निजानन्द जल धोय।
उज्जल कर निज आतमा एक समे शिव लोय ॥
पुद्गल परिचय त्याग के निज रिपणतिनिज होय।
तृणमणि कंचन का चसम शत्रु मित्र नहि कोय ॥
सव संसार असार है कदली तरुवत जेम।
जव भी जेवै राग्य रस धन कन कंचन केम ॥
इक्षुदंड के फल नहीं हेम गंध नहि रूप।
चन्दन तरु है फूल विन जीवन मरण स्वरूप ॥
पूर्व पुण्य के उदय मे वन भी पुरवस जात।
शत्रू भी मंत्री वन रत्न पूर्ण घर सात ॥
रतन नवो निधि पूर्ण पद चौदह रतन भंडार।
पुण्य योगते प्राप्त है करो तपस्या सार ॥

तू न किसी का जीवड़ा तेरा नही है कोय।
सब संपति जाती रहैं भीकन घाले कोय॥
अपनी पुंजी माल को आप रूप निज जोय।
उन ही में संतोष धर शिव संपति निज होय॥
आशा पासी आतमा सबजीवों के होय।
आशा पासी तोड़ के आतम ज्ञानी जोय॥
बाग जाल सब में टके अंत करण निज जोय।
कंचन काच ससान भज शत्रु मित्र नहि कोय॥
कानन नगर समान गण आसा पासी तोड़।
पूरव संचित कर्म को चूरण करो मरोड़॥
नगन दिगंबर आत्मरत पर संपति सब त्याग।
संवर साधो शुद्ध मन मिटे भवान्तर दाग॥
स्तुतिनिन्दा आतम नही आतम गुण अमलान।
साधु साधो शिव पुरी अभय दान सन मान॥
काच खंड कंचनमणि शत्रु मित्र सम भाव।
आतम रूप रमावते पुद्‌गल प्रेम हठाव॥
चर्म चीन रेशम लता तृण कंचन पट पाट।
केशरकीचड़ काचमणी समद शिजग ठाट॥
अंधकार दीपक भके काजल वमन करे य।
संगत जैसा फल मिले निजानन्द से स्नेह॥

घर लक्ष्मी जीवन नशे जगत वास नहि नाश।
याते आतम ध्यन से नशे जगत का वास॥
आतम नहि है धातु में नहि मट्टी पाषाण।
आतमा हि है काठ में निश्चय आप प्रमाण॥
आतम को हितकार है सकल वस्तु में सार।
नित्य निरंजन आतमा ध्यान गम्य है धार॥
तेरा जीवन घटत है जैसे अँजुलि तोय।
होय निचिन्त पड़ो कहा चेतन चेतो सोय।
तन धन जो वन जाय है जैसे वुद वुद नीर।
इन्द्र चन्द्र चक्री मरे पूरण करत समीर॥
थोऽसार सँसार हैं इस में आपो सार।
आप आप में रम रहो लेवो लाहो लार॥
काल अनन्ता नन्त से फिरे चतुर्ग तिमाहि।
अवतो चेतो चेतना भूल सुधार वनाहि॥
सदा अकेलो आतमा भोगे दुःख अनेक।
समझ होयतो समझले रक्षक नहि है एक॥
पुन्य पाप संचय करे बन्ध दशालवलीन।
दर्शन ज्ञान चरित्र को पावे नहि मलीन॥
लोह संग से अग्नि जिमघण झेले सव अंग।
तेसे इनकी संग से सज्जन राचे रगं॥

नग्न रूप धर भेष जे जले मृतक वतकाय।
भिक्षा में रस अन्न को इच्छित न शरमाय॥
जो तू छाहे आत्महित पुण्य पाप पद छार।
मन वच का यनिवार के भोजन चाह विसार॥
रूप तीतली मीन रस भ्रमरगंधमृगगान।
गजस्पर्सन से नाश है ज्ञानी करे न मान॥
मानव तज दे लोभ को लोभ पाप का मूल।
सकल देश में लोभ वस दुख सहते है सूल॥
तीन लोक में लोभ वस दुख सहते है जीव।
याते तज दे लोभ को सुख पावे ही सदीव॥
जल सींचन मर्दन करण छेदन भेदन लेप।
पंच पाप त्यागन करो कर्म कलंकन लेप॥
वही धन्ध है आतमा पांच पाप तज जेय।
संवरधारा ध्यान को ध्यावत ज्योतिलखेय॥
भिक्षा भोजी साधवा करे न आतम काज।
मौह मेल से मिल गया समझ समझ रे आज॥
जिय मतजाने आप के स्वजन मित्र घरवार।
कर्माधीन अनित्य है दुख पावे संसार॥
काल अनन्ता नन्त से पर वस सहते दुःख।
अंश मात्र स्व वसस है पावे अविचल सौख्य॥

चौरासी लखयोनि में जनम मरण जर जार।
मोह मेल से भर गयो भोगे दुख अपार॥
अव चिन्ता संसार की त्याग करो मुनिराज।
निज चिन्ता चितवन करो अजर अमर पद काज॥
रूप पंचरस पंचतज दोय गधतज देय।
आठ स्हर्श सेवो नहीं मन विकलपहित जेय॥
मन विकलप तू मत करे शुद्धा तम को जान।
चिन्ता तज देसर्वदा पावे पद निर्वान॥
धर समाधि समरस चखो सकल सँग को त्याग।
पंच पर मगुरु समर के निजानन्द से राग॥
धन कण कचन का मिनीं सुख्ल भसुख सम जान।
दुर्लभ है संसार में एकयथा रथ ज्ञान॥
द्रव्य रूप सव वस्तु स्थिर पर्ययना हिजान।
द्रव्य दृष्टि आपा लखौ गौन पर्य ये मान॥
गगन नगर सम संग है जलदपटल योवन्न।
विजली वत सुत सुजन है इन्द्र धनुष सव मन्न॥
शान्ति सुधारसपान कर आतम भोजन लीन।
शुद्धा तम में रम रहो एही करणी कीन॥
निज स्वरूप में मान्यता निश्चय संवर लीन।
गुपति समिति संयम धरम अनु प्रेक्षा चित चीन॥

संवर को समझवाय कै निज स्वरूप को पाय।
कर्म रूप सब क्षय करो लोका लोक लिखाय ॥
भिन्न २ सब समझ लो पुद्गल फल दुखदाय।
पुद्गल के फैलाव से धरे अनन्ता काय ॥
चेतन के नहि कर्म है कर्म वर्ण व्यवहार।
निश्चय ऐक स्वभाव है वीतराग पदसार ॥
परमारथ के पारखी कर आतम से मेल।
परपदार्थ फांको फरे इन से मत कर मेल ॥
पचमहा ब्रत आदरो सुमिति पंचपरकार ॥
तीन गुपत गोपो सदा सँवर जग से पार ॥
रागादि निश्चय कहा व्यवहारे पर घात।
हिंसात्यागे साधवा मेटे जग उत्पात ॥
सत्य वचन संसार में करे सकल कल्याण।
साधु पाले प्रेम से पावे उत्तम थान ॥
भूल्यो विसरो भूप स्यो पर धन सब ही जान।
विना दियो लेवेनही वही मुनि श्वर मान ॥
मलमली नति यतनविषे कामी जनरत होय।
मुनिजन त्यागे दूर से योग शुद्धि निज होय ॥
चेतन चिर भूल्यो फिरियो परिग्रह भार भराय।
दुख दावानल जल गयो शाति सुधार सपाय ॥

मृग तृष्णा आसामजो आसा पासी धाम।
कुगति सँग से भोगवे चेतन चिन्मय राम॥
चेतन चिर भूल्यो फिरे कर्म संगति लार।
संगत छांड़ो दूरसे अपनी सुरत समार॥
भव तृष्णा बाधा तजो पर परनतिछटकाय।
चेतो चेतन देर क्यों औसर वीत्यो जाय॥
कृमि कुलपिपली कुललहो कुंजर अलि अवतार।
अष्टा दश इक स्वास में धारेतन सब छार॥
छोड़ सकल भ्रम जाल को समरस भाव विचार।
उदासीन आश्र लहो उत्तम संवर सार॥
आरत रोद्र कु ध्यान तज धरम शुकल आराध।
सुख समाज महि मागहो अविचल पद परसाध॥
कुंकुम कर्दम दास रिपू तृण मणि मह मषाण।
व्याल माल सम भाव भज पावो पद निर्वाण॥
चिदानन्द निद्दंद पद ध्यावो अविचल ध्यान।
केवल ज्ञान प्रकाश कर करो आतम कल्यान॥
सतगुरु की संगत करो समता रस शिरदार।
शील सरोवर दृढ़ धरो वस्तु स्वरूप विचार॥
भोग भुजंग समान है कदली समतन जान।
विषम विषय विषरूप है निज पद परखो तान॥

तज आरंभ परिग्रहा ज्ञान ध्यान तप धार।
अंबर त्याग दिगंबरा आतम रूप निहार ॥
संशय विभ्रम मोह तज भज अनुभव भवतार।
निजानन्द निज जानकर बोलो जयजय कार ॥

घनगाजे विजली दमे गगन बीच धनुचाप।
नाग सिंह वन जंतुभय कंपित तरु संताप ॥
धारा धर वृष्टि लगे जलद अगम वह नीर।
तरु जल में ठाढ़े मुनि तन शोषित सह पीर ॥
ग्रीषम की संताप से सूख गये सब नीर।
मृग तृष्णा दोड़ी फिरे पावे नाहीं नीर ॥
जेठ घाम की तेज से अंडा छोड़े चील ॥
शैल शिखर टाढ़े मुनियोंगासन जिम कील ॥
शीत ऋतु वैठे मुनी नदी सरोवर तीर।
पाला जमते ताल सव दरखत दहत शरीर ॥
शैल शिखर गिर राज है वीसोटोंक निवास।
मुनि ज्ञानी ध्यानी महा जाय करत है वास ॥
काया तजते प्रेम से समता धरे शरीर।
कर्मकाट शिव पुर लहै पहुँच गये भवतीर ॥
मोटा मोटा भूपति जोधा अति बलवान।
त्याग राग वैराग भज भये सिद्ध भगवान ॥

दश लक्षण निज धर्म को धारे है मुनि राज।
अंतर त्यागे बासना निजानन्द के काज॥
क्षमा धर्म जिस को कहै कोपन आवलेश।
सदा काल समता रहै पावे पद परमेश॥
नीच ऊँच सन्मान तज भज सब एक समान।
मार्द्दव धर्म प्रधान है करे सुगति सनमान॥
कपट कुठार समान है काटे तरु शिवकार।
ऐसा आर्जव धर्म को आदर करो विचार॥
सत्य धर्म धारो सदा मिष्ट शिष्ट सुखदान।
बशीकर्ण महा मंत्र है यों भाके भगवान॥
गंगा यमुना नर्वदा सागर तीर तलाव।
स्नान किये शुद्धि नहीं शौच धरम धर भाव॥
उत्तम संयम धर्म धर करो कर्म क्षय कार।
विषय चोर को छोड़ के साधो शिव मग सार॥
कर्म शैल भंजन महा द्वादश तप सिरदार।
ध्यान अगनि प्रजलाय के करो करमके छार॥
दान च्यार परकार के करो शक्ति अनुराग।
नर भव उत्तम पाय के लाहा लेह अवार॥
दान देत धन ऊपजे पुण्य पुञ्ज निप जाय।
भोग भूमि सुर भोग के नर पद से शिव जाय॥

भेष दिगंबर धारके आतम शुद्धि विचार।
आकिंचन धारण करो सुरग मुक्ति दातार॥
ब्रह्मचर्य वृष आचरो सकल कलुष निरवार।
मोक्ष महल को मार्ग है ध्यावो निज फल सार॥

पर ममता त्यागी बनो चाखो निज उपयोग।
तीक्षण सरमतिधारके परको करो वियोग॥
मोद अतुल अक्षय गहो शांत सुधा रस पान।
विषय वासना छोड़दो आतम वीर्य महान॥

भिक्षा भोजन आचरो लाभालाभ समान।
साम्य भाव धारण करो परम हंस पद मान॥
सून्या गार विमोचग्रह वृक्षमूल तृणकूट।
गिर कंदर तटनी तटे मरकट वाजिन कूट॥

निर्जर शुभ स्थल के विषें बसे वास बलमीक।
कोठर सागर तीरपे निजानन्द रमणीक॥
संगमात्र तिलतुष नही ज्ञान ध्यान तप लीन।
शांति दिगंबर रूप है गुण जल कमल अलीन॥

मंदिर गिरज्यों अचल हैं विन इच्छा ऋषिराज।
आप तिरेजग सिन्धु से तारण तरण जहाज॥
साधु लक्षण श्रेष्ठ है आतम शान्ति स्वरूप।
पर द्रव्यो को निज नहीं निज में निज को रूप॥

सुन्दर भाषण देन से ज्ञानवान नहि बोल।
शन्त स्वभावी समरसीत त्व अमोलक मोल॥
हीन पुरुष की संगती हीण पुरुष कर देत।
ज्ञान वान की संगती सब संकट हरलेत॥
ज्ञान वान लक्षण सुनो स्तुति निन्दा निज नाहि।
अपने गुण छादित करे पर निन्दा मुख नाहि॥
देह त्याग स्वीकार है हिंसा नाहि करेय।
समता नियमता दया सबको शिक्षा देह॥
रंजत नहि जग जीव से तारण तरण करेय।
ज्ञान चरण द्दग धार के शिव रमणी सुख लेय॥
सद् बिचार धारण करो सदा चार चल चाल।
स्याह केश धोरे परे आण डसे गा काल॥
विद्या ईश्वर ज्योति है पापी जन नहि पाय।
साधु समता साधते केवल विद्या पाय॥
निद्रा तन्द्रा क्रोध भय आलस विषय कषाय।
मोह लोभ चालू रहै जन्म जरा नहि जाय॥
कुन्द कुन्द वाणी भणी पीवत मरण नशाय।
आत्म सुधा रस पान से शिव सुख सम्पति पाय॥
ज्ञान शक्ति वैराग्य तप परम पदारथ पाय।
ध्यान कृपाण सजाय के चेतन पद दरशाय॥

देह अचेतन मल भरी स्वेद मेद कफ लार ।
मात तात रज वीर्य से उपजी निन्ध असार ॥
नाम करम की फूतली मूत्र पुरीष भंडार ।
चर्म मड़ी सो वेघनी धर्म चुरावन हार ॥
नेह तजों इस देह से निर्पेक्षा परिणाम ।
संयम शील स्वभाव से निजानन्द परिणाम ॥
प्राशुक दिन में देख मग जूड़ा एक प्रमाण ।
गमन करे संयम धरे ईर्या समिति स्थान ॥
खेद हास्य कर्कस वचन स्तुति निन्दा परवाय ।
ज्यो त्यागे हित मित चहे भाषा समिति साह ॥
कृत कारित मोदन विना प्राशक भोजन पान ।
जोइ दिया दातार ने साम्य भाव से दान ॥
वृषभ आदि महावीर जिन भये दिगम्बर जेह ।
दान दिया दातार ने कंचन वर्षे मेह ॥
जीव दया उपकर्ण जे और कमण्डल होय ।
पुस्तक यत्न स्वभाव से चोथी समिति सोय ॥
प्रासुक भूमि प्रदेश में नहि रोके जन कोय ।
तन मल को क्षेपण करे पंचम समिति होय ॥
राग दोष मद कलुषता मोह मान सब छार ।
शुद्ध भाव ममता सहे मन गुप्ति मन धार ॥

चोर राज भोजन कथा वनिता बन्धन बैन ।
चोरो के निज भाव में वचन गोप सुख देन ॥
वध बंधन छेदन नहि नहि अंग सम मोच ।
सकल क्रिया तन कीत जे काय गुप्त सिर लोंच ॥
संयम पाले प्रेम से मन वच काय विशुद्ध ।
चेतन चिन्मय चिन्तवे ध्यावे निज गुण शुद्ध ॥

वारह भाव०

धन योवन जीवन जना राज सम्पति सार ।
जल वुद वुदवत मानिये तजो मोह मम कार ॥
वस्तु रूप पहिचान के हर्ष विषाद न सार ।
काम क्रोध मद मार के ध्यावे आतम सार ॥
सकल विषय विष वास है जीव महा दुखदाय ।
याहि अनित्य विचार के भावो भावन राय ॥
जन्म उसी का सफल है भाग्यवान जग मान ।
आपालख पर को तजे लाभालाभ समान ॥
विभव पाय पाछो फिरे कोई न किसका काम
तन धन संपत अथिर है त्याग करो निज राम ॥

इति अनित्य

इस असार संसार में सार नही है कोय।
देव इन्द्र नृप नर मरे शरण कहा की होय ॥
सेर पेर हिरणी परी रक्षा किस विध होय।
जीव काल वस जाय है मोहग हल मत खोय ॥
मरती वेला जीव को मंत्र तंत्र कह रक्ष।
तो मानव मरते नही अरब खरब फिर लक्ष ॥
वस्तु स्वभाव विचार के खोल देख निज धर्म।
शरण आप को आप है और सकल है भर्म ॥
रत्नत्रय निज रूप है शरण लेहु तत्काल।
पहुँच जाय निज स्थान में जगत नमावे भाल ॥

(इति अशरण)

परिपाठी जग में फिरे जानत नाहि अजान।
परपद को आतम गिने पावे नहि निर्वान ॥
पाठ पडे वन में बसे शिर के लूंचे केश।
भेष बनावे साधु को ज्ञान ध्यान नहि लेश ॥
पंच परावर्तन फिरे धरे चतुर्गति भेष।
काल अनन्ता गम गये नहि पावे निज देश ॥
निर्मल भाव स्वभाव धर निज में निज को जाण।
वास कटे संसार को पावे निज कल्याण ॥

पंचा चार विचार के सहपरिषह सर्व ।
संवर संयम साध के फिर नहि आवे गर्भ ॥
योवन जीवन रूप धन मित्र मिलाप विलाप ।
सव अनित्य ससार में सार आतमा आप ॥
जन्म जराजर वेदना और उपद्रव कार ।
सुख संसार असार है त्याग करो गुण कार ॥
तत्व अर्थ जाने विना आत्म दर्श नहीं होय ।
नकुल मार ज्यों ब्राह्मणी पुनः पस्ताई सोय ॥
अनुभव ज्ञानानन्द है अनुभव अमृत रूप ।
अनुभव निश्चय धर्म है अनुभव मोक्ष स्वरूप ॥
अनुभव शुद्धातम दशा अनुभव समता रूप ।
अनुभव स्वातम निर्जरा अनुभव सब रस कूप ॥
अनुभव चिन्तामणिरतन तारण तरण निहार ।
तुम इच्छा भव हरण की अनुभव करो विचार ॥
निज स्वभाव में थिर रहो पर से ममता तोड़ ।
अनुभव रस राचत रहो ये ही है शिर मोड़ ॥
आतम रस पीयो नहि विकथा करी अपार ।
बंध चतुर्गति वांध के भ्रमत फिरयो संसार ॥
गंध विना जो पुष्प है दंत बिना मातंग ।
कंथ विना वनिता वृथा अनुभव विन है अंग ॥

अनुभव परम जहाज है अनुभव परम रशाल ।
अनुभव सुख भंडार है अनुभव मोक्ष विशाल ॥

(अथ निर्जरा भावना)

संवरमय है निर्जरा धारे उत्तम संत ।
स्वातम को जाने सही करे जगत को अन्त ॥
सम्यग्दर्शन धर्म है सम्यग्दर्शन ज्ञान ।
सम्यग्दर्शन चरण है सम्यग्दर्शन ध्यान ॥
चौरासी लख योनियें भ्रमत फिरयो विन ज्ञान ।
अब कर अनुभव आतमा होय सर्व कल्याण ॥
आचारज उपभ्झाय मुनि अनुभव रस में लीन ।
अनुभव से परमातमा सकल निकल अमलीन ॥
सत्य देव निर्ग्रंथ गुरु जिन वाणी श्रद्धान ।
सो व्यवहार बखानीय सम्यग्दर्शन जान ।
सम्यग्दर्शन समनही पार उतारन हार ।
खेवटिया भव उधदि में सम्यग्दर्शन सार ।
सम्यग्दर्शन के बिना जप तप करो अनेक ।
बहु बिन्दी विन अंक है कामन करते एक ॥
पर द्रव्यो से भिन्न ज्यो निज में करे श्रद्धान ।
निज में निज का जानना सम्यग्दर्शन ज्ञान ॥

या बिन आस्त्रव झरत है या बिन बँध विधान।
याविन ज्ञान न ध्यान है याविन भेद विज्ञान॥
या बिन संवर निर्जरा होत नहीं लव लेश।
या बिन सब निष्फल किया धारो सम्यक भेष॥
या बिन श्रावक मुनि नहीं द्रव्य लिंग जग भेष।
याते सम्यग दृग धरो अजर अमर पद पेष॥
संवर पदको पायके पूरव कर्म निकंद।
फिर अफंद हो पंद नहि सो निर्जर आनन्द॥
सम्यग दर्शन ज्ञान की महिमा अगम अपार।
क्रिया करत फल भुंजते कर्म बंध नहि लार॥
पूरव कर्म उदय भये विषय भोगवे जीव।
वीत राग पदवी धरे पहिमा समकित लीव॥
जैसे कोतुत भूपती नीच कर्म करडार।
उनको रंक न कहत है ऐसे सम्यक सार॥
धायलडावत वालको मानत परको अंग।
नहि रचत है रागमें निजानन्द को संग॥
तेसे ज्ञानी ज्ञान में किरयामाने भिन्न।
आतम सेना तो करे पर वस्तु से खिन्न॥
अंतर सम्यकवन्त के वीतराग विज्ञान।
जा प्रभाव निजपद लखे करे करम की हान॥

आतम दर्शन भय हरे सोही उत्तम रूप।
जिस पद परसत सकलपद लगे आपदा रूप ॥
जाके अंतर आतमा जाग रहा निज रूप।
करे कर्म की निर्जरा बने शिवालय भूप ॥
बहुविधि क्रिया कलाप से ज्ञान ध्यान नहि होय।
आतम ज्ञान विकाश ते सहज मुक्ति पद सोय ॥
ज्ञान कला जाग्रत भई पूरण भयो प्रकाश।
कर्म निर्जरा होयगी शिवपुर बसि सी बास ॥
सकल धर्म को मूल है सम्यग दर्शन सार।
ताको शरणो सार कर भव दधि उतरो पार ॥
चौथे गुण स्थान कविषें बोवत बीज महन्त।
गुण स्थानक तेरह विषें केवल ज्ञान फलन्त ॥
जिन शासन अनुकूल से धारो दर्शन मूल।
सवगुण यामें वसत है मोक्ष सौख्य फल फूल ॥
इन विन संयम शूल है सम्यग दर्श अंक।
ज्ञान चरण विन्दी धरो गणती करो असंक ॥
शंकादिक दूषण तजो शुद्ध धरो वसु अंग।
मोक्ष वृक्ष अँकूर है उपजे सज्जन सँग ॥
अँग हीन दर्शन सही भव दुख मेटत नाहिं।
अक्षर ऊनसे विषबाधा नहि जाहिं ॥

जहां यथारथ दृष्टि है सम्यग दर्शन होय।
जपतप सँयम इन विना पुन्य पाप फल दोय॥
सुन्दर सद्गुरु वचन है सुन्दर शिवसुख देन।
सुन्दर तेरे मँडली सुन्दर तेरे नेन॥
लोकोत्तम सब सँपदा उत्तम अनुपम भोग।
पुण्य योग पायो तुझे साधन साधो योग॥
सँवर धारो धर्म से आतमता निज लीन।
पर वस्तु परिहार कर सिद्धालय स्थिर चीन।
जैन धर्म धारण करो सम्यग दर्शन लार।
कर्म काष्ठ जलाय के शिव पुर साधो सार॥
हरे घातिया कर्म जब लिखे विश्व को बोध।
करे कर्म की निर्जरा शिवरमणी को जोध॥

अथ निर्जरा अधिकार

बन्दो पांचों पर गुरु सुर नरके प्रतिपाल।
अक्षय पददायक सदा हमको करो निहाल॥
आस्रव तत्व निरोध के सँवर तप शिर मोड़।
करे कर्म की निर्जरा शिव रमणी से जोड़॥
चेतन पुद्गल द्रव्य को इन्द्रिय करती भोग।
ते दृगधारी के बने कर्म निर्जरा योग॥

पर द्रव्यों के भोगते सुख सँपति दुख कास।
उदये भये परमाण को अनुभव करते तास॥
अनुभव रस के पान से भोग निर्जरा होय।
द्रव्य कर्म खर जात है भेद निर्जरा दोय॥
ज्ञानी मद से रहित है नहि निदान उपयोग।
द्वादश तप तपते रहै सोही निर्जरा भोग॥
उदय रूप रस प्रगटकर झड़ते कर्म विभाग।
सविपाक यह निर्जरा चारों गति को राग॥
सम्यक दर्शन लार कर व्रत तप सँयम साथ।
उदय काल विना खरे सो विपाक कहलात॥
समभावन ते सुख बढ़े पावे आत्म स्वरूप।
कर्म उदय को भोगता ज्ञानी बन्धन रूप॥
विष भक्षण से वैद्य को मरण होत नहि जान।
विना प्रेम मदिरा पिये माद्य दशा नहि मान॥
भोगत भी नहि भोगता सेवत नाही सेय।
कारण वस से सेवता इसी लिये अन सेय॥
कर्मोदय नानाविधि उदय विपाक प्रमान।
यह स्वभाव मेरा नही मे तो ज्ञायक वान॥
ये जड़ कर्म सराग है उदय काल भुगतान।
ज्ञायक दृष्टा आतमा निश्चय ज्ञायक वान॥

मेरा ज्ञायक रूप है जाने वस्तु स्वरूप।
उदय कर्म विपाक तज शुद्ध वस्तुसद्रूप॥
अंसमात्र रागादि जहां निश्चय सम भेताप।
सकल शास्त्र पाठी भयो जानत नाही आप॥
जो नहि जाने आपको पर नहि जाने सत्य।
द्रव्य भेद नहि जानते किमविधि ज्ञानी तथ्य॥
जीव तजे फिर चिरल है परपद में अनुराग।
स्थिर पद निश्चय ग्रहण कर मेटो भव भव दाग॥
संयम से अनुराग कर तज परिग्रह सब भार।
दुद्धरतप आराध के राग करो परिहार॥
गिर कन्दर वन में वसो चिदानन्द रस लीन।
कर्म कालिमा धोय के शुद्ध आतमा चीन॥
उदय भयो निज चन्द्रमा जिमन भति लक सुरेन्द्र।
भव भवकी बाधा भगी नमते नागनरेन्द्र॥
आतम ज्योती जग मगे चारित रतन अनूप।
भुज भूषण संयम तिलक शोभित शुद्ध स्वरूप॥
आप आप में रमन कर प्रकट करो निज ज्ञान।
सर्व कर्म तव ही नशे धरे ज्ञान को ध्यान॥
मति श्रुति अयधि ज्ञान गुण मन पर्यय शुभ जान।
केवल ज्ञान प्रकाश कर करो सकल कल्यान॥

ज्ञान विना मुक्ति नही मिले न आतम राव ।
कर्म अष्टको क्षय चहो जपो आपका भाव ॥
ज्ञान विना सव शून्य है जैसे खेती काम ।
जमी जो वतो सास्वतो वीज न वोवे राम ॥
कष्ट सहे निज पद बसे भोग अरुचि चिजगराग ।
सकल कर्म मोचनचहै कैसे मेटे दाग ॥
ज्ञान ध्यान धारण करो प्रतिज्ञण धर संतोष ।
निजस्वभाव जिस समय हो खुले ज्ञान धन कोष ॥
दर्शन ज्ञान स्वभाव को अन्तिम पौरुषसाध ।
हो उ शुद्ध पुरुषारथी केवल ज्ञान अगाध ॥
आदि अन्त वर्जित गहो चेतन लक्षण जीव ।
लोका लोक लखो सदा शुद्धा तम गुण लीव ॥
लोका शिखर शुभ स्थान है जहां जाय कर वास ।
अष्ट धरा पंचम गती परमातम पद पास ॥
तुम ने जो संयम लीया मधु मक्षी की रीत ।
तीन लोक का सार है यथा ख्यातचा रीत ॥
संयम की जो पूणता इस औसरन हि दिश ।
ज्यो तुम ने धारण किया त्याग करो मत रीश ॥
जीव अनन्ता काल से स्थानकलिया निगोद ।
पुण्य योग मानव भया मुनि पन लया सुबोध ॥

सुन्दर बुद्धि धमरत दर्शन ज्ञान चरित्र।
दुलभ मुनि पद पाय के जीरण तृण नहि मित्र ॥
पवन सलिल नहि संचरे रविशशि नाहि प्रकाश।
तहा भटके मन मकटा स्थिर करते ऋषि ताश ॥

हलधर बलधर चकधर कृष्ण गदाधर चन्द्र।
आतम ज्ञान विकाश ते पदवी पावे इन्द्र ॥
नर भव उत्तम पायके चक्री हलधर होय।
तीर्थ कर पदवी धरे शिवपुर पहुंचे सोय ॥
ज्ञान ध्यान में लीन हो समता धर संतोष।
निज स्वभाव में रम रहा मिटे कर्म सब रोष ॥
कोन कहे बुधिवन्त जो अन्य द्रव्य मम होय।
ज्ञानी अपने आत्म को परिग्रह माने सोय ॥
आप विभव मम परिग्रह जाने निश्चय सोय।
कैसे परको निज कहै बात अछंबो होय ॥
याते अपने आपको जाप जपो जयकार।
सब द्रव्यो से मोह तज हो ओ भव दधि पार ॥
परिग्रह है पर द्रव्य सब ममता तृष्णा नाहि।
मेज्ञायक सब लोक का निजानन्द निज माहि ॥
पर द्रव्यों से प्रीत जो तोमें भया अजीव।
में ज्ञायक इस कारणे मेरा परन सदीव ॥

इन्द्र जाल सम खेल है कुसी होत है राज ।
अपनो रूप निहार के साधो संवर साज ॥
जीव जात को अभय दे धरले संयम भार ।
इन्द्रादिक उत्सव करे बोले जयजय कार ॥
वरण पांच रस पांच है आठ फरस दो गंध ।
ये नहि है इस जीव के पुद्गल के है स्कन्ध ॥
शुद्ध जीव निश्चल दशा होत शुद्ध पर्याय ।
शुद्ध गुणातम रूप है कर्म मेल नहि पाय ॥
मूर्ति हीन यह आतमा जग में जीव अनादि ।
कर्म बंध संयोग ते नाम धरावत सादि ॥
छिदे भिदे जलमें पड़े नष्ट भृष्ट कहि होय ।
गलो बलोपर द्रव्य सब निश्चय नय नहि कोय ॥
खंड भंड चक चूर हो टूक टूक या नष्ट ।
पर माणू के पुञ्ज सर्व मेरे नहि है कष्ट ॥
व्याधी का घर पुण्य है पाप रोग मय स्थान ।
उपधि व्याधि इच्छा रहित ऐसा आतम ज्ञान ॥
जगत जाल से दूर है ज्ञाता ज्ञान स्वरूप ।
पाप पुण्य से दूर है निजानन्द निज रूप ॥
ममता पोट उतार के ज्ञानी अज्ञान नशाय ।
अज्ञानउपाधी मानता ज्ञाता ज्ञानी थाय ॥

धर्म ध्यान में लीन है ज्ञानी पान निरास।
पान उपाधि मानता ज्ञाता दृष्टा कास॥
इस प्रकार सब भाव में समता समरस पान।
निश्चय ज्ञायक भाव है निरा लम्ब गुणवान॥
उदय भोग उपजत सही विषणा हीण सदीव।
आगे की इच्छा नहीं समझे ज्ञान सदीव॥
अनुभव वेद कुभाव है तथा वेद्य ज्योभाव।
क्षण क्षण विनसे उभय यह चाहन ज्ञाताराव॥
बंध भोग के निमित्त में उपजत अध्यवसान।
जगत देह के नेह में राग न ज्ञानी मान॥
आतम रत नहि राग में रहे कर्म के वीच।
कर्म कीचलपटे नहीं जैसे कंचन कीच॥
रमत मूढ नित राग में पसे कर्म के बीच।
कर्म कालिमा लेप है जैसे लोहा कीच॥
भक्षण करे अनेक रस सचित अचित सब चीज।
शंख स्वेतता नहि तजे कोटि करो तजबीज॥
जानत भोग अनेक विधि सचिता चित्त विधान।
ज्ञान भाव ज्ञानी रमें कोन कहै अज्ञान॥
शंख सफेदी छोड़ के कृष्ण भाव उपलुब्ध।
ऐसे ज्ञानी ज्ञान तज परिणत होता मुग्ध॥

ज्ञानी भी इस भाव से ज्ञान पना दे छोड़ ।
मोह भाव रमतार है स्वतः ज्ञान मुख मोड़ ॥
जो कोई जन उदर बस करे भूप की सेव ।
वह उस को धन देत है भोगकरत नर एव ॥
ऐसे ही यह जीव भी कर्म करे सुख हेत ।
कर्म भोग उसके लिये नाना विधि के देत ॥
जो कोई जन कार्यवह नृप से बात जदेत ।
वह उस को देता नहीं भोग संपदा खेत ॥
ऐसे ही ज्ञानी जना सुख प्रति कर्म न काज ।
कर्म संपदा के लिये रञ्चमात्र नहि साज ॥
सम्यक दृष्टि निशंक है शंका भय सब खोय ।
सदा निजातम नरखते निर्भय निज पद जोय ॥
कर्म बंध आस्रव तजे मिथ्या दर्शन मोह ।
वह निशंक ज्ञातार है सम्यग दृष्टि सोह ॥
चाहत नाही कर्म फल सर्वधर्म मुख मोर ।
बांछा तज ज्ञानी भये सम दृष्टि शिर मोर ॥
जग वस्तु के भेद मे रखते समता भाव ।
ग्लानी तजनिश्चल भये सम्यग दृष्टि राव ॥
सकल भाव में मूढ तज वस्तु यथारथ ज्ञान ।
सो अमूढता शुद्ध है सम्यग दृष्टी मान ॥

सिद्ध भक्ति तल्लीन है दावे पर सब धर्म ।
उपगूहन गुण युक्त है सम्यग दृष्टी शर्म ॥
उन मारग जाता थका जिस को वोधे कोय ।
स्थिति करण पाले सही सम्यग दृष्टी सोय ॥
जो पाले वात्सल्य को रत्नत्रय पद चीन ।
आचार जउप झाय ऋषि सम दृष्टि गुण लीन ॥
ज्ञान ध्यान तप संयमी इन्द्रिय मन को रोक ।
पांचों ज्ञान प्रभावना करता अविचल मोख ॥
करे कर्म की निर्जरा भव भुजंग विष खोय ।
चिदानन्द चिद्रूप को समरण निशि दिन होय ॥
मे ज्ञाता सव वस्तु को चेतन मेरा नाम ।
इन विषया का फंद से मुझे नहीं आराम ॥
राग द्वेष दो संग से विघ्न करे वरताव ।
नीच गती में लेधरे धर्म कर्म विभाव ॥
दूर करो सब द्वंद को निज में निज कर वास ।
स्वातम संगत सारलो जग की छोड़ो आस ॥
तू राजा तिहूँ लोक को आतम ज्ञान निहार ।
भूल सुधारि सबे करो येही जगत में सार ॥
करो करम की निर्जरा भव पंजर विनाश ।
औसर उत्तम मिल गया ध्यान धरो निज काश ॥

मन वच काय समेट के एकाकी निग्रंथ।
जंगल में मंगल करो निज पद साधो पन्थ॥
आसा पासी तोर के जाय वसो बन खंड।
निजानन्द आनन्द को आह्वान न निज मंड॥
ज्ञान ध्यान धनु धारके मन मतंग को मार।
एकाग्रह निज भाव में रमोनिरंत रतार॥
आप आपको जान कर करो निर्जरा सार।
औसर उत्तम पाय के साधो संवर सार॥
अंतर वाहिर शुद्ध कर जिन मुद्रा को धार।
कर्म नाश शिव सुखलहो निज स्वरूप अविकार॥
उन्मुख मुद्राधार के निज स्वरूप रमजाय।
अन्त समय सन्यास धरलेश्याशुक्ल लहाय॥
मुनि मुद्रा आचरण कर भाव विगाड़ आप।
निंदा अपजस जगभरे दुर्गतिके संताप॥
ताको पूजे बंदना जोजो साथी होय।
दुर्गति के दुख भोग के कुकर शूकर होय॥
याते सांचे भाव मुनी लेश्याशुक्ल लहन्त।
ते पावे अहमिंद्र पद फिर शिव सुन्दरि कन्थ॥
जिन वाणी मारग रहै शुद्ध भाव थिर होय।
निजानन्द रस पान मे सांचे ज्ञानी सोय॥

भव संकट सब टार के प्रगट किये निज भाव।
ऐसे मुनिवर मान्य को भावों निज में भाव॥
धर दिगंबर दर्श को शील भाव निज धार।
भव्य जीव संबोध के पावो निज आधार॥
निजानन्द अनभव करो शुभा चार कर गोण।
शिव मारग रमते रहो कर्मास्त्र व तज मोन॥
जीव कर्म कर्ता नहीं भोक्ता रसन स्वभाव।
मूढ मती कर्ता वने ये अज्ञान विभाव॥
तज अपनी करनी करे भोग अरुचिम नमाहि।
सदाज्ञान मय आतम कर्ता भोक्ता नाहि॥
सम्यग्दर्शन दृढ धरो सम्यग्ज्ञान सजाय।
सम्यकचा रित तपकरो चउ आराधन पाय॥
चक्री केशव इन्द्र पद कवहू वांछे नाय।
अने का न्तमय वचधरे सीधो शिव पुर जाय॥
निर्भय वन वासी वने आतम ध्यानी गम।
सव जग की संगत तजे नही किसी से काम॥
मोह कर्म की सेन में पंचदशी कर हान।
तव होवे मुनि ज्ञान घन फिर होवे कल्यान॥
निज आज्ञा माने नही मन माने ही करेय।
कर्म बंध बांधे सदा भ्रमे चतुर्गा तिजेय॥

आतम ज्ञान विना नही मोक्ष धरा में जाय।
नही ज्ञान जिनमत विना जिनमत जिन विन नाय॥
मोक्ष मार्ग निर्मल लहो सम्यग्दर्शन मूल।
ज्ञान चरण धनु धार के करो कर्म निर्मूल॥
सुर नर नारक पशु गती चारो जग पर देश।
पंचम पद निर्वाण है यामें दोषन लेश॥
जो कवहू पाषाण भी तरे जलधि के माहि।
पश्चिम दिशा रवि उदय हो धर्ज विसारे नाहि॥
जिस गुरु के संबंध में पायो उत्तम तत्व।
गुण गावो उन का सदा जो आवे निज सत्व॥
अपने शुद्ध स्वभाव को निश्चय धारो आप।
आतम रुचि श्रद्धा न है सम्यग्दर्शन साप॥
सम्यक ज्ञान स्वभाव है जान पनो निजमाहि।
सम्यकचा रित चरण निज स्थिरता साधो साहि॥
रत्नत्रय निज रूप है दर्शन ज्ञान अमोल।
चरण मोक्ष का मूल है तिन विन मोक्ष नवोल॥
गिर शिर ग्रीसम समय में तरुतलवर्षा वास।
आता पन आसन करे जले कर्म की रास॥
इस संसार शरीर से होत उदास निरास।
धीरज धारे तत्व में आराधन निज पास॥

जग वासी की संगती ध्यान विघ्न को मूल ।
तिष्टे ध्यावत तत्व को समझे इस को शूल ॥
वन यासी के विषमतम घर वासी निज कूल ।
अपनी शक्ति प्रमाण से जप तप साधो मूल ॥
जड़ संगती त्यागन करो रहो ज्ञान अनु कूल ।
अनेकान्त एकान्त में ध्यान करो गिर चूल ॥
तरु को ठर सूना घरी नदी तीर सर तीर ।
कर्म तपावन कारणे श्रेणी साधो धीर ॥
विषम भूमि कानन विषे वुद्धि वन्त निवसन्त ।
चउ आराधन साध के पावे उत्तम पन्थ ॥
जोजाने निज रूप को अशुचिदेहते भिन्न ।
सो निकसे भव कूपते सिद्ध दशा संपन्न ॥
ये ही उत्ताम निर्जरा साधे उत्तम सन्त ।
भव वाधा सव मेट के शिव पुर पहुचे अन्त ॥

अथ बंध अधिकार लिखते दोह ।

बन्दों ज्ञानानन्द मय आतम ज्योती चन्द्र ।
वंध भाव विच्छेद से शुद्ध पयोनिधि कन्द्र ॥
वंध दिशा वर्णन दरे संसारी सव जीव ।
कर्म वंध सेलिप्त है भोगत कष्ट अतीव ॥

प्रकृति बंध स्थिति बंध है या अनुभाग प्रदेश।
चार भेद से बंध है वांधत पर पद केश॥
बंधर हित ज्यो आतमा सिद्धा लय स्थिर थाय।
अपने आप स्वरूप में रमत निरंतर राव॥
चिकन तेल तन लेपतेलपटे धूली रेणु।
रंग विरंगा होत है यों बंधन जिय तेणु॥
ताल केल के बृक्ष को छेदत नहि विश्राम।
सचित अचित छेदे सही बंध दिशा के काम॥
कारण एक अने कर करता है उपघात।
निश्चय देखो क्यो लगी धूल पुरुष के गात॥
चिकने तेल लेप से लगी अंग में धूल।
निश्चय जानो बंध को तन चेष्टा कृत मूल॥
मिथ्या दृष्टि अर्थं वस किया कान्डतल्लीन।
राग द्वेष उप योग से कर्म बंध नित कीन॥
मिथ्या दृष्टी आतमा वर्त मान अपराध।
रागादिकउपयोग में कर्म रूप रज बांध॥
चिकन तेल तन धोय के करे पुरुष व्यायम।
धूली रज लपटे नहि ऐसा उत्तम काम॥
ज्ञानी रमते आप में विविध योग संयुक्त।
रागादिक उपयोग बिन कर्म वन्ध से मुक्त॥

निश्चय लख चिद्रूप को तजतन चेष्टा मूल।
कर्म बंध सब झर परे भव पारा वर कूल॥
आयू क्षय प्राणी मरे हरे न आयू कोय।
मैं मारों पर जीव को अण होती किम होय॥
पर जीवन को रख सको मम जीवन पर रक्ष।
तेसंशय अज्ञान है ज्ञानी है प्रति रक्ष॥
प्राणी पूरण आयु में हरे न आयू कोय।
राख सको या मार दो नहि होनी किम होय॥
आयू पुर्ण प्राणी मरे राख सके नहि कोय।
रक्षा रक्षा कर सके ऐसे कभी न होय॥
सुख दुख पर को मैं करों ऐसा गावे गीत।
ते मोही अभीमान वस ज्ञाता है विपरीत॥
प्राणी सुख दुख के विषे कर्म वेदना कोय।
पर को सुख दुख मैं करो बृथा विवादी होय॥
ऐसे मिथ्या रमण में कर्म बंध दृढ मूल।
याते इन को त्याग दो तो पावे भव कूल॥
स्वामी हो तिह लोक का सब को जानन हार।
मिथामद से रहित हो सत्य वचन यह सार॥
विषदृष मिथ्या दृष्टि है माया व्यसनी चार।
खल पथ च्युत संगमतजो भजो सज्जना चार॥

ग्रीषम ऋतु के तपन से सरवर सूके नीर।
मछली मरते मोत से दुख पावे पख चीर॥
कर्म उदय सुख दुख मिले कर्म देय नहि कोय।
सुख दुख पावे आप कृत कर्म कार्य वन जाय।
अपने अपने भाव में सवहि प्राणी होय।
जैसी जैसी करत है तैसा ही फल होय॥
सुख दुख पावे आप कृत कर्म कार्य वन जाय।
पर मुझको सुख देसके नहि भाषी जिन राय॥
प्राणी मरते दुख सहै कर्म उदय पर मान।
मैं मारा वे मर गया यह विकलपअ ज्ञांन॥
मरे नही या दुखसहै कर्म उदय बल वान।
मारा गया न दुख मिला होनी हो सो मान॥
मारू या जिन्दा रखों ऐसा विकलप भाव।
पाप पुण्य संचित करे उदय भोग वे भाव॥
पाप पुणत बंधन करे रात दिवस यों जात।
राग द्वेष के भाव से भव भव गोता खात॥
छेदों या जिन्दा करों ऐसा दृढ श्रद्धान।
पुण्य पाप वंधक बने भव भव भ्रमत अजान॥
जीव मरो या मत मरो बन्ध दिशानिज होय।
मुख्य बन्ध कारण यह निश्चय नय है जोय॥

पहिले हिंसा कथन कर कहा अध्यवसान।
उसी तरहा असत्य भी चौरी आदि वखान॥
चौरी रूट कुशील में तथा परीग्रह जान।
इन के अध्यवासन में पुण्य पाप पहिचान॥
वाह्य वस्तु अवलंव में होवे अध्यवसान।
पर वस्तु में बन्ध नहि बन्धक अध्यवसान॥
पर को सुख दुख मे करू बन्धक तन छुड़ वाय।
ते सव रूटे कार है मोह स्यरूप दिखाय॥
मूढ मती तेरी भई निश्चय सत्य कहात।
मे पर को अपना करो बान्ध छोड़ के गात॥
अध्य वसान निमित्त से कर्म मेल है मीत।
मोक्ष मार्ग छटकाय के भटकत है भय भीत॥
मोक्ष मार्ग में तिष्ट कर आपा से कर प्रेम।
कर्म बन्द सव छूट ते परम पदारथ एम॥
छेदन भेदन वेदना बन्धन मारण त्रास।
रक्षा साधन मरण को कोई न करता कास॥
कर्म शुभा शुभ फलत है भोगत आपही आप।
वाते निरमल भाव रख निजानन्द निज साप॥
प्राणी कर्म मिलाप कर नरनारक पशु दव।
कर्ता कर्म अनेक विधि पाप पुण्य भोगेव॥

पाप पुण्य की परिणती भुगतावे संसार।
कहि यन सुख संसार में पावे दु:ख अपार ॥
धर्म अधर्म अजीव जिय काल अलोका लोक।
सब को अध्यवसान सम्फ करता अपनो थोक ॥
समय सार को सार कर तजो कर्म जंजाल।
फेर शुभा शुभ कर्म से लिपे नही निज माल ॥
बुद्धी मनीषा धिषणा भाव चित्त परिणाम।
एकार्थिक व्यवसाय मति अध्यवसानक नाम ॥
सकल कार्य व्यवहार का निश्चय करे निषेध।
सकल कार्य व्यवहार तज पावो उत्तम भेद ॥
निश्चय नय शिर मोर है साधन करो सुजान।
शिवपावे संशय नही यह भाषी भागवान ॥
संयम व्रततपशील शुभ सुमति गुप्ति चहुदान।
पाले वचन जिनेन्द्रका कहे अभव्य अज्ञान ॥
ग्यारह अंग प्रमाण तक ज्ञान अभव्य वरवान।
मिथ्य दृष्टी स्थान है ये अभव्य पहिचान ॥
शास्त्र पठन पाठन करे निजानन्द रुचि नाहिं।
ज्ञान ध्यान से दूर है मोक्ष तत्व रुचिहानिं ॥
मोक्ष मार्ग चाहे नही एकादश श्रुत ज्ञान।
पाठ पढे उपदेश दे ये अभव्य पहिचान ॥

एकादश श्रुत जानता वाता लाभा लोल।
निज श्रद्धा नहि जानता जैसे तांवा झोल॥
ये अभव्यलक्षण कहा जैसे कण विन घास।
तुषफटके कणनहि मिले यों विन श्रद्धा भास॥
जो प्रतीत श्रद्धा धरेगहै अन्यरुचिज्ञान।
धर्म भोग लवलीन है नहीं मिले निर्वाण॥
शब्द शास्त्र रचना रचे दर्श ज्ञान श्रद्धान।
जीवदया हृदये वसे ये ब्यवहार वखान॥
आप आतमा ज्ञान है दर्शन चरण निधान।
पच्च खान निज में वसे शुद्ध समाधी मान॥
ध्यान अवस्था आप है आप आपमे लीन।
पर वस्तु से अलग है मोक्ष मार्ग परबीन॥
फटकमणि मय माल है स्वयं नपलटे रंग।
जैसाका तैसा लिखे पावे मोक्ष अभंग॥
फटकमणि के नहिलगे लेपकालिमा अंग।
स्वयंस्वभाव तजे नही कभी न होवे भंग॥
कञ्चन मय निज आतमा शुद्ध स्वभावी जान।
फिरे नही संसार मे लेप का लिमा हान॥
अन्य वस्तु संयोगते लगे का लिमा अंग।
फटिकमणि महा शुक्ल है स्वयं नपलटे रंग॥

ज्ञानी शुद्ध स्वभाव में स्वयं नपलटे रूप।
राग भाव रंजित हुए रमता राग स्वरूप॥
स्वतस्वभावी आतमा राग द्वेष नहि लेश।
विषय कषाय विराग है कर्ता पन नहि केश॥
राग द्वेष मोहादि से होते है निज भाव।
कर्म बन्ध बंधान है फुनि फुनि राग रजाव॥
राग द्वेष या मोह से पर परणति लपटाय।
कर्म बन्ध संचित करे चेतन राग रमाय॥
प्राणी राग रझाबते संचित कर्म अथाय।
चारगती के भ्रमण कर पावे नर पर याय॥
मानुष गति को पाय के वर्ते राग कषाय।
तो तुम समझो चतुर नर जल में लागी लाय॥
नर भव उत्तम पाय के साधो संयम सार।
पंचमहा व्रत आदरो सुमिति गुप्ति शुभ सार॥
दोय वीस परिषह सहो भावो भावन सार।
दश लक्षण धारो सदा रत्नत्रय गुण कार॥
निश्चय रत्नत्रय धरो तीन गुप्ति आधार।
बारह विधितप आचरो ध्यान अग्नि निज जार॥
विधि नाशन उपयोग यह साधो सन्त महान।
एका की निभय रहो तज प्रमाद भयग्लान॥

चायक श्रेणी साज के ध्यान शुकल धर धीर।
बारह गुण थानकलहो मोह चयेक खीर॥
ज्ञाना वरणी पंचको तथा दर्शनी नोय।
अष्टाविंशाति मोह को अंतराय पण खोय॥
नरनारक तिर्यंचकी आयु कर्म कोनाश।
नर तिर्यञ्च गती नशे अंन पूर्वी नाश॥
साधारण सूक्षम नशे आतापन उद्योत।
स्थाननव जाती चार को नाश करे जिन होम॥
तेरह में स्थानक गये केवल लब्धिनाथ।
दिप्प मान भानों इव चार घातिया जाय॥
सर्व कर्म त्रेषटनशे केवल ज्योती जोय।
स्यादवादवाणी भणो कुमति विनाशक सोय॥
नरभव उत्तम पायके श्रावक कुल अवतार।
निजानन्द को साध के उतरो भवदधि पार॥
तीर्थं कर गण धर ऋषी चक्री हरिवलदेव।
चतुर निकायक देव सब करे भक्ति वर सेव॥
ध्यानी ताको ध्यान धर पावे केवल ज्ञान।
अविनाशी पद पायके करे सकल कल्यान॥
जिनवाणी उत्तम खिरे हरे जगत की पीर।
वनवासी वन में रमे घर वासी भय भीर॥

अन्न वस्त्र जल औषधी पुस्तक दान करेय ।
हरे अशुभ जंजाल को नर भवलाहो लेय ॥
भोजन भेषज अभय पन लखे पढे निज ग्रन्थ ।
दान देय धीरज धरे पावे निज गुण पन्थ ॥
मोह कर्म को सात है गई अलप संसार ।
मुनि केलहुरे वीर है श्रावक पड़िमा धार ॥
समदृष्टी गुण अतुल श्रावक नर पशु होय ।
मुनि ब्रत श्रावक धारते नर भव उत्तम होय ॥
दानशील तप ध्यान कर समय करो व्यतीत ।
जीनवानी काने सुनों मन को करो पवीत्र ॥
अर्चो श्री जिन देवकी करो दिगंबर सेव ।
समता भाव सदा धरो सुख पावो स्वमेव ॥
जिनवाणी जिन तीरथाश्रावक साध सार ।
करे निरंतर मानधा भरे पुन्य भंडार ॥
मुनि सेवा से शुभ गती समदृष्टी अविकार ।
मुनि सेवा सम सुख नहीं तीन भुवन मे सार ॥
भैया उत्तम व्रत धरो कर्म कलंक निवार ।
मानवढाई कारणे अल्प पुन्य मत धार ॥
जप तप पूजा पाठ को करे निरंतर सार ।
शुभगति को कारण कियो भावों के अवार ॥

दानशील तप ध्यान से मन को करो पवित्र ।
सब जीवन को समलखो आतम ध्यान चरित्र ॥
वज्र जंघ नृप श्रीमती दान तने पर भाव ।
प्रथम भये आदिश्वर नृप श्रेयांस स्वभाव ॥
नर भव उत्तम पाय के निज से निज आराध ।
चार गती दुख छूट के शिव पुर साध्यो साध ॥
ग्रीषम ऋतु के तपन से सरवर सूके नीर ।
मछली मरते मोत से दुख भुगते पख चीर ॥
कली काल में सज्जना होते इक द्वयतीन ।
दुष्ट पुरुष के फंद से समय होत है हीन ॥
करण कृपाण सजाय के मिथ्या दर्शन मार ।
चतुकषाय भगाय के अनुभव रस उर धार ॥
स्वपर विवेक विकाश त पावे निज थल राज ।
रत्नत्रय सव साज के मोक्ष धरा को राज ॥
द्रव्य भाव के भेद से अप्रति क्रमण विधान ।
ये न जहां उपदेश ना जीव कर्ता मान ॥
द्रव्य भाव के भेद से दोय अप्रत्याख्यान ।
येन जहां तहँ देशना जीव अकर्ता मान ॥
जब तक ये द्वय भाव है तबतक कर्ता राम ।
द्रव्यभाव दोनीर है नहि कहीं विश्राम ॥

अधः कर्म आदिक सवे पुद्गल द्रव्यी दोष।
इन को ज्ञान नही करे महादोष को कोष॥
अधः करम महा निद्य है ये कर्मों की खान।
मुझसे कृति किम होस के सदा अचेत वान॥
कर्म बंध के रूप को जान कार संतुष्ट।
मोक्ष मार्ग से दूर है करे चतुर्ग तितुष्ट॥
याते तजिते बंध को रांगरोष परि हार।
मोह मान आवे नहीं पावे शिव पुर सार॥
ऐसी बंध दशा यहाँ भुगते चउ गति जीव।
याते हम चाहें नही हम चाहै निज पीव॥
चेतन वन्त अनन्त गुण सदा अकेलो एक।
आप स्वरूपी आप है समय सार सव देख॥
मंगल रूप जिनेन्द्र है कुन्द कुन्द मुनिराज।
द्वादशांगवाणी भणी भव्य जीवो के काज॥
पंच परम पद शुद्धमय मंगल रूप अनूप।
शरणो साधो सर्वदा परो नहीं भव कूप॥

अथ मोक्षाधिकार—मंगलाचरण

तीर्थ कर भगवान के नमो पंच कल्याण।
मोक्षतत्व वरणन करो धारण से निर्वाण॥

उपादान बल वान है आतम मूल स्वभाव।
उपादान जग के विषें जाने सम्यक राव॥
उपादान का हुकम है निमत सुणो बलवान।
तू निमित्त परयोग ते करे कार्य अपमान॥
निमित कहे में निमित हूँ जग रचना हम जान।
उपादान की बात भी पूछे नाहीं आन॥
उपादान विन निमित ते करन सके जग काज।
ज्ञायक सम्यक कार्य को निकट भव्य घर साज॥
केवल ज्ञानी आदि जो निकट भव्व निज मान।
सा ज्ञायक सम्यक लहै वह निमित्त बलवान॥
हिंसादि अपराध ते जीव नरक में जाय।
जो निमित्त नहि कामको क्यों इस को वहगाय॥
हिंमा में उपयोग रत सदा रहे निज राव।
जीव नर्क में जाय है मुनि जन नाहिंक दाव॥
दयादान जपतप विषें जीव सुखी या देख।
ज्योनिमित्त झूटो रहै क्यों सर धेजग रेख॥
दयादान पूजा सवे पुन्य बंध करतार।
जब अनुभव रस राचते तहं यह बंध विचार॥
यह बात पर सिद्ध है सौच देख जगमाहिं।
मानव पद के निमित विन कटे कर्म शिवनाहिं॥

देह पींजरा जीव को रोके मोक्ष उपाय।
उपादान की शक्ति से मुक्ति मिलत है राय॥
उपादान शक्ती बढ़े रोक सके नहिं कोय।
उलट पलट बादल वहै वर्षा वर्षे सोय॥
जो देखी भगवान ने वही सांची होय।
इस में नहि संदेह है होरण हार जो होय॥
शक्ति विन इस जीवके अंधकार मय भाष।
शशि सूरज के उदयमें अंधकार का नाश।
जलकी शोभा कमल है जयध्वनी शोभे क्षेत्र।
आतम शोभा ज्ञान है उपादान द्वय नेत्र॥
उपादान से आतमा पावे निज पद राज।
अनुभव शोभे आतमा जव सुधरे निज काज॥
दर्शन दृष्टी आतमा आतम ज्ञान महान।
निजानन्द आचरण है उपादान शिव थान॥
स्वस्वभावमे स्थिर भये आतम आतम रोक।
निजानन्द में लीन है निरालम्भ निज थोक॥
पंच परम गुरु ध्यान में सालंभ न है सोय।
पुण्य बंध वह साल है निमित स्वर्ग को जोय॥
जो पद पर से आप को निरालंभ निज होय।
निराकार निर्मोह का आलंवन कर सोय॥

शोभा अपरंपार है तीरथ परम पुनीत।
ध्यावत पाप पलाय है शिव सुन्दरि को मीत॥
केवल ज्ञान विकाशते अविनाशी पद आय।
अष्ट कर्म को नष्ट कर अष्टम धरा लहाय॥
आयु कर्म के नाशते शेष कर्म सब नाश।
एक समय में शीघ्र ही जाय करे शिव वास॥
जन्म जरा मरण नही कर्म रहित अति शुद्ध।
अक्षय अविनाशी भये निर्मल ज्ञान सुबुद्ध॥
बाधा रहित अछेद है इन्द्रिय जयें अगम्य।
अनुपम अविचल पद लयो गुण अनन्त बहुरम्य॥
पुण्य पाप परनाल से दूर भये भगवान।
मोक्ष धरामे शोभते ऐसे सिद्ध महान॥
भव समुद्र के बीच में डूबे मेरी नाव।
राश पकड़ कर खीच लो तारण तरण प्रभाव॥
कारागर में पसर है बन्धन अरु जंजीर।
तीव्र मंदतहा कालकी भुगते सब दुख पीर॥
जो बन्धन काटे नही बंधन छूटे नाहिं।
बहुत काल तक थिर रहै जिन वाणी यम गाहि॥
आतम गम अनादि से रागादिक भरपूर।
राग द्वेष को नाश कर पावो गुणहि जरूर॥

जीव बन्ध चितवन करे कर्म बंध है मुक्त।
बंध छेद सुलझे तहां तब ही पावे मुक्त॥
आप आपको सुमरकर समरस पीवे नीर।
कर्म बंध सब झड़ पड़े शिवपुर पहुँचे धीर॥
करम कुदल अरिदल मले युगपत निर्मल ज्ञान।
सूक्ष्म रूप अनूप है शुद्ध निरंजन भाण॥
अन्तर शत्रु जीत के भये सिद्ध भगवान।
शुद्ध निरंजन गुणमणी नित्यानन्द निधान॥
गणधर गावे गान से और सुरासुर इन्द्र।
तीन लोक पूजत चरण तारण तरण जिनेन्द्र॥
शुद्ध जीव निश्चल दशा भई शुद्ध पर्याय।
अथिर द्रव्य पर्याय है हान वृद्धिमय थाय॥
उत्पति नाश स्वरूप हैं ज्ञानाकृत है भास।
ज्ञेय तीन विधि परनवे थित उतपत्ती विनाश॥
शुद्ध गुणातम रूप है सर्व कर्म मल मुक्त।
व्यय उतपति थिति रूप है सदा धर्म संयुक्त॥
चरम देह से समझिये हीन कछुक परदेश।
लोक अग्र शिवपुर बसें परम जैन परमेश॥
सब परणति छुटकाय के भई सिद्ध परयाय।
शुद्ध ज्ञान निश्चल दशा निजानन्द में आय॥

मूर्तिहीन चिदातमा आप आपमें पाय ।
कर्म बंध संयोगते संसारी सब काय ॥
बंध रहित यह आतमा उरध गमन कर जाय ।
एक समय में सरल गती लोक शिखर थिरथाय ॥
जिमजल तूंवी लेप बिन उरध गमन कर जाय ।
पुद्गल परचय रहित जिये एक समय शिव पाय ।
बीज अरंडी बन्ध बिन धूप धाम खिल जाय ॥
तेसे ही यह आतमा बंध रहित शिव पाय ।
जैसे दीपक पवन बिन सीधी गगन में जाय ॥
तैसे ही यह आतमा शिवपुर पहुंच राय ॥
पूरव के परियोगते चाक चक्र चल जाय ।
तेसे ही यह आतमा मोक्ष धरा में थाय ॥
कर्म बंध से आतमा वरणादिलपटेय ।
भोगत भोग अनेक विधि अन्त न आवे छय ॥
यथा बंध जो छेदता होता आतम मुक्त ।
जो जैसी करणी करे तैसा फल संयुक्त ॥
बन्ध स्वभाव पिछान कर आप रूप निज रूप ।
ते विरचे संसार को रमते आत्म स्वरूप ॥
जगत काय संवेगरत निज में निज कर लीन ।
ते काटे भव बंध को होय करम रज हीन ॥

कर्म बंध निश्चय छिदे लक्षण लेय मिलाय।
पुद्गल परिचय त्यागते भिन्न भिन्न होजाय॥
कर्म बंध विच्छेदते लक्षण उत्तम आय।
रागादिक बंधन छिदे निर्मल आप लखाय॥
प्रज्ञा छीणी साधकर चोट निराली मार।
भेद ज्ञान घण साधकर शुद्ध काम कर लार॥
बन्ध अनादि आतमा पुद्गल के तट रूप।
पुद्गल परिचय त्याग दे हंस दूध जल रूप॥
कर्म चंड विधि बंध है भोगत आतम राम।
सरल वक्र चलते रहै संसारी का काम॥
वरणादिक पलटे सही एक समय परमाहि।
सदा पांच गुण पाईये इन्द्रिय गोचर नाहि॥
वरण पांच रस पांच में एक एक ही होय।
एक गंध दो गँध में आठ परस मे दोय॥
ये परमाण पंच गुण आदि मध्य अवसान।
पुद्गल रूप स्कंध को कारण रूप बखान॥
नभ धर्मादिक द्रव्य में पुद्गल है इक रूप।
अणुरूपी पुद्गल दरब छेद भेद नहि रूप॥
अग्नि जलादिक जोग से होत कभी नहि नाश।
ऐसी पुद्गल वर्गणा भरी गगन घन राश॥

यथा एक मंदिर विषे नाना दीप धराय।
बाधा कुछ उपजे नही ऐसे सवही समाय॥
नभ प्रदेशाके अंश में पुद्गल बंध अनेक।
निराबाद निव से सही ज्यों अनन्त त्यों एक॥
रागादि परिणाम से संचित चेतन कर्म।
तिन भावन को नाम यह भाव बंध है मर्म॥
मिथ्या अविरत योग है और कोप परमाद।
चेतन का परनाम को भावास्त्रवरखयाद।
चेतन निज परदेश में रचते कर्म पुरान॥
कर्म नये संचित करे दरव बंध सो जान॥
यह संसार विचित्रता मात पिता सुत नार।
कोइ न साथी जीव का होय एक निज कार॥
जीव वन्ध निश्चय हठे लक्षण सर्व मिलाय।
छिदे वन्ध रागादि सब निर्मल आप लखाय॥
शुद्धातम निज रूप है निज बुद्धि कर जोय।
पर भावों से भिन्न हो निज दर्शन कर सोय॥
शुद्ध भाव में रमण कर शुद्ध आतमा जान।
सर्व सार परिणाम यह ज्ञाता दृष्टा मान॥
अपनी संपत्त पास है शुद्ध ज्ञान कर जान।
पर संपत परित्याग के बनो सिद्ध भगवान॥

शुद्धातम निज भाव है शुद्ध बुद्धि ते होय।
कर्दम जल निर्मल करे फल निर्मली सोय॥
बुद्धी से निश्चय करो में चेतन निज नेन।
शेष भाव मेरे नही वीत राग जिन वेन॥
समता रस से भर रहा ज्ञाता दृष्टा ऐन।
शेष भाव मेरे नहीं यही उत्तम वेन॥
प्रज्ञा करि समझे हमें ज्ञाता दृष्टा राम॥
शेष भाव मेरे नहीं ऐसा उत्तम काम।
चोरी कृत अपराध रत जो नर कर्ता होय॥
गुप्त फिरे शंका धरे पकड़ न लेवे कोय।
निर अपराधी जीव के शंका कभी न होय॥
अपने को पहिचानता आराधन मे सोय।
सरण हरण प्रतिक्रमण निन्दा गर्हा स्थान।
शुद्धि निवृत्ति धारणा अठ घट अमृत जान॥
सरण हरण नहि प्रतिक्रमण निंदा गर्हा हान।
शुद्धि निवृत्ति धारण नहीं अठ घट अमृत जान॥
जो नही जग में करत है बन्धन नहीं अवतार।
सुखी रहे शाश्वत सदा अजर अमर पद धार॥
चिदानन्द आतम पती दिना नाथ प्रतिपाल।
आतम गुण भण्डार हो मब पर दीनदयाल॥

धन्य जिनेश्वर जग धनी जगन्नाथ शिरताज।
धर्मामृत वर्षा करी शीचे सब जन साज॥
नर भव उत्तम पाय के जन्म जराज्वर जार।
साद्यो शिव सुख साज को निजानन्द अवतार॥
तीन भुवन के नाथ हो शिव लक्ष्मी भरतार।
धर्म तीर्थ धारण करो वन्दो वारम्बार॥
पूरण ब्रह्म निवाश हो पूरण ज्ञान विकास।
स्वयं बुद्ध शंभू सही धर्म तीर्थ शिव वास॥
धर्म तीर्थ करतार हो सब तत्वों में सार।
ब्रह्म ज्ञान में लीन हो गुण गण धर नहि पार॥
मुनि जन ध्यावे ध्यान में अपने हित के काज।
जन्म जरा को जार कर पावे निज गुण राज॥
गुण अनन्त पर्याय युत द्रव्य अनन्तानन्त।
युग पत झलके ज्ञान में पावन परम महन्त॥
शिवलक्ष्मी के नाथ हो गुण गावे श्रुत कार।
मुनिवर कविवर मान्य हो सदा आत्म अविकार॥
द्वादशांग वाणी भणी गण धरलीनी धार।
भव्य जीव बोधे घने भव दधि उतरे पार॥
नमे मुनीश नरेशपती ब्रह्म ऋषी सब देव।
अह मिन्दर निज ध्यावते सब करते है सेव॥

भिन्न भिन्न वस्तु लखे भये विश्व भरतार ।
तुम सम शक्ति न और की उत्तम हो अवतार ॥
प्रबल शक्ति तुम मे लसे जीते रिपु बलवान ।
निजानन्द रमते रहो शिव लक्ष्मी कल्यान ॥
तीन भुवन के ईश हो शरणागत प्रतिपाल ।
तारण तरण जहाज हो कभी न खावे काल ॥
स्वयं सिद्ध शंकर सही बोध तीर्थ करतार ।
धर्म तीर्थ धारण करयो नाव लगावो पार ॥
पूरण ब्रह्म महेश है अतुल वीर्य वलवान ।
एक समे में जावसे सिद्ध शिला निज थान ॥
तीन भुवन समरन करे भरे पुण्य भंडार ।
कोटि सूय छवि हीन है मद मिथ्यात्व निवार ॥
तुम समान नहिं विश्व में परमेश्वर परधान ।
जगत मान्य पद वीधरो पूरण ज्ञान निधान ॥
विश्व पती भगवान हो शिव मारग दरसाय ।
भये सिद्ध परमातमा महिमा किम हम गाय ॥
जग नायक जगदीश हो शिव मारग समझाय ।
सिद्ध भये सुख भोग वे काल अनन्त रहाय ॥
निज गुण निज पर्याय में सदा रहो निर्वेद ।
जिन गुण अपरंपार है जिन वर जाने भेद ॥

शिव शङ्कर परिब्रह्म हो रहित परिश्रम खेद ।
आतम ज्ञान सदा लखो युग पत जानो भेद ॥
अक्षर विन बाणी खरी सर्व अर्थ अव्यक्त ।
निर्मल उज्जल पदल यो निज स्वभाव में रक्त ॥
सत्य प्रकाशक एन हो पाप पंक नहि लेश ।
गौर श्याम नहिं वर्ण है राग द्वेष नहि भेश ॥
मुनि जन उत्तम मानते सार वचन परिमाण ।
ध्यानाध्ययन निवाश से करे पाप मलहाण ॥
संशय विभ्रम मोह मद नाश करयो निर्मूल ।
केवल ज्ञान विकाश कर वसे शिवालय चूल ॥
जिन वाणी सत्यार्थ थी अर्थ महा गम्भीर ।
मोह क्षोभ मेटन सही हरी सवन की पीर ॥
उस शासन के अधि पती जगत जीव भरतार
शिव मारग दर्शाइयो भवि जन लीने लार ॥
सब विद्या परमेश हो सुमति नार भरतार ।
मोक्ष लक्ष्मि के नाथ हो गुण अनन्त अवतार ॥
आतम रस निज पान से संत जनो संतुष्ट ।
निज पुरुषारथ साधके सिद्ध भये निज पुष्ट ॥
शिखर शिरोमणि जगत के सिद्ध अनन्ता नन्त ।
मुनि जन निज समरण करे होत भवो दधि अन्त ॥

सुर नर माने बचन तुम निज आज्ञा शिर धार।
सम्यग्दर्शन शुद्ध कर भव से पावे पार ॥
वस्तु अपरंपार है झलके एक हो काल।
ज्ञान राज राजा भयो नमों सिद्ध तिहु काल ॥
सकल धर्म को सार है सम्यग्दर्शन बीज।
ताको तुम धारण कियो ज्ञान चरण शिव रीझ ॥
गुण स्थानक चौथे विषेलीनोहो तुम लार।
फल पायो चौधमविषे शिव रमणी भरतार ॥
पूजे तिनके चरण सब शैल शिखर पर जाय।
वार वारवन्दन करे गुण गावे हर षाय ॥
जे वन्तो वरतो सदा जैन धर्म सुख देन।
वारवार बंधन करो मोक्ष तत्व द्वयनेन ॥

मं० ॥ अथ सर्व विशुद्धि अधिकार प्र० ॥

समो सरन शोभित सदा श्री मंदर भगवान।
कर्म काट जासी शिवे नमो चरण निज ध्यान ॥
कर्ता पन आतम नही सिद्ध करे दृष्टान्त।
चतुर होय सो समझ लो अपने गुण सभ सान्त ॥
उपजे जो जिस गुण सहित द्रव्य उसी का नाम।
कंठीकट पर्याय वहु सवही सुवरण काम ॥

चेतन जड़ परिछा मले कहै शास्त्र के माहि।
उन परिणामों से मिले जड़ चेतन जग मांहि॥
याते उत्तम आतमा स्वयं शक्ति कर सिद्ध।
पर द्रव्य न को नहि चहै पावे निज गुण रिद्ध॥
कर्म साथ कर्ता वने कर्ता आस्त्रवफन्द।
अन्यरीत सिद्धि नहीं यह समझो गुण वृन्द॥
अपने गुण कर उपजता उन से जूदा नाहि।
उन गुण मययह द्रव्य है कनक कटो रीथाहि॥
उन परिणामो से मिले जीवाजीवहि द्रव्य।
चेतन गुण है आतमा कर्मा दिक उपटन्त॥
प्रकृतिनि मित्त ये जानिये उत्पन्न हो विनशन्त।
चेतन के परिणाम से उपजे विन से सोय॥
दोनों के संबंध से बंध निमित है होय।
बंध दोय मे इस तरह निमित परस्य रजान॥
उसी जीव की प्रकृतिक से कर्म बंध जिया मान।
जव तक मिथ्या मतरचे लगे अशंयम रंग॥
तव तक हि यह आतमा तजे प्रकृति संग।
जब त्यागे यह आतमा कर्म शुभा शुभ स्थान॥
बन्ध बिनशतेसमय इक ज्ञाता दृष्टावान।
कर्म उदय के भाव में करे कर्म फल भोग॥

ज्ञाता कर्म विपाक में रमे न साधे योग।
उदय प्रकृति स्वभाव में कर्म फंद पस जाय।
भोगे चउगति की व्यथा जनम मरण वहु पाय॥
गहे स्वभाव वदले नहीं मरण होत पर्यंत।
स्वांन पूंछ टेढ़ी रहै कहते हैं जग सन्त॥
त्यों स्वभाव नहि त्यागते पढ अभव्य नव अंग।
जो पीवे पय शर्करा विष नहि तजत भुजंग॥
निर्विष नाही होत है काल रूप विकराल।
सब जीवन के साथ है समय समय के काल॥
याते अपन कार्य को साधलेह जग भ्रात।
मानुष भव दुर्लभ मिल्यो पर संपति जगजात॥
ज्ञानी है विराग्य रस कर्म फलों का ज्ञात।
खट्टा मीठा विविध विधि भोक्ता वनेन भ्रात॥
ज्ञानी कर्म अनेक को करे न भोगे आप।
जाने केवल कर्म फल पुण्य वंध सन्ताप॥
चक्षु जिस समय जानते कर्ता हर्ता नाहिं।
ज्ञानी भी ऐसे कहा बन्ध मोक्ष के माहिं॥
ज्ञानी ज्ञान विषें रमें हृदय नेत्र ले खोल।
लोक चराचर वे लखे सब तत्वन को मोल॥

तीन लोक तिहु काल के सकल पदारथ जान ।
समय येक में ही लखे चेतन गुण बलवान ॥
लोक भणे कर्ता करे सोही होता न्याय ।
नर नारक सुर सिंह सब उनकी है वुन्याय ॥
लोक यती का एक मत भेद न दिसे ओर ।
कर्ता पन छांडे नही बृथा मचावे सोर ॥
समय सार मुनिराज का वचन अनुपम धार ।
आतम जोत जगाईये उतरे भव दधि पार ॥
लोकज नोका एक मत भेद नदी से कोय ।
कर्ता हर्ता आप है ये उत्तम वच बोय ॥
ज्ञानी जन का एक मत चैतन सत्य स्वभाव ।
कर्ता हर्ता कौन है है निश्चय निजभाव ॥
जो चेतन न मानते वह संसारी जीव ।
कर्ता पन राचे सही भव भव भ्रमत सदीव ॥
ज्यो व्यवहारी आत्मा आरत में रत जात ।
मन माना मत मानते मुक्ति न आवे हात ॥
संसारी व्यवहार वस मेरा है पर द्रव्य ।
निशि वासर रटता रहे क्या होवे होतव्य ॥
ज्ञानी निश्चय यों कहै मम अंशन पर द्रव्य ।
जलो गलो या परि हरो में ज्ञाता निज द्रव्य ॥

जो कोई ऐसे कहै ये मेरा घर बार।
उसका खाली मोह है नहा तुषों मे सार ॥
ज्ञानी जाने ज्ञान से पर वस्तु हम नाहिं।
हम तो हम के हमी है पर है पर यश मांहि ॥
जो नहि माने मानवी माने एक स्वभाव।
उसके पावे ममत मत मिथ्या दर्शन राव ॥
कंचन काचसमानता पर वस्तु का त्याग।
एक भाव से देखता आतम ज्ञानी भाग ॥
दुर्लभ है संसार में मानव भव अवतार।
अनन्त काल मे प्राप्त है सम्यग दर्शन सार ॥
एक वार इसको गहे मोक्ष अवसि हो जाय।
पायो उत्तम समय यह मत चूको इस काय ॥
सम्यग दर्शन के विना जैन पना नहि होय।
दुर्लभ से दुर्लभ अति आतम स्वभावी सोय ॥
सम्यग दर्शन धार कर ज्ञान भानु परकाश।
संयम तप चारित्र सभ्भ पावो निज गुण कास ॥
फिर माता के उदरमे बंदी ग्रह नहि होय।
एक क्षणाक माधो इसे भव अनन्त क्षय होय ॥
कृत्य कृत्य कहते इसे वीत राग पद पाय।
केवल ज्ञान विकाश कर सीधो शिव पुरजाय ॥

आत्म तत्व को समझना सरल सहज व्यवहार।
अनभ्यास के योग से कठिन दर्शते कार॥
कारीगर नहि कर सके दोय घड़ी में भीत।
आत्म तत्व के भेद को समझ सकत है भीत॥
आठ वर्ष कै बाल जन मनबोझा नहीं लेत।
सत्य समझ के साधते केवल ज्ञान लहेत॥
स्वतन्त्रता धार निज सम्यक ज्ञान उपेय।
पुरुषारथ तुम साथ है सिद्ध सिंहासन लेय॥
समय सार में कहत है पुद्गल परिचय भिन्न।
दोयघड़ी अनुभव करो निजानन्द निज चिन्न॥
कोन जीव पर्याय से नष्ट होय है नाहि।
निज कर्ता या अन्य है सो भी दृष्टि मांहिं॥
कर्ता सो नहि भोगता ऐसा जो मत होय।
करे और फल भोगवे यह बनती नहिं कोय॥
चेतन कर्ता भोगता मिथ्या मगन अजान।
नहि कर्ता नहि भागता निश्चय सम्यक वान॥
जो कर्ता सो भोगता यह यथा वत वेन।
सुख दुख आपद संपदा भुंजे आप ही लेन॥
जो वस्तु जैसी रहै तासों मिलत न कोय।
जीव अकर्ता कर्म को यह अनुभव है सोय।

जो दुरमति अज्ञान वस स्वपर भेद नहि जान ।
माया मगन अज्ञान से करता माने तान ॥
यह मिथ्या त्व अज्ञान से लखे न जीव अजीव ।
तेई भावत कर्म की कर्ता होय सदीव ॥
निर्विकार करणी करे भोग अरुचि घट माहि ।
ऐसा साधक सिद्ध सम कर्ता भोक्ता नाहि ॥
निज निज भाव क्रिया सहित व्यापन व्यापक काय ।
कर्ता पुद्गल कर्म को जीव कहां से होय ॥
शुद्धातम अनुभव जहां शुभाचार नहि होय ।
करम भरम मारग विषे शिव मारग शिव सोय ॥
निज स्वभाव रत समकिती परम उदासी होय ।
सुथिर चित्त अनुभव करे निज पद परसे सोय ॥
अज्ञानी माने यह करे दोय जड़ जन्तु ।
तो दोनों फल भोगवे इसमें कोइ न तन्तु ॥
यदि कर्म अरु जीव भी करन लगे मिथ्यात्व ।
फिर पुद्गल मिथ्या त्वहै ये ही असत विख्यात ॥
कर्म ही है अज्ञानता कर्म ही ज्ञाता मान ।
कर्म भुलावे जीव को तथा जगावे आन ॥
सुख दुख कर्म विपा कहै कर्म ही भूप महान ॥
कर्म ही मिथ्या मतर चेत था असंयम जान ॥

कर्म घुमावे जगत में उर्द्ध व मध्य पाताल ।
इस विधि कर्म प्रताप से बने शुभाशुभ ख्याल ॥
कर्ता हर्ता कर्म है देता लेता कर्म ।
सकल जीव इस कारणे समझ अकर्ता मर्म ॥
पुरुष वेद नारी चहे नर को नारी वेद ।
सदा सर्वदा कहत है चारो बोले वेद ॥
इसी मर्म को जानते ब्रह्म ऋषी गुण भेद ।
कर्म विलाषी कर्म है ऐसा न्याय निवेद ॥
सदा काल आगम विषे व स्तु असंख्य प्रदेश ।
हीन अधिक नहि कर सके यह सामर्थ न लेश ॥
जीव स्थान न विस्तार से तीनों लोक प्रमाण ।
उस प्रमाण को कौन विधि करे हीन अधिकान ॥
अथवा मानो नित्य ही ज्ञाता ज्ञान स्वभाव ।
तो भी फिर तुम ने कहा कर्ता पना अभाव ॥
आतम के आनन्द को जरा पृथक कर देख ।
मोह फंद सब कटत है यह स्वभाव का लेख ॥
द्रव्य दृष्टि धारण करो पुद्गल चेतन भिन्न ।
निज स्वरूपको समझकर आपहि आप अभिन्न ॥
परी पूर्ण तिहु काल में अवस्थित एकही रूप ।
फिर शरीर पावे नहीं चिदानन्द चिद्रूप ॥

मिथ्या मान्य भगाय के सम्यग दर्शन साथ।
दृष्टी मात्र स्वभाव में आप आपको पात ॥
द्रव्य दृष्टि में भाव नहीं भवका भाव विनाश।
आत्म स्वभाव की मानता वर्तें निशि दिन काश ॥
पर पदार्थ संबंध से रहित होत निज चित्त।
एक समय परि पूर्ण रत मुझे मान्य हे तत्त्व ॥
पर द्रव्यो से प्रेम कर सप्तमनरक करेय।
सिधा साधे आतमा उत्तम निज पद पेय ॥
पर वस्तु अपणाय के जगमे गोता खाय।
पाप पुंज संचित करे नरक निगोदल हाय ॥
याते ज्ञानी जानते पर वस्तु मम नाहिं।
जगत जीव पर द्रष्टि से कर्ता पन अपनाहि ॥
अब समझो अज्ञान में कर्ता पन का लेख।
परको कर्ता पन पनु स्याद वाद नहि देख ॥
कर्ता कर्म मिथ्यातबसमान लहै जगजीव।
मिथ्याती पुद्गल समझे निर्मल जीव सदीव ॥
चेतन लक्षण आतमातन लक्षण जड़ जान।
तन से ममत मिटाय के आप आप पहिछान ॥
शुद्धातम अनुभव दशा शुद्ध ज्ञान शिरमोर।
मुक्ति पंथ साधन सही वाग जाल है और ॥

अचल अखंडित आतमा कीजे अनुभव तास ।
जगत चक्षु धारण करो ज्ञान चेतना भाष ॥
निरालंभ शास्वत सुथिर कीजे अनुभव पास ।
ज्ञानगम्य वाधा रहित नाम जथारथ तास ॥
सबरस गर्भित आत्मरस समय सार शिवपंथ ।
जाको धारण सब करो पावे पद निर्ग्रंथ ॥
आतम राम सदा भजो सुख पावो दिन रेन ।
बार बार विनती करों सम्यग्दर्शन नेन ॥

(स्याद्वाद द्वार प्रारंभ)

स्याद वाद साधन करो यही मुक्ति का पंथ ।
जाके जाने जगत जन लहे जगत को अन्त ॥
स्याद वाद वाणी भणों सत्य मार्ग जो होय ।
साधे सो शिव पदलहै इसमें भेद न कोय ॥
करकषाय उप शान्तता मात्र मोक्ष अभिलाष ।
सो पावे सम्यक्त को वर्ते अन्तर कास ॥
मत दर्शन के भेद तज रचते सद्गुण लक्ष ।
लहे शुद्ध सम्यक्त को इसमें भेद न पक्ष ॥
साधे स्वयं स्वभाव को अनुभव ज्ञान प्रतीत ।
रमण करे निज भाव में समकित दोष अतीत ॥

वर्द्धमान सम्यक्त में नाशे मिथ्या भाष।
उदय होय चारित्र का वीत राग पद कास ॥
केवल आत्म स्वभाव का वर्त अविचल ज्ञान।
केवल ज्ञान उसे कहे तव होते निर्वाण ॥
कोटि वर्ष का स्वप्न को जागृत होत पलाय।
त्योहि अनादि विभाव भी ज्ञान होत भग जाय ॥
छूटे परमे ममत जो नहि कर्ते निज कर्म।
नहि भोक्ता तब कर्म का ये ही धर्म का मर्म ॥
आत्म धर्म से मोक्ष है तू है मोक्ष स्वरूप।
ज्ञान दर्श भण्डार हो अव्या बाध स्वरूप ॥
शुद्ध बुद्ध चैतन्य घन स्वयं जोति अमलान।
अविनाशी तू आतमा कर विचार निज मान ॥
निर्णय सब ज्ञानीन का इसमें आन समाय।
निज पद निज मे जानकर रमण करे मन लाय ॥
प्रगट होत निज रूप वह शुद्ध चेतना रूप।
अजर अमर अविनाशी हो देहातीत स्वरूप ॥
कर्ता भोक्ता कर्म का जब विभाव मय होय।
वृति भई निज भाव में शुद्ध स्वभावी सोय ॥
अथवा निज परिणाम जो शुद्ध चेतना रूप।
कर्ता भोक्ता उनहिका निर्विकल्प निज रूप ॥

एक रूप को हूक है कोहू अगणित भंग।
कोहू क्षण भंगूर है को हूकहे अभंग ॥
इस प्रकार नय अनन्त है मिले न काहू कोय।
जो सव नय साधन करे स्याद वाद है सोय ॥
है नाही नांही सुहै है है नाही नाहि।
नय सर्वांगी समझ लो सव माने सब मांहि ॥
ऐसा आतम ज्ञान है स्याद वाद परिणाम।
जाके संगत सार सो मूरख पंडित नाम ॥
स्याद वाद आतम दशा धारे बुध बलवान।
मोक्ष मार्ग साधन करे अलख अखंडित ज्ञान ॥
वस्तु का वस्तुपना अपने पन को ग्रहण।
तबही पर पन को तजे ये ही उत्तम वेन ॥
वस्तु धर्म अनेक है ये ही वस्तु स्वभाव।
मुख्येता जिसको करे गोण करे परभाव ॥
भूत भविष्यत बात को कहना एक ही बार।
उनको नैगमनय कहै वीर जयन्ती कार ॥
संग्रह नय उसको कहै बहुत वात का ज्ञान।
चेतन मय है आतमा सव जीवों का भान ॥
इस नय से कीया हुआ उसका भेद वखान।
संसारी मुक्ती जिया नय व्यवहार प्रमाण ॥

ऋजु सूत्र नय ज्योक है वर्तमान बतलात ॥
जैसे राजाराम को राजा कहना ख्यात ॥
शब्द नय व्याकर्ण की रीती शब्द सधाय ।
पुल्लिंगादिक भेद कर शब्द सिद्धि बतलाय ॥
समभि रूढ नय वैक है जग मर्यादा बात ।
ज्ञैसे गागा गौकहो ये प्रयोग सब ख्यात ॥
एवं भूत इसको कहै वात यथारथ सार्थ ।
जैसा का तैसा कहो ये धन पति सामर्थ ॥
ऐसे जिन वर देव ने नये सात दर्शाय ।
भव्य जीव धारण करो हृष हर्ष गुण गाय ॥
स्याद वाद वाणी भणी श्री मन्दर जिन राय ।
तिन का गुण गावों अवे मोक्ष सौख सुखदाय ॥
समो सरण शोभित सदा श्री मन्दर भगवान ।
कुन्द कुन्द मुनि राज जहाँ स्तुति कीदी गुणगान ॥
परम धरम दाता रहो निज स्वभाव अविकार ।
पूरण पद परमेश भये श्री जिन वर जयकार ॥
सव देवन के देव हो सदा समरने योग्य ।
धर्मामृत वरषावते निज स्वभा निज भोग ॥
बिन कारण तारण सदा समरण समरस लीन ।
चरणां भुज सेवा मिलो कर्म कालिमा क्षीण ॥

धर्म तीर्थ अवतार हो धर्मनाभ धर्मेश ।
धर्म धुरंधर धनपति केवल ज्ञान महेश ॥
निजानन्द आनन्द मय वचन अगोचर रूप ।
शिवशंकर ब्रह्माभने आतम राम स्वरूप ॥
मोह महा वल दल मलो जगत शत्रु को जीत ।
विजये लक्ष्मी पाय के तीर्थं कर पद मीत ॥
रागादिक रंग रमगयो अविनाशी अविकार ।
शुद्ध सुवर्ण समान मय भावो बारंबार ॥
रागदोष मद मोह मल ज्ञाना बरणी साज ।
दर्शन वर्णी नोय को नास करो जिन राज ॥
अंतराय पाँचों हती षोडस नाम विशेष ।
घाति कर्म को नाश कर केवल ज्ञान विशेष ॥
घट घट में शोभे सदा ज्ञान राज घन घोर ।
ज्यो अंतर दीपक जले निरावरण शिर मोर ॥
सहस्र सूर्य समान हो सत्स्वरूप निज ध्यान ।
सुरनर चारण मुनिन में निजानन्द निज ज्ञान ॥
तारण तरण स्वभाय है तीन लोक शिरताज ।
मरण रोग के हरण से अजर अमर पद राज ॥
दिव्यध्वनी वर्षा खरे भीजत ज्ञानी ज्ञान ।
संसय विभ्रम मोह तज पावे पद निर्वान ॥

भवसागर के पार हो शिव पुर पासी सार ।
परम रूप परमात्तमा पूरण ज्ञान निहार ॥
निजानन्द के भोग में कभी न आरत आय ।
ज्ञान आरसी झलक में लोका लोक लखाय ॥
अहंकार आदिक भगे ज्ञान भयो परतक्ष ।
सुख अनन्त बल के धनी अजर अमर अलक्ष ॥
परम शक्ति परमातमा स्वयं तीर्थ आनन्द ।
परम हंस योगी ऋषी ज्यों तारो में चन्द ॥
शुद्ध बुद्ध परमातमा परमब्रह्म भगवान ।
कर्म मेल से दूर है पद अरहन्त महान ॥
मोह करम चकचूर कर पायो केवल ज्ञान ।
चिदानन्द चुनते सदा उत्तम आतम भान ॥
शत इन्द्र न करि पूज्य हो जगत पूज्य गुणवान ।
निजानन्द आनन्द घन केवल ज्ञान महान ॥
निज पुरुषारथ सदन को कारण हो जिन राज ।
महाभाग्य जागृत भयो तुम निरखे जिन आज ॥
शिवस्वरूप सुन्दर महा गुण अनन्त भंडार ।
बारबार विनती करो अनुभव पाउं सार ॥
ज्ञानानन्द स्वभाव हो मन वांछित दातार ।
सम वसरण शोभाविषें भये विश्व अवतार ॥

निर अक्षर वाणी खिरे दिव्य मेघ सम गाज ।
अक्षरार्थ अवहरत है भविजन सुख मय साज ॥
चवरो से भक्ति करे देव चार परकार ।
देव दुन्दुभिध्वनत है करत सदा जय कार ॥
सुर देवी संगीत से उत्तम गावे गान ।
पुष्प वृष्टि नभसे करे तीनों काल महान ॥
सत्य जिनें श्वर तुम धनी तुम ही हो शिरताज ।
मुक्ति रमाके ईश है । विश्व धरा के राज ॥
अशरण के तुम शरण हो निराधार आधार ।
में उत्तम भव भ्रमरम्यो भूल आप को सार ॥
अपनो विरध विचारिये दीन बन्धु भगवान ।
भव सिन्धु मे पसगयो राग द्वेष कर संतान ॥
तुम तारण हो जगत के मेरी ओर निहार ।
भव भव वनमें पसगयो हात पकड़ करपार ॥
मेरी तुम से वीनती हात जोड़ शिरनाय ।
नेक निहार निगेकरो विघन हरन गुणगाय ॥
ज्ञान सुधारस पूर्ण हो भवदुख भंजन हार ।
भविक सरोज विकाश हो सब तत्त्वों में सार ॥
शिव मग साधन श्रेष्ठ हो सुर नर पशु के राज ।
शात इन्द्र न कर पूज्य हो मुज कारज के काज ॥

ज्ञानानन्द स्वभाव हो गुण अनन्त भंडार।
भवसमुद्र से तिरगये हमनेकीभेलार ॥
परम जिनेश्वर पदलयो केवल ज्ञान महान।
मुक्ति नवका हमचढ़े हम तुम साधन मान ॥
तुमही साधन सत्य हो गुण अनन्त तुम माहि।
हम तुम को हृदये धरे अरज यह सुखदाहि ॥
विश्व धरा के राज हो श्री मंदर जिन राज।
भये विमल अविकार हो तारण तरण जहाज ॥
येही मेरी वीनती सुनियो श्री जिन राय।
तुम ने देखत निज मुझे याद होत है जाय ॥
भव दधि शोसण हारहो शिव सुख के कर्तार।
हरता जग आरत सवे कर्ता निज गुणसार ॥
धर्मामृत वर्षा करे पान करे सब लोक।
जन्म जराज्वर हरत है पावे निज गुण थोक ॥
ज्ञान भानु निजरूप है हरे कर्म अंधियार।
आप चरण शरणा गहे भव सागर से पार ॥
परमातम पद तुमलयो कर निर्मल अति भाव।
कर्म बंध छेदक भयो भविजन भावो भाव ॥
दिना नाथ आतम पती तुम हो दीन दयाल।
आतम गुण भंडार हो भविजन को प्रतिपाल ॥

चिदानन्द निर्मल लसे नमो शरण में वास ।
कर्म शुद्ध करने लिये हम भी तुमरे पास ॥
तुम पद पंकज में नमो जोर जुगल शिरहाथ ।
जन्म जरा भागे सभी शत्रु मित्र नहि साथ ॥
दोष अठारे रहित हो छीयालिस गुण सार ।
सभा द्वादशाजीव सब सुनबानी अघ हार ॥
तुम विन हम भटकत फिरे जैसे पंकज रेन ।
अथवा जल विन मीन है संकट है दिन रेन ॥
नाव पडी मझधार में पारल गावो आप ।
जन्म जरामम दुख हरो जपों आप का जाप ॥
तुम को सुमरे सुरपति नरपति फण पति देव ।
उदय भाग्य मेरो भयो दर्शन पायो देव ॥
चिन्ता मणि सम आतमा करते सब सुख कार ।
जैसे दीपक देहरी भीतर बाहिर सार ॥
ध्याता ज्ञाता ज्ञान धन आतम ज्ञान अनूप ।
तुम डिग हमने पाई या सम्यक् श्रद्धा रूप ॥
तुमरे चरण सरोज में सुमति गुप्ति व्रत लीन ।
शील मूल गुण त्याग तप संयम आतम चीन ॥
आत्मा नन्त अनन्त गुण अमित कथन विस्तार ।
सुन आश्चर्य अमान है जिन वाणी अनुसार ॥

पर परणति परिहार कर निज परणति तदरूप ।
आतम राम भजो सदा एही आत्म स्वरूप ॥
पावन परम पुनीत पद आतम ज्ञान प्रभाव ।
अब हमन निध मिल गई श्री मन्दर जिन भाव ।
जैसे पारस परसते लोहा कंचन होय ।
ऐसी वस्तु अमोल हम पाई तुम डिग सोय ॥
विश्व रूप भगवान है वसते निज घर मांहि ।
धीरे धीरे साधते आतम निधि मिल जाहिं ॥
धीरे धीरे साधते आतम सिद्धि होय ।
माली सींचे वाघ को ऋतु पाये फल सोय ॥
ज्ञान नेत्र से निरख लो आप आप को होय ।
पर वस्तु विश्वास तज तब पावे शिव सोय ॥
अंतकाल को चल बसे छोड़ जाल घर वार ।
लीला अगम अपार है समऊ गये हम सार ॥
स्यात आत्मा नित्य स्वभाव ।
स्यात आतमा अनित्य स्वभाव ॥
स्यात नित्यता नित्य स्वभाव ।
स्यात आतमा अवक्तव्य स्वभाव ॥
स्याय नित्य अवक्तव्य स्वाब ।
स्यात अनित्य अवक्व्य स्वभाव ॥

स्यात शब्द कह दीया जाव।
नित्यानित्य अवक्तव्य स्वभाव ॥
सदा रहै यह आत्मा याते नित्य स्वभाव।
बदल करे यह आत्मा होत अनित्य स्वभाव ॥
नित्यानित्य होत है एक समय में जान।
जैसा सोना एक है भूषण भेद बखान ॥
कंठी तोड़े कंकड़ बणते एक ही बार।
वस्तु भाव पलटे नहीं पलटे पर्यय कार ॥
शब्दो में शक्ति नही एक साथ दो बोल।
अवक्तव्य स्वरूप है एही मोल कमोल ॥
जिस समये अबक्व्य है उसी समय है नित्य।
एही सार अमोल है है भी वह अनित्य ॥
जिस समये अवक्व्य है नित्यानित्य ही जान।
भंग सात यह जानियो स्याद्वपरमान ॥
स्याद वाद समझे बिना ज्ञान लहे नहिं रंच।
वीतराग वाणी कहै तजो सवे परपंच ॥
सवे पदारथ जान वै मारग दोय बताय।
द्रव्यार्थिक पर्याय से मिट्टी घटवत गाय ॥
मानवगति को छोड़ के नरक गती तन पाय।
आतमता जाती नही पर्यय पलटी जाय ॥

आतम निरखे आतमा सब कालमा धोय।
पारस परसे लोह को लोहा कंचन होय॥
समय सार सब सार है आतम भाव अनन्त।
सोह सब के घट विषे परमारथ विरतन्त॥
निज स्वरूप आतम दरब पर स्वरूप पर रूप।
लख लीनो यह भेद जिन सकल लियो लखरूप॥
निज स्वरूप निज में बसे पर रूपी पर वस्तु।
भेद ज्ञान जाग्यो यह तिन लख लियो समस्त॥
जाके गट ऐसी दशा साधकता को नाम।
सूर्य घाम फैले थके सो उजियारो धाम॥
सम्यक् दर्शन शुद्धता मोक्ष मार्ग तद्ध रूप।
कर्म चन्ड चूरण करे क्रम क्रम पूरण रूप॥
स्वपर प्रकाशक आतमा वचन भेद भ्रम भार।
निज स्वरूप पर है निज रच पर को छार॥
स्याद वाद समझो सदा चेतन शक्ति अखंड।
द्रव्य दृष्टि दीजो सदा पावो नहिं भव दण्ड॥
कर्म कलंक मलीन है शुद्ध अवस्था नाहिं।
कर्म कलंक पखाल कै शुद्ध अंग फल काहिं॥
नहिं भरोसा जीवका विपत पड़े भग जाय।
स्वास स्वास रटते रहो तव आतम निधि आय॥

नहि जग. बारिध पार है परम रूप फैलाव ।
चेतन तुम सब समझ लो बूड़ जायगी नाव ॥
चेत चेतना चेतरे अब मत होत अचेत ।
सब को तज भज आतमा फरे रहे गे खेत ॥
सच्चा जीवन मूल है आतम से कर नेह ।
पर वस्तु विस्वास तज तव पावे शिव गेह ॥
चोपाई द्रव्य दृष्टि दीजे निज रूप गुण पर्याय ।
भेद बहु रूप, असंख्यात परदेश प्रमाण ॥
संयू.गत सत्ता परमाण १ लोकालोकज्ञान ।
परभाव, ऐसा आतम द्रव्य स्वभाव पर जय ॥
अंग छिन्न भंगूर चेतन शक्ति अखंडित पूर ।
हे स्वतन्त्र निश्चल निष्काम, ज्ञाता दृष्टा आत ॥
मरामस्व स्वरूप है सिद्ध समान सर्व शक्ति ।
सुख ज्ञान निधान मोह कोप है दुख की ॥
खान होय भिकारी पर पद मान, जवनि ।
जपर को भेद वखान फिर दुख कानहिलेश ॥
निधान ४ श्री शिव ईश्वर शंकर नाम ।
ब्रह्मा विष्णु जिनेश्वर राम ॥
ज्ञानानन्द सुधारस पान,
चेतन चिन्मय हे भगवान ।

पूरण पंडित ज्ञान महान,
एक अखंडित सिद्ध समान ॥
गुण अनन्त पर्याय प्रमान,
नित्य निरंजनचे तन जान ॥
लोकाकाश प्रकाशक काम ।
परमब्रह्म परमातम नाम ॥
ज्ञान स्वरूपी निश्चल काम,
लोकाकाश प्रदेश ललाम ।
अविनाशी अज अमल महान,
पुद्गल भिन्न सदा निजमान ।
जैसा जिनवर हे भगवान,
तैसा आतमराम निधान ।
निर्विकार निश्चल निज धाम,
सत्यस्वरूपी आतमराम ।

इति सर्व विशुद्धि द्वार पूर्ण

अरहंत महान, अजर अमर अतुल अमलान ॥
ऐसा जीव जगत में सार, जाकी महिमा अगम ।
अपार जोध्या वे निज भाव लगाय ।
शिव पद पावे निश्चय राय ॥

दोहा

निकट भव्य संपतल है सम्यक श्रद्धा नवान।
करे न बंध नवीन को पूर्व कर्म की हान॥
पुरुषा कार स्वरूप है निराकार अविकार।
निरख निरख रे आतमा हो तज गत से पार॥
गुण अनन्त यह आतमा गहे आप गुण आप।
निश्चय पावे परम पद दूर भगे भव ताप॥
निर्मल निश्चल सिद्ध सम विघ्मु विदाम्बर सन्त।
शिवशंकर परमातमा गुण का नहि है अन्त॥
पुद्गल रूप शरीर है जड़ परणति पर्याय।
ज्ञाता दृष्टा आतमा चेतन चिन्मय थाय॥
आप आपनो रूप लख निश्चय शिव पद सोय।
परमे अपनी कल्पना भ्रमत जगत में सोय॥
स्वातम के जाने विना मिटे नही संताप।
भ्रमण करे संसार में दुख भुगते वह आप॥
अह कार्य करतो रहै स्वानुभव में दक्ष।
ध्यान सदा निज आतमा होय मुक्त परतक्ष॥
निज समरो निजमें रमो निजानन्द लवलीन।
लहो परमपद छिनकमें मनको करो अलीन॥

जिनवर सम शुद्धातमा किंचन भेद न जान।
निश्चय कारण मोक्षको ध्यावो धर श्रद्धान ॥
निजमें निज आपो लखो निश्चय और न रंच।
श्रेष्ट सार सिद्धान्त का और तजो पर पंच ॥
चिदानन्द जिनवर विषे शक्ति व्यक्ति गुण भेद।
रमण उभय समान है कर निश्चय तज खेद ॥
असंख्यात परदेशयुत लोका काश प्रमाण।
निज शुद्धातम अनुभवो इनसे होत कल्याण ॥
लोक प्रमाण मय आतमा तन प्रमाण व्यवहार।
आतम ऐसा अनुभवो उत्तम पद दातार ॥
चौरासी लख योनि में भव भोगे ही अनन्त।
निश्चय रत्नत्रय विना होय नही भव अन्त ॥
अनुभव कर निज आपही हो शुद्धातम लीन।
पुण्य पाप विकलपत जो निजानन्द निज चीन ॥
परे पुण्य से स्वर्ग में नरक परे कर पाप।
पुण्य पाप तज आपदा रमो आप में आप ॥
ज्ञानमयी है चेतना तन पुद्‌गल पहिछान।
तन पुद्‌गल से नेह तज भज आतम कल्यान ॥
शिवशंकर विष्णुयही शुद्ध वुद्ध जिन देव।
अजर अमर पदवील है चिदानन्द कर सेव ॥

वनो निकल परमातमा ढीलन कीजे कोय ।
औसर उत्तम आगया लोहा कंचन होय ॥
निरख निरख निज आतमा कटे सकल जंजाल ।
वार वार उपदेश यह धारण कर शिव माल ॥
चिदानन्द संपत लहो सम्यक् श्रद्धावान ।
करे नबंध नवीन को पूर्व कर्म की हान ॥
पुरुषाकार स्वरूप है ऐसा आतम रूप ।
निरख निरख रे बावला बन त्रिभुवन को भूप ॥
अशुचि देह से अलग है ऐसा है चिद्रूप ।
सो ज्ञाता सब जगत का महिमा अगम अनूप ॥
स्वपर रूप जाने बिना पावे नहि निज भाव ।
सकल शास्त्र ज्ञाता वनो मिटे न भव का ताव ॥
अनुभव सुख की खान है अनुभव परम निवास ।
अनुभव परम समाधि है लहे मोक्ष सुख राम ॥
समता रसका पान से पावत सहज स्बभाव ।
कर्म कालिमा धोयके तीरथपति बन जाव ॥
सर्व जीव है ज्ञानमय सबसे मैत्री भाव ।
रागद्वेष मल दूर कर समता सम रस राव ॥
तज सव मिथ्यां मैलको सम्यक् दर्शन धार ।
ज्ञान चरण तप साधके पहुंचे शिवपुर सार ॥

मोहकोप मद नाशते शुद्ध होय परिणाम।
निजानन्द दर्शन करे शास्वत सुख अभिराम॥
निश्चय आतम राम है कर आराधन मित्र।
ईश्वर ब्रह्मावुद्ध तुम आतम राम विचित्र॥
चिदानन्द अनुभव करे फल नहि वंचे रक्ष।
केवल ज्ञान लहे वही शिव सुख पावे दक्ष॥
निज स्वरूप में रम रहै पर स्वरूप नहि राग।
सम्यग्दृष्टि आतमा भोगे अपणु भाग॥
सम्यग्दृष्टि धर्मरत दुर्ग तिलाहन कोय।
पूर्व कर्म के बंध से जाय तो दोष न कोय॥
बन्ध मोक्ष की चाहते संचय करते कर्म।
सदा रमे निज रूप में तो पावे शिव सर्म॥
मोह जाल ने काट कर मन वचतन कर बन्द।
चिदानन्द दर्शन करे छूटे भव के फन्द॥
सम्यक दृढता धारकर करे न बन्ध न बीन।
पूर्व कर्म की निजरा करे निजातम लीन॥
सम्यग्दर्शन शुद्ध है सो ज्ञानी गुणवान।
वह प्रधान त्रिलोक में उत्तम सुख भुगतान॥
पुरुषाकार प्रमाण में निरखे आतम रूप।
उत्तम पावन आतमा पावे निज गुण रूप॥

कमल लिप्त नहि सलिल में तैसे सम्यक वान।
लिपे नहि वह कर्म मल स्वातम दृढ़ श्रद्धान॥
समता रस में लीन है नित प्रति करता भ्यास।
सकल कर्म को क्षय करे शिव स्थानक में वास॥

कुन्द कुन्द महाराज की वचन वगण लेय।
दोहा छन्द रचना करी मोद लीजियो येह॥
द्वादशांग वाणी मय लीनो है आधार।
समसार पूरण भयो अल्प बुद्धि अनुसार॥
संवत विक्रम सहस दो ऊपर हैं दश साल।
चैत्र शुक्ल पुन्यम् दिना पूरण परम रसाल॥

पावन परम पुनीत पद पावत आतम लीन।
डूबे सिन्धु अगाध में आतमता नहिं लीन॥
आखों से अन्धा बना करत जगत में घोर।
निजानन्द राचे नहीं करत ओरही ओर॥
मन मदान्ध भूला फिरे करत कर्म।
संधान अभिमानी निज भजन तज विषम॥
विपत घर स्थान १ अशुभ कर्म का अशुभ।
फल शुभ का शुभ ही जान॥
दोनों से दूरा रहै उत्तम मानव मान।
अन्धकार जग छायो कैसे राह दिखाय॥

उत्तम विमल विवेक बिन अन्धकार नहिं जाय।
दयासिन्धु आतम निधि पावत परम मनोग॥
खोले कपट कपाट को शिव पुर पावे योग।
जैसे पारस परस ते लोहा कंचन होय॥
ऐसी वस्तु अमोल को क्यों मूरख तू खोय।
सकल सम्पदा पाय के साधन साधो सार॥
कपट रूप संसार है आतम ज्ञान विचार।
विश्व रूप भगवान है वसते निज घट माहिं॥
राम कहो या श्याम हो शरणो सांचो ताहिं।
धीरे धीरे होत है आतम निधि संयोग॥
माली सींचे बाग को ऋतु पाये फल भोग।
नहीं भरोसा जीवका विपत पड़े भग जाय।
स्वास स्वास रटते रहो आतम निधि तू पाय॥
चेत चेतना चेत रे अब मत होत अचेत।
सब को तज भज आतमा धरे रहे गे खेत॥
आतम निरखे आतमा सर्व कालमा धोय।
पारस परसे लोह को लोहा कंचन होय॥
मतलब के संसार है सारन यामें कोय।
ज्ञान नेत्र से निरख लो आप आप को होय॥

सच्चा जीवन मूल है आतम से कर नेह।
पर वस्तु विश्वास तज तब पावे शिव गेह॥
बिना भजन जीवन वृथा दुख पावे निर्धार।
कपट रूप संसार है आतम ज्ञान विचार॥
अन्त काल में आ बसे छोड़ जाल जंजाल।
लीला अगम अपार है कह तन आवे हाल॥

मंगला चरण उपदेश

सुर सुरेन्द्र नागेन्द्र हरि हर बल चक्रेश।
चरण कमल युग नमत हैं नमों वीर परमेश॥
सम्यग दर्शन शुद्ध यह मोक्ष वृक्ष को मूल।
स्व स्वरूप श्रद्धा धरो तत्व रुची अनुकूल॥
शुद्ध वस्तु चिन्मात्र को निश्चय श्रद्धा युक्त।
सो सम्यग दर्शन सही निज महिमा संयुक्त॥
यह अनादि संसार में पुद्‌गलीक संयोग।
मोह पीय पागल भयो घुमत जीय भव भोग॥
समझ चिदानन्द ज्ञान से राग द्वेष कर दूर।
रत्न त्रय की एकता मोक्ष माग निज पूर॥
नय प्रमाण निक्षेप करि, भेदा भेद प्रमाण।
तत्व यथा रथ जान वो सम्यक् ज्ञान महाण॥

सकल संग सावधत निज आतम लवलीन।
सो पूरण चारित्र है मोक्ष पंथ ये तीन॥
चिदानन्द ज्ञायक गुणी वीतराग निज भाव।
सम्यग् दर्शन ज्ञान गुण चरण उतारे नाव॥
देव शास्त्र गुरु मान्यता भवतन भोग विराग।
तीन रतन साधे सदा मिटे भवान्तर दाग॥
सम्यगद दर्शन सहित व्रत तप संयम वैराग।
शील शिरोमणि साधना, मुक्तिरमा से राग॥
निर्मल मन से पूजते देव शास्त्र गुरु तीन।
वह श्रवक उत्तम कहा, दान चारलव लीन॥
चार संग के दान से धन्य होत सागार।
स्वर्ग सोल वे सुर वल हैं महिमा अगम अपार॥
सुन्दर सर मे खेत है जलवायु शुभ बीज।
समे पाये बोवे सही फल निपजे सब चीज॥
तैसे पात्र विशेषते दान ज्ञान अंकूर।
फले अनन्ता नन्त गुण सुख पावे भर पूर॥
चौदह रत्न नवो निधि तज दिक्षा तप सार।
अतुल विभव सुख संपदा समो सरण तज पार॥
सम्य ग्दशन बीज है ज्ञान सुधारस खेत।
जलवायु चारित्र है मोक्ष महाफल देत॥

सम्यग्दर्शन के विना ज्ञान चरण तप हय।
याते दृग धारीवणों रत्न त्रयनिधि लेय॥
तीन रतनमणि दीपते होत सकल परकाश।
सकल कर्म को नाश कर लोका लोक विकाश॥
मन मंदिर के बीच में समकित रतन अमोल।
तीन लोक को देख बो निजबर भाषे बोल॥
काम दुधामणि कल्प तरु घनपारस पाषाण।
मनवां छित फल होत है सम्यग्दर्शन जाण॥
सम्यग्दर्शन लाभते कर्म कलंक पलाय।
कनक बीज संयाग से निमल जल हो जाय॥
इस ही पंचम काल में रहित प्रमाद मुनीश।
धम ध्यान धारे सदा सम्यग्दशन शीष॥
शूर वीर शक्ति विना बधवाकाजल रेख।
दर्शन ज्ञान विराग विन कार्य कारीन एक॥
शान्ति सुधार सपान कर संयम असन करेय।
चिदानन्द में रमण कर कर्म समूह हरेय॥
जब आतम में परिणति तप कर्मों का नाश।
पावे सुख संपति सदा शिव पुर अविचल वास॥
जैन लिंग धारण करे धरे तपस्या भार।
स्व स्वरूप जाने नहि सर्व बृथा बेकार॥

संन्यासी दंडी भयो श्वेताम्बर मुनि भेष।
आतम रसरा यो नही सुख पायो नहि लेश॥
निजानन्द उपलब्धिविन समकित गुण नहि कोय।
मम्यग्दर्शन ज्ञान विन मोक्ष मार्ग नहि होय॥
सम्यग्दर्शन शुद्ध कर ज्ञान चरण निर्दोष।
कर्म नाश कारण एही धारो भविजन तोष॥
द्रव्य भावश्रुत ज्ञान से पावे सत्य स्वरूप।
आस्त्रव संवर निर्जरा जिन आगम शिव रूप॥
ध्यान धरो स्वभाव से निग्रह अक्ष कषाय।
मोहजाल दूरी भयें जगत पूज्य हो जाय॥
अपने आप स्वभाव से स्थिर होना हि ध्यान।
सकल कर्म को नाश कर पावे केवल ज्ञान॥
कर श्रुत ज्ञान अभ्यास नित तपश्चरण लव लीन।
मुक्ति पंथ साधन करो समकितनिज घट लीन॥
विषय बेल को काट कर भाव कर्म छुटकाय।
द्रव्य कर्म नोकर्म तज सीधो शिवपुर जाय॥
तू ही है परमातमा जानन देखन हार।
रंक भयो भव फिरत है लाख बात की सार॥
मुंच मुंच इस मोह को काम जीत मद रीश।
अंतर भज परमातमा होवे तू जगदीश॥

जिन लिंगी जोगी जुगत दर्शन ज्ञान विराग ।
मोक्ष गति पावे सही अब जागे तो जाग ॥
काल अनन्ता नन्त से भ्रमण करत संसार ।
मानुष भव दुर्लभ मिल्यो सम्यकदर्शन धार ॥
रत्नत्रय गण गच्छ है गमन करत शिव पंथ ।
आतम रमणो संग है उत्तम पद निर्ग्रन्थ ॥
कर्म घातिया नाशकर केवल ज्ञान उपाय ।
शेष कर्म पूर्णफुनिनाश के सीधो शिव पुर जाय ॥

इति

लेखक—मुनि आनन्द सागर
बुद्धि जन शोध लीजियो—

मुद्रक—राईजिंग सन प्रेस, चावड़ी बाजार देहली ।